NTA NET/JRF Series

दृष्टि The Vision

यू.जी.सी./एन.टी.ए.
नेट/जे.आर.एफ.
हिंदी साहित्य

जूनियर रिसर्च फेलोशिप और असिस्टेंट प्रोफेसर की परीक्षा का संपूर्ण पाठ्यक्रम

नवीन परीक्षा प्रणाली पर आधारित

प्रश्नपत्र-II

- JNU, DU, BHU समेत सभी विश्वविद्यालयी स्तर की प्रवेश परीक्षाओं हेतु समान रूप से उपयोगी
- विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों के साथ आगामी परीक्षाओं हेतु संभावित प्रश्न भी शामिल
- परीक्षा की प्रकृति के अनुसार आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मान्यताओं व कथनों पर विशेष बल
- पाठ (टेक्स्ट) व उद्धरणों का विशद संकलन ताकि आप कथनों को आसानी से पहचान सकें

द्वितीय संस्करण

दृष्टि The Vision

दृष्टि लर्निंग ऐप पर उपलब्ध प्रमुख कोर्सेज़

IAS Foundation Course

सामान्य अध्ययन

प्रिलिम्स + मेन्स

- 1200+ घंटों की 500+ कक्षाएँ
- सभी टॉपिक के लिये प्रिंटेड नोट्स
- 3 वर्षों के लिये अन्य विशेष सुविधाएँ

IAS Foundation Course

General Studies

Prelims + Mains

- 400+ Classes of 1000+ hrs.
- Printed Notes of All Segments
- Other special facilities for 3 years

IAS Prelims Course

सामान्य अध्ययन

केवल प्रिलिम्स

- 500+ घंटों की कक्षाएँ
- 'क्विक बुक सीरीज़' की 9 पुस्तकें
- 2 वर्षों के लिये अन्य विशेष सुविधाएँ

IAS + UPPCS + BPSC Optional Subject

हिंदी साहित्य

द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

- 400+ घंटों की कक्षाएँ
- पाठ्यक्रम में शामिल सभी पाठ्य-पुस्तकें तथा प्रिंटेड नोट्स
- 145 दैनिक अभ्यास प्रश्न और 18 टेस्ट पेपर (मॉडल उत्तर सहित)

BPSC Prelims Course

बिहार PCS

- 500+ घंटों की कक्षाएँ
- 'BPSC सीरीज़' की 8 पुस्तकें
- 2 वर्षों के लिये अन्य विशेष सुविधाएँ

RAS/RTS Prelims Course

राजस्थान PCS

- 500+ घंटों की कक्षाएँ
- 'RAS सीरीज़' की 8 पुस्तकें
- 2 वर्षों के लिये अन्य विशेष सुविधाएँ

एथिक्स (पेपर-4)

द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

- कुल 70 कक्षाएँ
- IAS के साथ-साथ UPPCS के लिये पूर्णतः सटीक
- मूल्यांकन की सुविधा के साथ 6 टेस्ट

निबंध

द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

- कुल 13 कक्षाएँ
- IAS के साथ-साथ PCS के लिये पूर्णतः सटीक
- मूल्यांकन की सुविधा के साथ 20 टेस्ट

अतिरिक्त जानकारी के लिये 9311406442 नंबर पर कॉल या वाट्सएप करें

विज़िट करें www.drishtiIAS.com

अपने फोन पर इंस्टॉल करें Drishti Learning App

दृष्टि The Vision

यू.जी.सी./एन.टी.ए.

नेट/जे.आर.एफ.

हिंदी साहित्य

(द्वितीय संस्करण)

Drishti Publications

dp

दृष्टि पब्लिकेशन्स

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाषः 011-47532596, 87501 87501

Website: www.drishtiias.com

E-mail : booksteam@groupdrishti.com

शीर्षक : यू.जी.सी./एन.टी.ए. नेट/जे.आर.एफ. हिंदी साहित्य

लेखक : टीम दृष्टि

द्वितीय संस्करण : मार्च 2021

मूल्य : ₹ 498

ISBN : 978-93-90955-36-7

प्रकाशक

VDK Publications Pvt. Ltd.

(दृष्टि पब्लिकेशन्स)

641, प्रथम तल,

डॉ. मुखर्जी नगर,

दिल्ली-110009

विधिक घोषणाएँ

- इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक उससे किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।
- हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।
- **© कॉपीराइट :** दृष्टि पब्लिकेशन्स (A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.), सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।
- एम.पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेज़-2, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित।

दो शब्द

प्रिय पाठको,

आप सब इस भाव से सहमति रखते ही होंगे कि परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है। चाहे लक्ष्य कितना भी कठिन क्यों न हो, सही दिशा में किया गया परिश्रम अवश्य सफलता दिलाता है। हमारी परंपरा में तो यहाँ तक माना गया है कि प्रतिकूलताओं के विरुद्ध संघर्षरत रहना ही मनुष्य होने की बुनियादी कसौटी है। आदिकवि वाल्मीकि राम के शोकपूर्ण जीवन को तो दर्शाते हैं किंतु यह शोक राम के संघर्ष से लघुतर ही है। वाल्मीकि राम से कहलवाते हैं- "दैव सम्पादितो दोषो मानुषेण मया जित:" यानी प्रकृति (दैव) ने मुझ पर विपत्तियाँ डालीं और मैंने (मनुष्य) उन पर विजय प्राप्त कर ली। यहाँ राम की सारी महानताओं के केंद्र में उनकी संघर्षशील प्रवृत्ति का होना ही है। यही प्रवृत्ति हर प्रकार की परिस्थिति पर विजय दिलाती है। श्रम की इसी बुनियाद पर तुलसी का लोकमंगल टिका है। "दैव दैव आलसी पुकारा" के माध्यम से तुलसी परिश्रम से मुँह चुराने वाले भाग्यवादी लोगों की भर्त्सना करते हैं और 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करहिं सो तस फल चाखा' के रूप में संघर्षशील और कर्मवादी संसार की रचना करते हैं। परिस्थितियों के विरुद्ध डटे रहने के इस भाव का विस्तार करते हुए हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं- "परिस्थितियाँ मनुष्य को कष्ट पहुँचा सकती हैं, धक्का दे सकती हैं, पर रगड़कर नष्ट नहीं कर सकतीं। मनुष्य परिस्थितियों से बड़ा है, बशर्ते वह 'मनुष्य' हो, किसी तरह जीवित रहकर मरने की तैयारी करते रहने वाला भुनगा नहीं- मनुष्य।"

इस पूरी चर्चा का सार इतना ही है कि यदि हमारे व्यक्तित्व में संघर्षशीलता का तत्त्व प्रभावी है तो हम हर प्रकार की जटिलता से पार पा सकते हैं। प्रतियोगी परीक्षा की दुनिया भी इसी नियम से संचालित होती है। चूँकि यहाँ प्रतिस्पर्धा काफी सघन है इसलिये परिश्रम का भी उसी अनुपात में होना आवश्यक है। श्रम की संचित ऊर्जा निश्चित ही सफलता के लिये सक्रिय हो उठती है। इसलिये हमें अपनी समस्त क्षमता को लक्ष्य प्राप्ति के लिये झोंक देना चाहिये। हाँ, इतनी सावधानी बरतने की आवश्यकता ज़रूर है कि मेहनत सही दिशा में की जाए। गलत दिशा में किया गया प्रयास अंतत: असफलता के लिये ही अभिशप्त होता है। तो हम मार्गदर्शक की अपनी भूमिका को लेकर आपको आश्वस्त करना चाहेंगे कि पाठ्य-सामग्री की मात्रा एवं गुणवत्ता तथा तैयारी की रणनीति को लेकर आपको तनिक भी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। आप बस अपनी पूरी ऊर्जा पाठ्य-सामग्री को आत्मसात् करने में लगाएँ।

जब से हमने 'दृष्टि पब्लिकेशन्स' की शुरुआत की है, तभी से आप जैसे उन हज़ारों विद्यार्थियों के संदेश हमें प्राप्त हुए हैं जो हिंदी विषय से अकादमिक क्षेत्र में आगे बढ़ना तो चाहते हैं किंतु इसके लिये आवश्यक अर्हता पूरी नहीं कर पा रहे हैं। यानी तमाम कोशिशों के बावजूद एनटीए-यूजीसी नेट की परीक्षा में सफलता नहीं मिल पा रही है। आपने हमसे यह अपेक्षा व्यक्त की कि हम आपको एक ऐसी संपूर्ण पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराएँ जो आपकी यह चुनौती दूर कर दे। साथ ही हिंदी के कक्षा-कार्यक्रम का भी हमारा अनुभव यह रहा है कि ऐसे विद्यार्थियों का ठीक-ठाक अनुपात रहता है जो प्रतियोगी परीक्षा के साथ-साथ अपनी अकादमिक पढ़ाई भी जारी रखना चाहते हैं। प्रस्तुत पुस्तक आपके इन्हीं उद्देश्यों को साधने के लिये तैयार की गई है। उल्लेखनीय है कि यह पुस्तक विभिन्न विश्वविद्यालयों से जुड़ी एम.ए./एम.फिल/पीएच.डी. की प्रवेश परीक्षाओं के लिये भी उपयोगी है।

आप सबने एनटीए-यूजीसी नेट के हिंदी साहित्य का पाठ्यक्रम और पूछे जाने वाले प्रश्नों को देखा ही होगा। अगर इनका ठीक से अवलोकन किया जाए तो एक बात साफ तौर पर उभर कर सामने आती है कि यद्यपि परीक्षा का स्वरूप वस्तुनिष्ठ है किंतु जहाँ कुछ अध्यायों में यह वस्तुनिष्ठता अधिक कठोर है, वहीं कुछ में इसका स्वरूप काफी हद तक विषयीनिष्ठ होता है। उदाहरण के लिये, भाषा के विकास का खंड जहाँ अधिक तथ्यात्मक है, वहीं किसी गद्यांश के लेखक की पहचान करने वाला प्रश्न इस रूप में कम तथ्यात्मक है कि यदि हमने पाठ के मूल भाव को ग्रहण कर लिया है तो उसके लेखक की पहचान करना अधिक मुश्किल नहीं है। इसी प्रकार कथन-कारण के प्रश्नों को भी धारणागत स्पष्टताओं के माध्यम से हल किया जा सकता है। कहने का भाव यह है कि यदि परीक्षा की प्रकृति को ठीक से समझ लिया जाए, तो आसानी से सफल हुआ जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक को हमने इसी अनुरूप तैयार किया है। पाठ्यक्रम के जिस हिस्से को जितनी तथ्यात्मकता और जितने विस्तार से तैयार करने की आवश्यकता है, पाठ्य-सामग्री भी उसी अनुरूप समायोजित है। लगभग 750 पृष्ठों की इस पुस्तक में संपूर्ण पाठ्यक्रम को उसकी महत्ता के अनुसार कवर किया गया है। हमारी कोशिश रही है कि सामग्री इतनी सहज हो कि इसे तैयार करने के लिये आपको अतिरिक्त ऊर्जा न लगानी पड़े। इसलिये तथ्यों के उबाऊ संकलन की बजाय हमने तथ्यों को व्याख्या के माध्यम से प्रस्तुत करने का मार्ग चुना। इससे आवश्यक तथ्य भी आपके लिये सहज ग्राह्य हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम के उन खंडों, जिनकी व्याख्या को लेकर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहे हैं (जैसे- भक्तिकाल के उदय की व्याख्या या फिर आदिकाल का नामकरण आदि), को हमने काफी विस्तार से सभी विद्वानों के मत का उल्लेख करते हुए उसके सार को वैध निष्कर्ष के साथ प्रस्तुत किया है। साथ ही बीते वर्षों में पूछे गए प्रश्नों को हल करने के लिये आपको किसी अन्य स्रोत पर निर्भर न रहना पड़े, इसलिये वर्ष 2004 से 2020 तक के प्रश्नों एवं आगामी परीक्षाओं हेतु संभावित प्रश्नों को शामिल किया गया है। कहने का भाव यह है कि यह पुस्तक आपकी सफलता के लिये पर्याप्त है।

इस पुस्तक को तैयार किये जाने की प्रक्रिया अत्यंत सघन व प्रामाणिक रही है। इसे देश के दो प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों (दिल्ली विश्वविद्यालय व जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय) के ऐसे पाँच मेधावी शोध-छात्रों ने तैयार किया है जो खुद नेट-जेआरएफ परीक्षा में सफलता हासिल कर चुके हैं। ये हैं- असीम अग्रवाल (पीएच.डी, दिल्ली वि.वि.), लौह कुमार (एम.फिल, दिल्ली वि.वि.), आदर्श कुमार मिश्रा (पीएच.डी, दिल्ली वि.वि.), गुलाब सिंह (पीएच.डी, हैदराबाद वि.वि.) तथा साहिल कैरो (एम.फिल, दिल्ली वि.वि.)। लगातार सात महीनों तक इनकी रात-दिन की मेहनत से यह पुस्तक तैयार हुई है। उसके बाद, टीम दृष्टि की पाँच सदस्यीय टीम ने लगभग दो महीनों तक पुस्तक के एक-एक तथ्य व कथन की प्रामाणिकता की जाँच की है ताकि पुस्तक में कोई त्रुटि न छूट जाए। यह संपूर्ण प्रक्रिया दृष्टि समूह के प्रमुख डॉ. विकास दिव्यकीर्ति की निरंतर देखरेख में संपन्न हुई है। उम्मीद है कि इस प्रक्रिया को जानकर आप इस पुस्तक की विश्वसनीयता के बारे में आश्वस्त रह सकेंगे।

अत: आप निश्चिंत होकर इसे पढ़ें और अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाएँ। पुस्तक को लेकर आपका अनुभव कैसा रहा, यह भी हमसे साझा करें। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिये दर्पण की तरह है। आप **अपनी बात बेझिझक '8130392355' नंबर पर वाट्सएप मैसेज से भेज दें।** आपकी टिप्पणियों के आधार पर हम पुस्तक के आगामी संस्करणों को और बेहतर बना सकेंगे।

शुभकामनाओं सहित
प्रधान संपादक
दृष्टि पब्लिकेशन्स

अनुक्रम

एन.टी.ए. नेट/जेआरएफ प्रश्नपत्र नवंबर 2020 (प्रथम एवं द्वितीय पाली)........................VIII-XXVI

खंड–१ : हिंदी भाषा एवं साहित्य

इकाई–1 : हिंदी भाषा और उसका विकास 1-43

हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- ❖ सामान्य परिचय : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ
- ❖ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ
- ❖ आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ

हिंदी का भौगोलिक विस्तार एवं विविध रूप

- ❖ हिंदी की उपभाषाएँ तथा बोलियाँ

हिंदी का भाषिक स्वरूप

- ❖ हिंदी भाषा की स्वनिम व्यवस्था
- ❖ हिंदी की शब्द व्यवस्था तथा शब्द संपदा
- ❖ शब्द निर्माण की प्रमुख युक्तियाँ (उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास)
- ❖ मानक हिंदी की व्याकरण संरचना/रूप रचना (पद संरचना– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया; कारक व्यवस्था; विकारोत्पादक तत्त्व– लिंग, वचन; वाक्य संरचना)

हिंदी भाषा – प्रयोग के विविध रूप

- ❖ राजभाषा हिंदी
- ❖ राष्ट्रभाषा
- ❖ संपर्क भाषा
- ❖ हिंदी की संवैधानिक स्थिति
- ❖ हिंदी : संचार माध्यम, कंप्यूटर और वैज्ञानिक विकास

देवनागरी लिपि

इकाई–2 : हिंदी साहित्य का इतिहास और गद्य विधाएँ 44-488

2.1 हिंदी साहित्येतिहास लेखन 44-50

- ❖ साहित्येतिहास लेखन की पद्धतियाँ
- ❖ साहित्येतिहास दर्शन
- ❖ साहित्येतिहास लेखन की परंपरा
- ❖ हिंदी साहित्य का काल-विभाजन और नामकरण

2.2 आदिकाल 51-71

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से आदिकाल संबंधी प्रमुख तथ्य

- ❖ अपभ्रंश रचनाएँ
- ❖ सिद्ध मत एवं साहित्य
- ❖ नाथ मत एवं साहित्य
- ❖ जैन मत एवं साहित्य
- ❖ रासो काव्य
- ❖ लौकिक साहित्य
- ❖ गद्य साहित्य

2.3 भक्तिकाल 72-145

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से भक्तिकाल संबंधी प्रमुख तथ्य

- ❖ सामान्य परिचय
- ❖ संत काव्य धारा (निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा)
- ❖ सूफी काव्य धारा (निर्गुण प्रेममार्गी शाखा)
- ❖ रामभक्ति शाखा (सगुण काव्यधारा)
- ❖ कृष्णभक्ति शाखा (सगुण काव्यधारा)
- ❖ भक्तिकाल के अन्य महत्त्वपूर्ण कवि
- ❖ भक्तिकाल की अन्य काव्य-प्रवृत्तियाँ

2.4 रीतिकाल 146-177

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से रीतिकाल संबंधी प्रमुख तथ्य

- ❖ सामान्य परिचय
- ❖ रीतिबद्ध काव्य
- ❖ रीतिसिद्ध काव्य
- ❖ रीतिमुक्त काव्य
- ❖ रीति-इतर काव्य

2.5 आधुनिक काल : काव्य खंड 178-255

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से आधुनिक कविता संबंधी प्रमुख तथ्य

- ❖ भारतेंदु पूर्व काव्यधारा
- ❖ भारतेंदु युग

❖ द्विवेदी युग
❖ छायावाद
❖ उत्तर छायावाद
❖ प्रगतिवाद
❖ प्रयोगवाद
❖ प्रपद्यवाद/नकेनवाद
❖ नयी कविता
❖ 1960 के बाद के काव्य आंदोलन
❖ नवगीत
❖ हिंदी ग़ज़ल
❖ प्रमुख कवयित्रियाँ (समकालीन)
❖ दलित कवि

2.6 आधुनिक काल : गद्य खंड 256-275

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से आधुनिक गद्य साहित्य परंपरा का प्रवर्तन

❖ प्रथम उत्थान
❖ द्वितीय उत्थान
❖ तृतीय उत्थान

परिशिष्ट : नवजागरण

2.7 हिंदी गद्य का विकास 276-279

2.8 उपन्यास 280-322

❖ सामान्य परिचय
❖ प्रेमचंद पूर्व युग
❖ प्रेमचंद युग
❖ प्रेमचंदोत्तर युग
[मनोविश्लेषणवादी उपन्यास, सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास, व्यक्तिवादी उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, प्रगतिवादी उपन्यास, आंचलिक उपन्यास]
❖ स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास
❖ महिला उपन्यासकार
❖ दलित विमर्श के उपन्यास

2.9 कहानी 323-351

❖ सामान्य परिचय
❖ प्रेमचंद पूर्व युग
❖ प्रेमचंद-प्रसाद युग
❖ प्रेमचंदोत्तर युग
❖ नई कहानी और परवर्ती विविध कहानी आंदोलन
❖ महिला कहानीकार
❖ हिंदी दलित कहानी

2.10 नाटक 352-389

❖ नाटक : अवधारणा एवं सैद्धांतिकी
['नाट्यशास्त्र' द्वारा निर्दिष्ट दृश्य-काव्य का वर्गीकरण, नाटक के तत्त्व, कथाओं के प्रकार, नायिका के भेद, अभिनय के प्रकार, आधुनिक नाटक, रंगमंच, हिंदी रंगमंच : सामान्य परिचय, हिंदी का लोक रंगमंच, नुक्कड़ नाटक]
❖ हिंदी नाटक का सामान्य परिचय
❖ प्रसाद पूर्व युग
❖ प्रसाद युग
❖ प्रसादोत्तर युग
❖ नवनाट्य लेखन/समकालीन नाटक
❖ महिला नाटककार
❖ दलित नाटक व उनके रचनाकार
❖ एकांकी नाटक
❖ परिशिष्ट

2.11 निबंध 390-407

❖ शुक्ल पूर्व युग
❖ शुक्ल युग
❖ शुक्लोत्तर/छायावादोत्तर युग

2.12 आलोचना 408-432

❖ शुक्ल पूर्व युग
❖ शुक्ल युग
❖ शुक्लोत्तर युग
[स्वच्छंदतावादी समीक्षा, प्रगतिवादी समीक्षा, मनोविश्लेषणवादी समीक्षा, नई समीक्षा]
❖ समकालीन समीक्षा

2.13 अन्य गद्य विधाएँ 433-445

❖ आत्मकथा
❖ जीवनी
❖ यात्रा साहित्य
❖ संस्मरण
❖ रेखाचित्र
❖ रिपोर्ताज
❖ डायरी

2.14 प्रवासी साहित्य 446-448

2.15 हिंदी पत्रकारिता 449-462

- ❖ भारतेंदु-पूर्व युगीन पत्रकारिता
- ❖ भारतेंदु युगीन पत्रकारिता
- ❖ द्विवेदी युगीन पत्रकारिता
- ❖ छायावाद युगीन पत्रकारिता
- ❖ छायावादोत्तर पत्रकारिता
- ❖ समकालीन पत्रकारिता
- ❖ दलित विमर्श केंद्रित पत्रकारिता

2.16 विविध 463-488

- ❖ हिंदी में सर्वप्रथम
- ❖ विश्व हिंदी सम्मेलन
- ❖ हिंदी व उसके विकास से संबद्ध संस्थाएँ
- ❖ पुरस्कार एवं सम्मान
- ❖ रचनाकारों का क्रम
- ❖ प्रमुख हिंदी साहित्यकारों की रचनावलियाँ एवं संचयन और उनके संपादक

इकाई–3 : साहित्यशास्त्र 489-552

3.1 भारतीय काव्यशास्त्र 489-529

- ❖ सामान्य परिचय
- ❖ काव्य लक्षण
- ❖ काव्य–हेतु
- ❖ काव्य–प्रयोजन
- ❖ रस संप्रदाय
- ❖ रस–निष्पत्ति
- ❖ साधारणीकरण
- ❖ रस: लक्षण एवं उदाहरण
- ❖ अलंकार संप्रदाय
- ❖ अलंकार: लक्षण एवं उदाहरण
- ❖ रीति संप्रदाय
- ❖ ध्वनि संप्रदाय
- ❖ वक्रोक्ति संप्रदाय
- ❖ औचित्य संप्रदाय
- ❖ काव्य–दोष
- ❖ शब्द शक्ति

3.2 पाश्चात्य काव्यशास्त्र 530-552

- ❖ सामान्य परिचय
- ❖ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के चिंतक और उनकी रचनाएँ
- ❖ प्लेटो के काव्य सिद्धांत
- ❖ अरस्तू के सिद्धांत
- ❖ लोंजाइनस का उदात्त सिद्धांत
- ❖ वर्ड्सवर्थ का काव्य-भाषा सिद्धांत
- ❖ मैथ्यू आर्नल्ड
- ❖ कॉलरिज: कल्पना और फैंटेसी
- ❖ क्रोचे का अभिव्यंजनावाद
- ❖ टी.एस. इलियट के सिद्धांत
- ❖ आई.ए. रिचड्र्स के सिद्धांत
- ❖ नयी समीक्षा
- ❖ रूपवाद
- ❖ संरचनावाद
- ❖ मिथक
- ❖ प्रतीक
- ❖ बिंब
- ❖ फैंटेसी
- ❖ यथार्थवाद

इकाई–4 : वैचारिक पृष्ठभूमि 553-574

- ❖ भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि
- ❖ हिंदी नवजागरण
- ❖ खड़ी बोली आंदोलन
- ❖ फोर्ट विलियम कॉलेज
- ❖ भारतेंदु व हिंदी नवजागरण
- ❖ महावीर प्रसाद द्विवेदी व हिंदी नवजागरण
- ❖ गांधीवादी दर्शन
- ❖ अंबेडकर दर्शन
- ❖ लोहिया दर्शन
- ❖ मार्क्सवाद
- ❖ मनोविश्लेषणवाद
- ❖ अस्तित्ववाद
- ❖ उत्तर-आधुनिकतावाद
- ❖ दलित विमर्श
- ❖ स्त्री विमर्श
- ❖ आदिवासी विमर्श
- ❖ अल्पसंख्यक विमर्श

खंड–२ : पाठ (टेक्स्ट)

इकाई–5 : हिंदी कविता : पाठ (टेक्स्ट) **1-43**

[पृथ्वीराज रासो – रेवा तट (चंदबरदाई); खुसरो की पहेलियाँ और मुकरियाँ; विद्यापति की पदावली; कबीर के दोहे; जायसी ग्रंथावली; भ्रमरगीत सार (सूरदास); रामचरित मानस – उत्तरकाण्ड (तुलसी); बिहारी सतसई; घनानंद कवित्त; मीरा; प्रियप्रवास (हरिऔध); भारत-भारती, साकेत (मैथिलीशरण गुप्त); आँसू, कामायनी (जयशंकर प्रसाद); जुही की कली, जागो फिर एक बार, सरोजस्मृति, राम की शक्ति पूजा, कुकुरमुत्ता, बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु (निराला); परिवर्तन, प्रथम रश्मि, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र (सुमित्रानंदन पंत); बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, मैं नीर भरी दुख की बदली, फिर विकल है प्राण मेरे, यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो (महादेवी वर्मा); उर्वशी – तृतीय अंक, रश्मिरथी (दिनकर); कालिदास, बादल को घिरते देखा है, मनुष्य हूँ, अकाल और उसके बाद, खुरदरे पैर, शासन की बन्दूक (नागार्जुन); कलगी बाजरे की, हरी घास पर क्षण भर, यह दीप अकेला, असाध्य वीणा, कितनी नावों में कितनी बार (अज्ञेय); गीत फरोश, सतपुड़ा के जंगल (भवानी प्रसाद मिश्र); भूल गलती, ब्रह्मराक्षस, अँधेरे में (मुक्तिबोध); नक्सलबाड़ी, मोचीराम, अकाल दर्शन, रोटी और संसद (धूमिल)]

इकाई–6 : हिंदी उपन्यास : पाठ (टेक्स्ट) **44-74**

[देवरानी जेठानी की कहानी (पं. गौरीदत्त); परीक्षा गुरु (लाला श्रीनिवास दास); गोदान (प्रेमचंद); शेखर एक जीवनी (भाग-1) (अज्ञेय); बाणभट्ट की आत्मकथा (हजारीप्रसाद द्विवेदी); मैला आँचल (फणीश्वरनाथ रेणु); झूठा सच, झूठा सच-2 'देश का भविष्य' (यशपाल); मानस का हंस (अमृतलाल नागर); तमस (भीष्म साहनी); राग दरबारी (श्रीलाल शुक्ल); जिंदगीनामा (कृष्णा सोबती); आपका बंटी (मन्नू भंडारी); धरती धन न अपना (जगदीश चंद्र)]

इकाई–7 : हिंदी कहानी : पाठ (टेक्स्ट) **75-85**

[चंद्रदेव से मेरी बातें, दुलाई वाली (बंग महिला/राजेन्द्र बाला घोष); एक टोकरी भर मिट्टी (माधवराव सप्रे); राही (सुभद्रा कुमारी चौहान); ईदगाह, दुनिया का सबसे अनमोल रत्न (प्रेमचंद); कानों में कँगना (राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह); उसने कहा था (चंद्रधर शर्मा गुलेरी); आकाशदीप (जयशंकर प्रसाद); अपना-अपना भाग्य (जैनेन्द्र); मारे गए गुलफ़ाम उर्फ़ तीसरी कसम, लाल पान की बेगम (फणीश्वरनाथ रेणु); गैंग्रीन/रोज (अज्ञेय); कोसी का घटवार (शेखर जोशी); अमृतसर आ गया, चीफ की दावत (भीष्म साहनी); सिक्का बदल गया (कृष्णा सोबती); इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर (हरिशंकर परसाई); पिता (ज्ञानरंजन); राजा निरबंसिया (कमलेश्वर); परिन्दे (निर्मल वर्मा)]

इकाई–8 : हिंदी नाटक : पाठ (टेक्स्ट) **86-106**

[अंधेर नगरी, भारत दुर्दशा (भारतेन्दु हरिश्चंद्र); चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी (जयशंकर प्रसाद); अंधायुग (धर्मवीर भारती); सिंदूर की होली (लक्ष्मीनारायण लाल); आधे-अधूरे, आषाढ़ का एक दिन (मोहन राकेश); आगरा बाजार (हबीब तनवीर); बकरी (सर्वेश्वरदयाल सक्सेना); एक और द्रोणाचार्य (शंकर शेष); अंजो दीदी (उपेन्द्रनाथ अश्क); महाभोज (मन्नू भंडारी)]

इकाई–9 : हिंदी निबंध : पाठ (टेक्स्ट) **107-121**

[दिल्ली दरबार दर्पण, भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है (भारतेंदु हरिश्चंद्र); शिवमूर्ति (प्रताप नारायण मिश्र); शिवशंभु के चिट्ठे (बालमुकुंद गुप्त); कविता क्या है (रामचंद्र शुक्ल); नाखून क्यों बढ़ते हैं (हजारीप्रसाद द्विवेदी); मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र); मजदूरी और प्रेम (अध्यापक पूर्ण सिंह); उत्तराफाल्गुनी के आस-पास (कुबेरनाथ राय); उठ जाग मुसाफिर (विवेकी राय); संस्कृति और सौंदर्य (नामवर सिंह)]

इकाई–10 : अन्य गद्य विधाएँ : पाठ (टेक्स्ट) **122-150**

[माटी की मूरतें (रामवृक्ष बेनीपुरी); ठकुरी बाबा (महादेवी वर्मा); मुर्दहिया (तुलसीराम); प्रेमचंद घर में (शिवरानी देवी); एक कहानी यह भी (मन्नू भंडारी); आवारा मसीहा (विष्णु प्रभाकर); क्या भूलूँ क्या याद करूँ (हरिवंश राय बच्चन); आपहुदरी (रमणिका गुप्ता); भोलाराम का जीव (हरिशंकर परसाई); जामुन का पेड़ (कृष्ण चंदर); संस्कृति के चार अध्याय (रामधारी सिंह दिनकर); एक साहित्यिक की डायरी (मुक्तिबोध); मेरी तिब्बत यात्रा (राहुल सांकृत्यायन); अरे यायावर रहेगा याद? (अज्ञेय)]

एन.टी.ए. नेट/जेआरएफ प्रशनपत्र नवंबर 2020 (प्रथम पाली)

1. रामचंद्र शुक्ल के अनुसार निम्नलिखित में से किस ग्रंथ में कयामत का वर्णन है–
   (a) अखरावट (b) पद्मावत
   (c) आखिरी कलाम (d) मधुमालती

2. 'अंधायुग' के निम्नलिखित पात्रों को उनकी प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिये–

सूची-I	सूची-II
A. युयुत्सु	1. पाशविक प्रतिहिंसक
B. अश्वत्थामा	2. संशयग्रस्त
C. संजय	3. सत्याग्रही
D. विदुर	4. कर्म लोक से बहिष्कृत तटस्थ

नीचे दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये–

	A	B	C	D
(a)	2	1	4	3
(b)	1	2	3	4
(c)	3	1	4	2
(d)	4	2	3	1

3. प्रेमचंद्र कृत प्रायश्चित कहानी के पात्र है?
   (a) सुबोधचंद्र और मदारीलाल (b) गंगी और मैकू
   (c) करूणा और मैकू (d) श्यामा और धर्मदास

4. करम बीबी और सरफराज निम्नलिखित में से किस उपन्यास के पात्र हैं?
   (a) जिन्दगीनामा (b) सूरजमुखी अंधेरे के
   (c) डार से बिछुड़ी (d) यारों के यार

5. सांप्रदायिक विद्वेष और विभाजन की त्रासदी पर आधारित उपन्यास है–
   1. आवारा मसीहा 2. महाभोज
   3. तमस 4. झूठा सच
   नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये–
   (a) 1 और 2 (b) 2 और 3
   (c) 1 और 3 (d) 3 और 4

6. 'चंद्रगुप्त' नाटक में चाणक्य की संवादोक्तियाँ निम्नलिखित में से कौन-सी है?
   1. संसार-भर की नीति और शिक्षा का अर्थ मैंने यही समझा है कि आत्मसम्मान के लिये मर मिटना ही दिव्य जीवन है।
   2. समझदारी आने पर यौवन चला जाता है।
   3. महत्वाकांक्षा का मोती निष्ठुरता की सीपी में रहता है।
   4. एक अग्निमय गन्धक का स्रोत आर्यावर्त के लौह-अस्त्रागार में घुस कर विस्फोट करेगा
   नीचे दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये–
   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 2 (d) केवल 2 और 4

7. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
   (a) वर्ड्सवर्थ की प्रसिद्ध कृति 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' में कल्पना के सिद्धान्त का विस्तृत विश्लेषण है।
   (b) सेमुअल टेलनर कॉलरिज और विलियम वर्ड्सवर्थ में गुरु-शिष्य का संबंध था और कल्पना के संबंध में दोनों के मतैक्य का यह एक महत्वपूर्ण कारण था।
   (c) कॉलरिज के अनुसार किसी कला कृति का मूल्य उसकी कलात्मकता में ही है, उसके बाहर नहीं।
   (d) कल्पना को कॉलरिज केवल काव्य सर्जन के लिये अनिवार्य मानते हैं। आलोचना में उसकी भूमिका नहीं होती।

8. निम्नलिखित में से कौन-सी रचनाएँ छायावाद की नहीं है–
   1. झरना 2. पथिक
   3. मिलन 4. रश्मि
   नीचे दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये–
   (a) 1 और 2 (b) 3 और 4
   (c) 2 और 3 (d) 4 और 2

9. 'लाला ब्रजकिशोर और मुंशी चुन्नीलाल निम्नलिखित में से किस उपन्यास के पात्र हैं?
   (a) भाग्यवती (b) रहस्य कथा
   (c) नूतन ब्रह्मचारी (d) परीक्षा-गुरु

10. द्विवेदी युगीन कविता की विशेषताएँ है–
   1. शृंगारप्रियता 2. इतिवृत्तात्मकता
   3. लाक्षणिकता 4. प्रबंधात्मकता
   नीचे दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये–
   (a) 1 और 3 (b) 1 और 2
   (c) 2 और 3 (d) 2 और 4

11. नीचे दो कथन दिये गए हैं–
   स्थापना 1: कृष्ण भक्ति काव्य वृत्ति के उत्कर्ष का दर्शन है।
   तर्क 2: इसीलिये उस का पूर्णास्वाद उज्ज्वल रस में होता है।
   उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें।
   (a) 1 सही 2 गलत (b) 1 गलत 2 सही
   (c) 1 और 2 दोनों गलत (d) 1 और 2 दोनों सही

12. यशपाल की पर्दा कहानी के पात्र हैं–
   1. हरगोबिन 2. बब्बर अली खां
   3. चौधरी पीरबख्श 4. शेख जुम्मन

द्वारा सीमाबद्ध है। मनुष्य की व्यष्टि-सत्ता के साथ समष्टि का किस प्रकार संघर्ष एवं द्वन्द्व चलता रहता है और इसके परिणामस्वरूप उसके सामाजिक जीवन में किस प्रकार रूपान्तर होता रहता है, यह बात अतीत काल के साहित्य या समालोचना में विशेष रूप से नहीं पाई जाती। मनुष्य की सामाजिक परिस्थिति एवं उसके व्यष्टि-जीवन के साथ समष्टि के संघर्ष और उसके मन के ऊपर इन सबकी प्रतिक्रियाओं की परीक्षा करने के कारण ही आधुनिक साहित्य भाव-प्रधान न होकर बहुत-कुछ वस्तु-प्रधान बन गया है। समाज में समय-समय पर जो परिवर्तन होते रहते हैं, उनका प्रभाव मानव-मन पर भी पड़े बिना नहीं रहता। मनुष्य के मन का यह परिवर्तन जब साहित्य में प्रतिफलित होता है, तभी साहित्य में चौतन्य की सृष्टि होती है और वह सबके लिए उपभोग्य बन जाता है। प्रत्येक युग का श्रेष्ठ साहित्य अपने युग के प्रगतिशील विचारों द्वारा किसी-न-किसी रूप में अवश्य प्रभावित होता है । मानव-मन को प्रभावित करके उसके जीवन को सभी दिशाओं में प्रगतिशील बनाने में ही साहित्य की चरम सार्थकता है। युग-युग में साहित्य जो लक्ष-लक्ष मनुष्यों के मन-प्राण को प्रभावित करता है, यही उसकी लोकप्रियता का मूल कारण है। साहित्य की श्रेष्ठता का, उसके मूल्य एवं महत्त्व का एक ही मानदण्ड हो सकता है, और वह मानदण्ड यही है कि जातीय जीवन के साथ, अखिल शक्ति की प्राण-धारा के साथ, उसका निविड़ संयोग है या नहीं।

96. उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर निम्नलिखित में से सर्वाधिक सार्थकता का कारण है?
(a) जीवन को प्रगतिशील बनाना
(b) जीवन के दुखों की उपेक्षा
(c) सबके लिए उपभोग्य न होना
(d) व्यष्टि और समष्टि का निरादर

97. उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(a) मनुष्य का व्यष्टि-जीवन समष्टि जीवन से सीमाबद्ध नहीं होता।
(b) अतीत काल की समालोचना में व्यष्टि और समष्टि के बीच संघर्ष के रूपांतरण की विशेष चर्चा पाई जाती है।
(c) साहित्य की लोकप्रियता का कारण है असंख्य जन समुदाय पर प्रभाव
(d) साहित्य मानव-जीवन के सुख-दुख से निरपेक्ष रहता है।

98. उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर साहित्य की श्रेष्ठता का क्या मानदण्ड है?
(a) वस्तु-प्रधानता न कि भाव प्रधानता
(b) मानव जीवन की सीमाओं की अभिव्यक्ति
(c) अतीत काल का महिमागान
(d) जातीय जीवन व अखिल शक्ति की प्राण-धारा से निविड़ संयोग

99. उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
(a) जातीय जीवन के साथ गहरी संबद्धता श्रेष्ठ साहित्य का मानदण्ड है।
(b) सामाजिक परिवर्तन मानव-मन को प्रभावित करता है।
(c) मनुष्य का समष्टि जीवन उसके व्यक्ति जीवन को सीमाबद्ध नहीं करता है।
(d) मानव जीवन साहित्य का मूल स्रोत है।

100. उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर निम्नलिखित में से साहित्य की लोकप्रियता का मूल कारण है।
(a) सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति से दूरी
(b) लाखों-लाख मनुष्यों की चेतना पर प्रभाव
(c) सामाजिक परिवर्तन की अनदेखी
(d) व्यष्टि जीवन की संकीर्णता

उत्तरमाला

1. (c)	2. (c)	3. (a)	4. (a)	5. (d)	6. (b)	7. (c)	8. (c)	9. (d)	10. (d)
11. (d)	12. (b)	13. (b)	14. (c)	15. (a)	16. (a)	17. (b)	18. (a)	19. (c)	20. (b)
21. (*)	22. (c)	23. (c)	24. (d)	25. (b)	26. (c)	27. (d)	28. (c)	29. (b)	30. (a)
31. (d)	32. (b)	33. (b)	34. (a)	35. (a)	36. (b)	37. (a)	38. (c)	39. (d)	40. (d)
41. (b)	42. (c)	43. (b)	44. (b)	45. (d)	46. (b)	47. (b)	48. (c)	49. (a)	50. (a)
51. (b)	52. (b)	53. (c)	54. (b)	55. (d)	56. (a)	57. (b)	58. (c)	59. (d)	60. (d)
61. (d)	62. (c)	63. (b)	64. (b)	65. (b)	66. (b)	67. (b)	68. (c)	69. (c)	70. (a)
71. (c)	72. (b)	73. (a)	74. (d)	75. (a)	76. (b)	77. (c)	78. (d)	79. (c)	80. (a)
81. (b)	82. (a)	83. (a)	84. (b)	85. (a)	86. (a)	87. (a)	88. (d)	89. (c)	90. (b)
91. (c)	92. (b)	93. (a)	94. (b)	95. (b)	96. (a)	97. (c)	98. (d)	99. (c)	100. (b)

एन.टी.ए. नेट/जेआरएफ प्रश्नपत्र नवंबर 2020 (द्वितीय पाली)

1. हिंदी की लोक नाट्य शैलियों को प्रदेशों के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची-I	सूची-II
A. सांग	1. उत्तरप्रदेश
B. नौटंकी	2. मालवा (मध्यप्रदेश)
C. माच	3. छत्तीसगढ़
1. नाचा	4. हरियाणा

नीचे दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

	A	B	C	D
(a)	4	1	2	3
(b)	2	1	3	4
(c)	4	3	2	1
(d)	3	1	4	2

2. नामवर सिंह द्वारा रचित पुस्तकें है–
   1. कहानी : नई कहानी
   2. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका
   3. इतिहास और आलोचना
   4. भक्तिकाव्य और लोकजीवन

   नीचे दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये:

   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 3 और 4 (d) केवल 1 और 3

3. जगदीशचन्द्र द्वारा रचित उपन्यास हैं–
   1. धरती धन न अपना
   2. यथाप्रस्तावित
   3. किस्सा गुलाम
   4. मुठ्ठी भर कांकर

   नीचे दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये:

   (a) केवल 2 और 3 (b) केवल 1 और 4
   (c) केवल 3 और 4 (d) केवल 2 और 4

4. निम्नलिखित में से कौन-सी भाषा आर्यभाषाओं में शामिल नहीं है?

   (a) संस्कृत (b) प्राकृत
   (c) तुर्की (d) अंग्रेजी

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

   कथन - 1 : समर्पण सगुण भक्ति का मूल है।

   कथन - 2 : भक्ति आंदोलन एकमात्र अद्वैतवाद से प्रभावित रहा।

   उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

   (a) कथन 1 और 2 दोनों सही है।
   (b) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
   (c) कथन 1 सत्य है, किन्तु 2 कथन गलत है।
   (d) कथन 1 असत्य है, किन्तु कथन 2 सही है।

6. बिम्बवाद का संबंध निम्नलिखित में से किस आचार्य से है–

   (a) जार्ज लूकाच (b) एजरा पाउन्ड
   (c) डेनियल बेल (d) जॉक देरिदा

7. निम्नलिखित में से दिनकर काव्य की विशेषताएं कौन-सी हैं–
   1. जातिवादी व्यवस्था का विरोध
   2. सपाट बयानी
   3. युद्ध का तात्त्विक चिंतन और शोषण का विरोध
   4. व्यक्ति स्वातंत्र्य की प्रतिष्ठा

   नीचे दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये:

   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 1 और 3
   (c) केवल 2 और 3 (d) केवल 3 और 4

8. मानव-प्रवृत्तियों अथवा मनोविकारों को पात्र के रूप में उपस्थित कर नाटकीय-द्वन्द्व की सृष्टि करने वाला जयशंकर प्रसाद का नाटक है :

   (a) विशाख (b) कामना
   (c) सज्जन (d) प्रायश्चित

9. निर्मल वर्मा की कहानियों की दुनिया हैं–
   1. हताश और आत्मपरक नायकों की
   2. अकेलेपन और अलगाव की
   3. प्रतिरोध और विद्रोह की
   4. राष्ट्रीय चेतना की

   नीचे दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये:

   (a) केवल 1 और 3 (b) केवल 1 और 2
   (c) केवल 2 और 3 (d) केवल 3 और 4

10. शरद जोशी द्वारा रचित निबंध संग्रह हैं–
    1. जीप पर सवार इल्लियां
    2. विषकन्या
    3. यत्र तत्र सर्वत्र
    4. आडू का पेड़

    नीचे दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये:

    (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 1 और 3
    (c) केवल 2 और 3 (d) केवल 2 और 4

95. "संस्कृति प्रभुत्व" के लेखक का संकेत किस संस्कृति के प्रभुत्व से है?
(a) लोक संस्कृति का प्रभुत्व
(b) पूंजीवादी संस्कृति का प्रभुत्व
(c) श्रम-संस्कृति का प्रभुत्व
(d) पुरोहितों की संस्कृति का प्रभुत्व

निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़िए और प्रश्नों (96 से 100) के उत्तर दीजिए:

साहित्य का संबंध व्यक्ति और राष्ट्रीय जीवन से है। जगत की परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना वह रह ही नहीं सकता, इसीलिए कि वह स्वयं जगत का ही एक अंग है। जीवन में जो क्रियाएं हो रही है साहित्यकार में उनकी प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक और अनिवार्य है। समाज का प्रभाव साहित्यकार पर न पड़े, यह असंभव है। हां, साहित्यकार पलायन अवश्य कर सकता है, आंख बंद कर सकता है जैसा कि दरबारी कवियों ने किया। आज की परिस्थितियां बिल्कुल भिन्न है। पात्रों और परिस्थिति का ख्याल रखना जरूरी है, क्योंकि इनका ख्याल रखे बिना रस का उद्रेक नहीं हो सकता। कोरा शब्दांडबर टिकाऊ नहीं। साहित्यकार तो सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा कहीं अधिक सहृदय, संवेदनशील प्राणी होता है कि अपने देश और काल की ठीक-ठीक परिस्थितियों का निर्भीक चित्रण करे। यदि देश दुखी है और भूख, गुलामी और शोषण का शिकार है और साहित्यकार इन सब क्लेशों की उपेक्षा करके मौज का राग अलापता है तो वह राष्ट्रीय जीवन से कोसों दूर है, वह राष्ट्र के प्रति, साहित्य के प्रति विश्वासघात करता है। उसे साहित्यकार कहलाने का अधिकार नहीं है। साहित्यकार फोटोग्राफर मात्र नहीं है। यह उचित है कि साहित्यकार समाज का दोष जाने, परन्तु केवल उसी के यथार्थ-चित्रण से साहित्यकार का कर्त्तव्य पूरा नहीं हो जाता। पर साहित्यकार प्रचारक नहीं हैं, इसका अर्थ यह नहीं है कि उसकी रचना की सामाजिक उपदेयता नहीं होती। हमारे प्राचीन, संस्कृत के साहित्याचार्यों ने साहित्य को उपादेयता की आधार-भूमि पर प्रतिष्ठित किया है। अशिव की क्षति साहित्य का बड़ा पुनीत अनुष्ठान है। कोई साहित्यकार राष्ट्र के लिए उपयोगी साहित्य का सृजन कर रहा है, इस बात की अकेली पहचान यह है कि साहित्यकार सत्य तथा राष्ट्रीयता को अपनी श्रद्धानुसार जिस रूप में ग्रहण करे, उसी रूप में निर्भयतापूर्ण व्यक्त करे, भागे नहीं।

96. उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर साहित्य का पुनीत अनुष्ठान क्या है?
(a) रसानुभूति की उपेक्षा (b) यथार्थ की उपेक्षा
(c) मौज का राग अलापना (d) अशिव की क्षति

97. उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर राष्ट्र के लिए उपयोगी साहित्य-सर्जक की पहचान क्या है?
(a) पात्रों और परिस्थितियों के प्रति निरपेक्षता
(b) साहित्यकार की संवेदनहीनता
(c) सत्य का ग्रहण और निर्भयतापूर्ण अभिव्यक्ति
(d) सामाजिक पीड़ा की उपेक्षा

98. उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर साहित्यकार के लिए पात्रों और परिस्थितियों का ख्यान रखना क्यों जरूरी है?
(a) साहित्य के प्रति विश्वासघात के लिए
(b) शब्दांडबर के लिए
(c) रस के उद्रेक के लिए
(d) प्रचार के लिए

99. उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(a) साहित्यकार प्रचारक नहीं है।
(b) साहित्यिक रचना की सामाजिक उपादेयता नहीं है।
(c) साहित्यकार फोटोग्राफर के समकक्ष है।
(d) कोरा शब्दांडबर भी टिकाऊ है।

100. उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?
(a) रचना की सामाजिक उपादेयता होती है
(b) साहित्यकार पर समाज प्रभाव पड़ना आवश्यक नहीं है।
(c) साहित्य का संबंध राष्ट्रीय जीवन से है।
(d) दरबारी कवियों ने पलायन किया।

उत्तरमाला

1. (a)	2. (d)	3. (b)	4. (c)	5. (c)	6. (b)	7. (b)	8. (b)	9. (b)	10. (b)
11. (c)	12. (a)	13. (a)	14. (d)	15. (b)	16. (a)	17. (d)	18. (a)	19. (a)	20. (d)
21. (b)	22. (b)	23. (a)	24. (c)	25. (a)	26. (b)	27. (b)	28. (c)	29. (a)	30. (c)
31. (d)	32. (a)	33. (d)	34. (a)	35. (a)	36. (b)	37. (b)	38. (c)	39. (b)	40. (d)
41. (a)	42. (d)	43. (c)	44. (b)	45. (a)	46. (d)	47. (a)	48. (a)	49. (c)	50. (d)
51. (c)	52. (c)	53. (a)	54. (b)	55. (d)	56. (b)	57. (d)	58. (b)	59. (c)	60. (b)
61. (d)	62. (a)	63. (b)	64. (d)	65. (a)	66. (d)	67. (a)	68. (d)	69. (b)	70. (a)
71. (a)	72. (b)	73. (c)	74. (a)	75. (d)	76. (d)	77. (b)	78. (a)	79. (a)	80. (c)
81. (c)	82. (a)	83. (d)	84. (d)	85. (a)	86. (b)	87. (d)	88. (b)	89. (a)	90. (a)
91. (b)	92. (d)	93. (b)	94. (b)	95. (d)	96. (d)	97. (c)	98. (c)	99. (a)	100. (b)

खंड–१

हिंदी भाषा एवं साहित्य

1 हिंदी भाषा और उसका विकास

हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सामान्य परिचय : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ

- विश्व की भाषाओं की संख्या को लेकर विद्वान विभक्त हैं। सामान्यत: इसकी संख्या 2796 से 3000 के बीच मानी जाती है।
- संसार की सभी भाषाओं का अध्ययन दो प्रकार के वर्गीकरण के तहत किया जाता है–

	आकृतिमूलक वर्गीकरण	पारिवारिक वर्गीकरण
आधार	वाक्य रचना और रूप रचना	रचना तत्त्व और अर्थतत्त्व
अन्य नाम	रूपात्मक वर्गीकरण, रचनात्मक वर्गीकरण, व्याकरणिक वर्गीकरण, वाक्यात्मक वर्गीकरण, पदात्मक वर्गीकरण, पदाश्रित वर्गीकरण	वंशात्मक वर्गीकरण, वंशानुक्रमिक वर्गीकरण, कुलात्मक या ऐतिहासिक वर्गीकरण
उल्लेख्य बिंदु	● विश्व की भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण सबसे पहली बार प्रो. श्लेगल ने किया था। ● आकृतिमूलक वर्गीकरण में भाषा के दो भाग किये जाते हैं– अयोगात्मक भाषा और योगात्मक भाषा।	● पारिवारिक वर्गीकरण में निम्न बातों को आधार बनाया जाता है– पद रचना, वाक्य रचना, ध्वनि, अर्थ, शब्द और स्थानिक समीपता।

- विश्व में भाषा-परिवारों की संख्या को लेकर विद्वानों में मतभेद है।
  - ◆ भोलानाथ तिवारी और विल्हेल्म फॉन हुम्बोल्ट ने भाषा-परिवारों की संख्या 13 मानी है।
  - ◆ फ्रीड्रिश म्यूलर ने भाषा-परिवारों की संख्या 100 मानी है।
- निर्विवादित रूप से चार भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत 18 भाषा-परिवारों को महत्त्व दिया जाता है।

भौगोलिक क्षेत्र	भाषा-परिवार		
यूरेशिया (यूरोप-एशिया)	1. भारोपीय (भारत-यूरोपीय) 4. बुरुशस्की 7. जापानी-कोरियाई परिवार 10. सामी-हामी परिवार	2. द्रविड़ परिवार 5. उराल-अल्ताई परिवार 8. अत्युत्तरी (हाइपरबोरी)	3. काकेशी परिवार 6. चीनी परिवार 9. बास्क परिवार
अफ्रीका भूखंड	1. सुदानी परिवार	2. बन्तू परिवार	3. होतेंतोत-बुशमैनी परिवार
प्रशांत महासागरीय भूखंड	1. मलय-पोलिनेशियाई परिवार 4. दक्षिण-पूर्व एशियाई परिवार	2. पापुई परिवार	3. आस्ट्रेलियन परिवार
अमेरिका भूखंड	अमेरिकी परिवार		

भारोपीय परिवार

- भारोपीय परिवार के अन्य नाम हैं– इण्डो-जर्मनिक, भारत-हित्ती परिवार, आर्य परिवार।
- **ध्वनि** के आधार पर भारोपीय परिवार की दस शाखाओं को 'शतम' (सतम) और 'केन्तुम' दो वर्गों में बाँटा जाता है–
  - ◆ **सतम वर्ग की भाषाएँ:** 1. भारत-ईरानी (आर्य), 2. बाल्टो-स्लाविक, 3. अर्मीनी और 4. अल्बानी (इलीरियन)।
  - ◆ **केतुम वर्ग:** 1. जर्मनिक (ट्यूटॉनिक), 2. केल्टिक, 3. ग्रीक, 4. तोखरी, 5. हिटाइट और 6. इटालिक।
- भारत-ईरानी के तीन उपवर्गों का उल्लेख ग्रियर्सन ने किया है–
  - ◆ 1. ईरानी, 2. दरद और 3. भारतीय आर्यभाषा।

भारतीय आर्यभाषाओं के तीन चरण

चरण	भाषा	समय
प्राचीन आर्यभाषाएँ (2000 ई.पू. - 500 ई.पू.)	वैदिक संस्कृत लौकिक संस्कृत	2000 ई.पू. - 1000 ई.पू. 1000 ई.पू. - 500 ई.पू.
मध्यकालीन आर्यभाषाएँ (500 ई.पू. - 1000 ई.)	पालि प्राकृत अपभ्रंश तथा अवहट्ट	500 ई.पू. - 1 ई. 1 ई. - 500 ई. 500 ई. - 1000 ई.
आधुनिक आर्यभाषाएँ	हिंदी, बांग्ला, उड़िया मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी आदि।	1000 ई.

- व्यंजन संयोग में व्यंजनों को नीचे की ओर न जोड़ा जाए। व्यंजन संयोग की स्थिति में या तो व्यंजन की पाई को हटा दिया जाए या हलन्त का प्रयोग किया जाए।
- शिरोरेखा लगाई जाए।
- निम्नांकित संकेतों का बाद वाला रूप ही मान्य हो–

ऋ > अ	भ > भ
झ > झ	क्ष > क्ष
ध > ध	त्र > त्र

- 1953 ई. में हिंदी भाषी प्रदेशों के **शिक्षामंत्रियों का सम्मेलन** हुआ जिसने समिति की सिफारिशों पर विचार किया। सम्मेलन में दो नए सुझाव दिये गए–
  - 'इ' की मात्रा पाई छोटी करके दाहिनी ओर लिखी जाए।
  - 'रव' को 'ख' के रूप में लिखा जाए ताकि इसे 'रव' के रूप में पढ़ने का खतरा न रहे।

इनमें से पहले सुझाव का कड़ा विरोध हुआ और बाद में (1957 में) अस्वीकृत कर दिया गया। दूसरा सुझाव सामान्य रूप से स्वीकार किया गया।

- भारत सरकार ने 1955 ई. में इन सुझावों को मान्यता दे दी। राजकीय संदर्भों में भाषा प्रयोग में लिपि के इन्हीं नियमों को स्वीकार किया जाता है।
- भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने इस दिशा में कई स्तरों पर प्रयास किया है। सन् 1966 में 'मानक देवनागरी वर्णमाला' प्रकाशित की गई। इसमें मूलतः उन वर्णों पर ध्यान दिया गया जिनको एकाधिक तरीके से लिखा जाता था। ऐसे वर्णों के लिये एक रूप निश्चित कर दिया गया। इसी मंत्रालय की ओर से 1967 में 'हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' का प्रकाशन हुआ।

देवनागरी लिपि के संबंध में महत्त्वपूर्ण कथन

- "संसार में यदि कोई सर्वांगपूर्ण अक्षर हैं तो देवनागरी के हैं।"
  –सर आइजक पिटमैन
- "नागरी लिपि से बढ़कर वैज्ञानिक लिपि मैंने पाई नहीं।"
  –आचार्य विनोबा
- देवनागरी दुनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है।
  –राहुल सांकृत्यायन

अभ्यास प्रश्न

1. संविधान के किस अनुच्छेद में देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है?
   (a) 347 (b) 348
   (c) 343 (d) 345 ***नेट, दिसंबर 2004***
2. भारतेन्दु के अनुसार हिंदी नई चाल में कब ढली?
   (a) 1880 (b) 1857
   (c) 1873 (d) 1860 ***नेट, दिसंबर 2004***
3. भारतीय संविधान के किन अनुच्छेदों में राजभाषा संबंधी प्रावधानों का उल्लेख है?
   (a) 343-351 तक (b) 434-315 तक
   (c) 443-135 तक (d) 334-153 तक
   नेट, जून 2005
4. निम्नलिखित में से कौन-सी सघोष महाप्राण ध्वनि है?
   (a) क (b) ट
   (c) ज (d) ठ
5. निम्नलिखित में से कौन-सा पश्च स्वर है?
   (a) आ (b) इ
   (c) ई (d) अ ***नेट, जून 2005***
6. हिंदी भाषा के विकास का सही अनुक्रम कौन-सा है?
   (a) पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी
   (b) प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, पालि
   (c) अपभ्रंश, पालि, प्राकृत, हिंदी
   (d) हिंदी, पालि, अपभ्रंश, प्राकृत ***नेट, जून 2005***
7. निम्नलिखित वर्णों को उनके ध्वनिगुणों के साथ सुमेलित कीजिये–
   A. क — 1. सघोष महाप्राण
   B. ख — 2. अघोष महाप्राण
   C. ग — 3. सघोष अल्पप्राण
   D. घ — 4. अघोष अल्पप्राण
   5. सघोष आनुवंशिक

   कूट :

	A	B	C	D
(a)	4	2	3	1
(b)	1	2	3	4
(c)	2	3	4	1
(d)	1	3	4	2

नेट, जून 2005

8. निम्नलिखित हिंदी के भाषाविदों को उनके ग्रंथों के साथ सुमेलित कीजिये–
   A. कामताप्रसाद गुरु — 1. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास
   B. किशोरी दास वाजपेयी — 2. हिंदी व्याकरण
   C. उदय नारायण तिवारी — 3. भाषा और समाज
   D. रामविलास शर्मा — 4. हिंदी शब्दानुशासन

   कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	4	1	3
(c)	2	1	3	4
(d)	4	2	1	3

नेट, जून 2005

9. मुंडा भाषा-परिवार का क्षेत्र कौन-सा है?
   (a) राजस्थान (b) मध्य प्रदेश
   (c) तमिलनाडु (d) छोटा नागपुर
   नेट, दिसंबर 2005

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) 1, 2, 3 (b) 2, 3, 4
(c) 1, 3, 4 (d) 1, 4

नेट, नवंबर 2020 (प्रथम)

95. निम्नलिखित बोली वर्गों को उनसे संबंद्ध बोलियों के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची -I	सूची-II
1. राजस्थानी	1. भोजपुरी
2. पश्चिमी हिन्दी	2. छत्तीसगढ़ी
3. पूर्वी हिन्दी	3. कन्नौजी
4. बिहारी हिन्दी	4. मालवी

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

	A	B	C	D
(a)	4	3	2	1
(b)	1	4	3	2
(c)	2	1	4	3
(d)	3	2	1	4

नेट, नवंबर 2020 (प्रथम)

96. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द फारसी का है-

(a) दाग (b) औरत
(c) नीलम (d) फीस

नेट, नवंबर 2020 (द्वितीय)

97. संविधान के अनुच्छेद 343 में संघ की राजभाषा के बारे में निम्नलिखित में से कौन-से प्रावधान किए गये हैं?

1. संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।
2. शासकीय प्रयोजनों के लिए भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप मान्य होगा।
3. राजभाषा के बारे में राष्ट्रपति एक आयोग का गठन करेंगे।
4. उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय की सम्पूर्ण कार्रवाई अंग्रेजी भाषा में ही होगी।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये :

(a) केवल 1 और 3 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2, 3 और 4 (d) केवल 1, 2 और 3

नेट, नवंबर 2020 (द्वितीय)

98. मान स्वरों की संख्या कितनी है?

(a) 8 (b) 6
(c) 4 (d) 2

99. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द रूढ़ है, यौगिक नहीं?

(a) पीला (b) झटपट
(c) घुड़साल (d) पंकज

नेट, नवंबर 2020 (द्वितीय)

100. निम्नलिखित बोली-वर्गों को उनसे संबद्ध बोलियों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची-I वर्ग	सूची-II बोली
A. पश्चिमी हिंदी	1. मेवाती
B. पूर्वी हिंदी	2. बुंदेली
C. बिहारी हिंदी	3. बघेली
D. राजस्थानी	4. मगही

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	3	4	1
(c)	3	4	1	2
(d)	4	1	2	3

नेट, नवंबर 2020 (द्वितीय)

101. राजभाषा आयोग, 1955 के अनुसार निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं।

1. हिन्दी सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है, यही सारे भारत का एक माध्यम हो।
2. चौदह वर्ष की उम्र तक भारत के प्रत्येक विद्यार्थी को हिन्दी का ज्ञान करा देना चाहिए।
3. भारत सरकार के प्रकाशन अधिक से अधिक अंग्रेजी में किए जाएं।
4. उच्च न्यायालयों में क्षेत्रीय भाषाओं का व्यवहार होना चाहिए।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) 1, 2, 3 (b) 1, 2, 4
(c) 2, 3, 4 (d) 1, 3, 4

नेट, नवंबर 2020 (प्रथम)

उत्तरमाला

1. (c)	2. (c)	3. (a)	4. (d)	5. (a)	6. (a)	7. (a)	8. (b)	9. (d)	10. (d)
11. (b)	12. (d)	13. (a)	14. (a)	15. (a)	16. (b)	17. (c)	18. (d)	19. (b)	20. (a)
21. (c)	22. (a)	23. (b)	24. (b)	25. (c)	26. (a)	27. (b)	28. (b)	29. (a)	30. (c)
31. (b)	32. (a)	33. (a)	34. (a)	35. (d)	36. (c)	37. (b)	38. (c)	39. (c)	40. (b)
41. (a)	42. (c)	43. (b)	44. (d)	45. (a)	46. (b)	47. (c)	48. (a)	49. (c)	50. (c)
51. (c)	52. (d)	53. (a)	54. (d)	55. (a)	56. (d)	57. (d)	58. (d)	59. (c)	60. (d)
61. (b)	62. (c)	63. (c)	64. (d)	65. (b)	66. (d)	67. (c)	68. (c)	69. (a)	70. (c)
71. (b)	72. (a)	73. (c)	74. (c)	75. (d)	76. (b)	77. (a)	78. (c)	79. (b)	80. (b)
81. (a)	82. (a)	83. (a)	84. (d)	85. (c)	86. (b)	87. (a)	88. (a)	89. (c)	90. (a)
91. (a)	92. (b)	93. (a)	94. (d)	95. (a)	96. (a)	97. (b)	98. (a)	99. (a)	100. (b)
101. (b)									

2 हिंदी साहित्य का इतिहास और गद्य विधाएँ

2.1 हिंदी साहित्येतिहास लेखन

साहित्येतिहास लेखन की पद्धतियाँ

- हिंदी साहित्य के इतिहास की दृष्टि से उल्लेख्य ग्रंथ भक्तिकाल से ही मिलने लगते हैं। जैसे- गोकुलनाथ कृत 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता,' 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' और नाभादास कृत 'भक्तमाल'। किंतु कवियों का विवरण मात्र होने से इन्हें इतिहास-ग्रंथ नहीं माना जाता।
- हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा का आरंभ 19वीं शती में गार्सा द तासी कृत 'इस्तवार द ला लितरेत्यूर ऐन्दुई ए ऐन्दुस्तानी' से माना जाता है।
- हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन की चार पद्धतियाँ मुख्य रही हैं-

1. वर्णानुक्रम पद्धति

- इसमें रचनाकारों का विवरण उनके नाम के प्रथम वर्ण के क्रम से दिया जाता है। उदाहरण के लिये, तुलसीदास, चिंतामणि और केदारनाथ सिंह का समय भले ही भिन्न हो किंतु उनका क्रम इस प्रकार होगा- केदारनाथ सिंह, चिंतामणि, तुलसीदास।
- इसे ऐतिहासिक दृष्टि से असंगत माना जाता है क्योंकि यह इतिहास-लेखन नहीं, शब्दकोश-लेखन की तरह होती है।
- गार्सा द तासी और शिवसिंह सेंगर ने इसका प्रयोग किया है।

2. कालानुक्रमी पद्धति

- इसमें रचनाकारों का विवरण उनके काल (समय) के क्रम से दिया जाता है। रचनाकार की जन्मतिथि को आधार बनाया जाता है।
- इतिहास-लेखन की दृष्टि से इसे भी अधूरा समझा जाता है क्योंकि इस पद्धति से लिखे ग्रंथ भी वर्णानुक्रम पद्धति की तरह 'कवि-वृत्त-संग्रह' मात्र होते हैं।
- जॉर्ज ग्रियर्सन और मिश्रबंधुओं ने इसका प्रयोग किया है। यद्यपि ग्रियर्सन में विधेयवादी पद्धति के कुछ आरंभिक सूत्र भी मिलने लगते हैं।

3. वैज्ञानिक पद्धति

- इसमें ग्रंथकार निरपेक्ष एवं तटस्थ रहकर तथ्य संकलन कर उसे क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करता है।
- इतिहास-लेखन सिर्फ तथ्य संकलन की नहीं, बल्कि उनकी व्याख्या एवं विश्लेषण की भी मांग करता है। अतः इस पद्धति को भी अपरिपक्व माना जाता है।

4. विधेयवादी पद्धति

- फ्रेंच विद्वान तेन (Taine) ने इसे सुव्यवस्थित सिद्धांत के रूप में स्थापित किया। तेन ने इस पद्धति को तीन शब्दों के माध्यम से स्पष्ट किया- **जाति (Race), वातावरण (Milieu)** और **क्षण विशेष (Moment)**। इस पद्धति के अनुसार, 'किसी भी साहित्य के इतिहास को समझने के लिये उससे संबंधित जातीय परंपराओं, राष्ट्रीय और सामाजिक वातावरण एवं सामयिक परिस्थितियों का अध्ययन-विश्लेषण आवश्यक है।'
- इसे इतिहास-लेखन की व्यापक, स्पष्ट एवं विकसित पद्धति माना गया है, क्योंकि, 'इसके द्वारा साहित्य की विकास-प्रक्रिया को बहुत कुछ स्पष्ट किया जा सकता है।'
- हिंदी में सर्वप्रथम रामचंद्र शुक्ल ने इस पद्धति का प्रयोग किया। उनके बाद रामस्वरूप चतुर्वेदी, बच्चन सिंह आदि प्रख्यात साहित्येतिहासकारों ने इस पद्धति को आगे बढ़ाया। यह तथ्य उनके निम्नलिखित उद्धरणों से स्पष्ट होता है-
  - **रामचंद्र शुक्ल:** "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिंब होता है...आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उसका सामंजस्य बिठाना ही साहित्य कहलाता है।"
  - **रामस्वरूप चतुर्वेदी:** "कवि का काम यदि 'दुनिया में ईश्वर के कामों को न्यायोचित ठहराना है' तो साहित्य के इतिहासकार का काम है कवि के कामों को साहित्येतिहास की विकास-प्रक्रिया में न्यायोचित दिखा सकना।"

(संदर्भ: 'हिंदी साहित्य का इतिहास' - सं. डॉ. नगेंद्र, डॉ. हरदयाल)

साहित्येतिहास-दर्शन

- जिस प्रकार साहित्य की परंपरा का अध्ययन साहित्येतिहास-लेखन के माध्यम से किया जाता है, उसी प्रकार साहित्येतिहास-लेखन व उसकी परंपरा का अध्ययन साहित्येतिहास-दर्शन करता है।
- **साहित्येतिहास दर्शन** से अभिप्राय साहित्य के इतिहास-लेखन में प्रयुक्त दृष्टिकोणों एवं विचारों का अध्ययन करने वाले विषय से है। हिंदी में नलिन विलोचन शर्मा ने इस तरह का उल्लेख्य ग्रंथ लिखा है: **'साहित्य-इतिहास का दर्शन'**। मैनेजर पांडेय का 'इतिहास एवं साहित्य दृष्टि' भी इसी प्रकार का ग्रंथ है।

2.2 आदिकाल

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से

- आदिकाल में (भाषा के आधार पर मुख्यत:) दो प्रकार की रचनाएँ मिलती हैं: अपभ्रंश की और देशभाषा (बोलचाल) की। इसी आधार पर शुक्ल जी ने आदिकाल का विभाजन किया है: अपभ्रंश काव्य और देशभाषा काव्य। इनके अंतर्गत केवल बारह ग्रंथों को ही साहित्यिक मानते हुए इस प्रकार वर्गीकृत किया है:
  - **अपभ्रंश काव्य:** विजयपालरासो, हम्मीररासो, कीर्तिलता, कीर्तिपताका;
  - **देशभाषा काव्य:** खुमानरासो, बीसलदेवरासो, पृथ्वीराजरासो, जयचंद्रप्रकाश, जयमयंक जस चंद्रिका, परमालरासो (आल्हा का मूल रूप), खुसरो की पहेलियाँ आदि और विद्यापति पदावली।
- उपर्युक्त बारह पुस्तकों के आधार पर ही आदिकाल का नामकरण 'वीरगाथाकाल' करते हुए लिखा, "इनमें से अंतिम दो तथा बीसलदेव रासो को छोड़कर सब ग्रंथ वीरगाथात्मक ही हैं। अत: आदिकाल का नाम 'वीरगाथाकाल' ही रखा जा सकता है।"
- प्राकृत भाषा की तीन अवस्थाएँ मानी जाती हैं। प्रथम अवस्था को पालि, दूसरी को प्राकृत और अंतिम अवस्था को अपभ्रंश कहा जाता है।
- आचार्य शुक्ल के अनुसार, "प्राकृत की अंतिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिंदी साहित्य का आविर्भाव माना जा सकता है। उस समय जैसे 'गाथा' कहने से प्राकृत का बोध होता था वैसे ही 'दोहा' या 'दूहा' कहने से अपभ्रंश या प्रचलित काव्यभाषा का पद्य समझा जाता था।"
- आचार्य शुक्ल ने अपभ्रंश के लिये 'प्राकृताभास हिंदी', 'प्राकृत की अंतिम अवस्था' और 'पुरानी हिंदी' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।
- "अपभ्रंश या प्राकृताभास हिंदी के पद्यों का सबसे पुराना पता तांत्रिक और योगमार्गी बौद्धों (सिद्धों) की सांप्रदायिक रचनाओं के भीतर विक्रम की सातवीं शताब्दी के अंतिम चरण में लगता है। मुंज और भोज के समय (संवत् 1050) के लगभग तो ऐसी अपभ्रंश या पुरानी हिंदी का पूरा प्रचार शुद्ध साहित्य या काव्य रचनाओं में भी पाया जाता है। अत: हिंदी साहित्य का आदिकाल संवत् 1050 से लेकर संवत् 1375 तक अर्थात् महाराज भोज के समय से लेकर हम्मीरदेव के समय के कुछ पीछे तक माना जा सकता है।"

> हालाँकि प्रथम सिद्ध सरहपा का समय राहुल सांकृत्यायन के अनुसार सामान्यत: 769 ई. स्वीकार किया जाता है, किंतु शुक्ल जी ने उनका समय 633 ई. (वि.स. 690) माना है। अत: इसी आधार पर उन्होंने आठवीं शताब्दी की बजाय सातवीं शताब्दी से सिद्धों की रचनाओं में अपभ्रंश के पद्यों की प्राप्ति को माना है।

- प्राय: लोक में प्रचलित बोलचाल की भाषा और साहित्य की भाषा में अंतर रहा है। अपभ्रंश भी उस समय की ठीक बोलचाल की भाषा नहीं थी जिस समय की रचनाएँ मिलती हैं, बल्कि उस समय के कवियों की भाषा थी। शुक्ल जी ने अपभ्रंश के संबंध में लिखा है, "बोलचाल की भाषा घिस-घिसकर बिल्कुल जिस रूप में आ गई थी सारा वही रूप न लेकर कवि और चारण आदि भाषा का बहुत कुछ वह रूप व्यवहार में लाते थे जो उनसे सौ वर्ष पहले से कवि परंपरा रखती चली आती थी।" अपभ्रंश के जो नमूने हमें पद्यों में मिलते हैं वे उस काव्य भाषा के हैं जो अपने पुरानेपन के कारण बोलने की भाषा से कुछ अलग बहुत दिनों तक आदिकाल के अंत क्या उससे पीछे तक पोथियों में चलती रही।" ***नेट, जून 2019***
- उस समय की बोलचाल की भाषा को विद्यापति ने 'देशी भाषा' कहा। उन्हीं की प्रेरणा से शुक्ल जी ने 'देशभाषा' शब्द का प्रयोग किया।
- उस समय की बोलचाल की भाषा (देशभाषा) के दो रूप आदिकालीन रचनाओं में मिलते हैं- प्राकृत की रूढ़ियों से बहुत कुछ मुक्त और पूरी तरह मुक्त। अमीर खुसरो और विद्यापति की भाषा प्राकृत की रूढ़ियों से मुक्त है। देशभाषा की अन्य रचनाओं पर प्राकृत की रूढ़ियों का थोड़ा बहुत प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।
- शुक्ल जी ने आदिकाल को चार प्रकरणों (अध्यायों) के अंतर्गत विवेचित किया है-
  - प्रकरण 1 (सामान्य परिचय)
  - प्रकरण 2 (अपभ्रंश काव्य)
  - प्रकरण 3 (देशभाषा काव्य)
  - प्रकरण 4 (फुटकल रचनाएँ)

प्रकरण 1 (सामान्य परिचय)

- प्रकरण 1 में आदिकाल के आरंभ, अवधि और उसकी दो मूल विशेषताओं का वर्णन किया है। ये विशेषताएँ हैं-
  - 'अनिर्दिष्ट लोक प्रवृत्ति' ("आदिकाल की दीर्घ परंपरा के बीच डेढ़ सौ वर्षों के भीतर रचना की किसी विशेष प्रवृत्ति का निश्चय नहीं होता है- धर्म, नीति, शृंगार, वीर सब प्रकार की रचनाएँ दोहों में मिलती हैं।)
  - "इस काल की जो साहित्यिक सामग्री प्राप्त है, उसमें कुछ तो असंदिग्ध हैं और कुछ संदिग्ध हैं। असंदिग्ध सामग्री जो कछ प्राप्त है, उसकी भाषा अपभ्रंश अर्थात् प्राकृताभास हिंदी है।"

प्रकरण 2 (अपभ्रंश काव्य)

- "पुरानी प्रचलित काव्यभाषा (अपभ्रंश) में नीति, शृंगार, वीर आदि की कविताएँ तो चली ही आती थीं, जैन और बौद्ध धर्माचार्य अपने मतों की रक्षा और प्रचार के लिये भी इसमें उपदेश आदि की रचना करते थे।"

2.3 भक्तिकाल

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से

- शुक्ल जी ने भक्तिकाल (पूर्व-मध्यकाल) का समय संवत् 1375 से 1700 तक माना है।
- भक्तिकाल का विभाजन इस प्रकार किया है। यही विभाजन सर्वमान्य है-

भक्तिकाल
- निर्गुण धारा
  - ज्ञानाश्रयी (संत) शाखा
  - प्रेममार्गी (सूफी) शाखा
- सगुण धारा
  - रामभक्ति शाखा
  - कृष्णभक्ति शाखा

- इस काल को छः प्रकरणों में इस प्रकार बाँटा गया है-
  - **प्रकरण-1:** सामान्य परिचय
  - **प्रकरण-2:** निर्गुण धारा-ज्ञानाश्रयी शाखा
  - **प्रकरण-3:** निर्गुण धारा-प्रेममार्गी (सूफी) शाखा
  - **प्रकरण-4:** सगुण धारा-रामभक्ति शाखा
  - **प्रकरण-5:** सगुण धारा-कृष्णभक्ति शाखा
  - **प्रकरण-6:** सगुण धारा-भक्तिकाल की फुटकल रचनाएँ

प्रकरण-1 (सामान्य परिचय)

- इस प्रकरण में शुक्ल जी ने भक्ति काल के उदय की व्याख्या करते हुए उसकी सामान्य प्रवृत्तियों का संक्षिप्त विवरण दिया है।
- **भक्तिकाल की राजनीतिक परिस्थितियाँ** इस प्रकार थीं- "देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिंदू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिये वह अवकाश न रह गया। उसके सामने ही उसके देव-मंदिर गिराए जाते थे, देवमूर्तियाँ तोड़ी जाती थीं और पूज्य-पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ भी नहीं कर सकते थे। ऐसी दशा में अपनी वीरता के गीत न तो वे गा ही सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे। आगे चलकर जब मुस्लिम-साम्राज्य दूर तक स्थापित हो गया तब परस्पर लड़ने वाले स्वतंत्र राज्य भी नहीं रह गए। इतने भारी राजनीतिक उलटफेर के पीछे हिंदू जनसमुदाय पर बहुत दिनों तक उदासी छाई रही। अपने पौरुष से हताश जाति के लिये भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?"
- **"भक्तिकाल की धार्मिक स्थिति के विषय में लिखा है-**"वज्रयानी सिद्ध, कापालिक आदि देश के पूर्वी भागों में और नाथपंथी जोगी पश्चिमी भागों में रमते चले आ रहे थे। इसी बात से इसका अनुमान हो सकता है कि सामान्य जनता की धर्मभावना कितनी दबती जा रही थी, उसका हृदय धर्म से कितनी दूर हटता चला जा रहा था।"
- **'भक्ति' के संदर्भ में दक्षिण व उत्तर भारत का संबंध-**
  - "भक्ति का जो सोता दक्षिण की ओर से धीरे-धीरे उत्तर भारत की ओर पहले से ही आ रहा था उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ते हुए जनता के हृदय क्षेत्र में फैलने के लिये पूरा स्थान मिला।"
  - "भक्ति के आंदोलन की जो लहर दक्षिण से आयी उसी ने उत्तर भारत की परिस्थिति के अनुरूप हिंदू-मुसलमान दोनों के लिये एक सामान्य भक्तिमार्ग की भावना कुछ लोगों में जगाई।"

धर्म/साधना के विषय में शुक्ल जी के कुछ महत्त्वपूर्ण मत

- "धर्म का प्रवाह **कर्म, ज्ञान** और **भक्ति,** इन तीन धाराओं में चलता है। इन तीनों के सामंजस्य से धर्म अपनी पूर्ण सजीव दशा में रहता है। किसी एक के भी अभाव से वह विकलांग रहता है। कर्म के बिना वह लूला-लंगड़ा, ज्ञान के बिना अंधा और भक्ति के बिना हृदयविहीन क्या, निष्प्राण रहता है। ज्ञान के अधिकारी तो सामान्य से बहुत अधिक समुन्नत और विकसित बुद्धि के कुछ थोड़े-से विशिष्ट व्यक्ति ही होते हैं। कर्म और भक्ति ही सारे जनसमुदाय की संपत्ति होती है।"
- "साधना के जो तीन अवयव- कर्म, ज्ञान और भक्ति-कहे गए हैं, वे सब काल पाकर दोष ग्रस्त हो सकते हैं। 'कर्म' अर्थशून्य विधि-विधानों से निकम्मा हो सकता है, 'ज्ञान' रहस्य और गुह्य की भावना से पाखंडपूर्ण हो सकता है और 'भक्ति' इंद्रियोपभोग की वासना से कलुषित हो सकती है। भक्ति की निष्पत्ति श्रद्धा और प्रेम के योग से होती है। जहाँ श्रद्धा या पूज्यबुद्धि का अवयव- जिसका लगाव धर्म से होता है- छोड़कर केवल प्रेमलक्षणा भक्ति ली जाएगी वहाँ वह अवश्य विलासिता से ग्रस्त हो जाएगी।"

- "हिंदी साहित्य के आदिकाल में कर्म तो अर्थशून्य विधि-विधान, तीर्थाटन और पर्वस्नान इत्यादि के संकुचित घेरे में पहले से बहुत कुछ बद्ध चला आता था। **धर्म की भावनात्मक अनुभूति या भक्ति,** जिसका **सूत्रपात महाभारतकाल** में और **विस्तृत प्रवर्तन पुराणकाल** में हुआ था, कभी कहीं दबती, कभी कहीं उभरती किसी प्रकार चली भर आ रही थी।"
- सिद्धों-नाथों की 'कर्म' संबंधी अवधारणा की आलोचना करते हुए लिखा है- "उनका उद्देश्य 'कर्म' को उस तंग गड्ढे से निकालकर प्रकृत धर्म के खुले क्षेत्र में लाना न था बल्कि एकबारगी किनारे धकेल देना था। जनता की दृष्टि को आत्मकल्याण और लोककल्याण विधायक सच्चे कर्मों की ओर ले जाने के बदले उसे वे कर्मक्षेत्र से ही हटाने में लग गए थे। उनकी बानी तो **'गुह्य, रहस्य** और **सिद्धि'**

2.4 रीतिकाल

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से

- रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकाल का समय संवत् 1700 (1643 ई.) से संवत् 1900 (1843 ई.) तक माना है।

प्रकरण 1 (सामान्य परिचय)

- इस प्रकरण में आचार्य शुक्ल ने हिंदी कविता के विकास, लक्षण ग्रंथ परिपाटी तथा रीतिकाल के प्रवर्तन की समस्या का विश्लेषण करते हुए, केशवदास एवं इस काल की सामान्य प्रवृत्तियों पर विचार किया है।
- आचार्य शुक्ल ने हिंदी कविता के विकास पर टिप्पणी करते हुए कहा, "हिंदी काव्य अब पूर्ण प्रौढ़ता को पहुँच गया था।"
- लक्षण ग्रंथ परिपाटी के संदर्भ में आचार्य शुक्ल का मानना है, "हिंदी में लक्षण ग्रंथ की परिपाटी पर रचना करने वाले जो सैकड़ों कवि हुए हैं वे आचार्य-कोटि में नहीं आ सकते। वे वास्तव में कवि ही थे। उनमें आचार्यत्व के गुण नहीं थे। उनके अपर्याप्त लक्षण साहित्यशास्त्र का सम्यक् बोध कराने में असमर्थ हैं। बहुत स्थलों पर तो उनके द्वारा अलंकार आदि के स्वरूप का भी ठीक-ठीक बोध नहीं हो सकता। कहीं-कहीं तो उदाहरण भी ठीक नहीं हैं।"
- आचार्य शुक्ल ने रीतिकाल के आरंभ के बारे में कहा, "इसमें संदेह नहीं कि काव्य रीति का सम्यक् समावेश पहले पहल आचार्य केशव ने ही किया किंतु हिंदी रीतिग्रंथों की अखंड परंपरा चिंतामणि त्रिपाठी से चली, अत: रीतिकाल का आरंभ उन्हीं से मानना चाहिये।"

केशवदास

- "केशव के प्रसंग में यह पहले कहा जा चुका है कि वे काव्य में अलंकारों का स्थान प्रधान समझने वाले चमत्कारवादी कवि थे।"
- "केशव ने हिंदी पाठकों को काव्यांग निरूपण की उस पूर्व दशा का परिचय कराया जो भामह और उद्भट के समय में थी; उस उत्तर दशा का नहीं जो आनंदवर्धनाचार्य, मम्मट और विश्वनाथ द्वारा विकसित हुई।"
- "अलंकारों को जिस प्रकार केशवदास ने बहुत से छोटे-छोटे प्रकरणों में बाँट कर रखा है उससे भ्रम हो सकता है कि शायद किसी आधार पर उन्होंने अलंकारों का वर्गीकरण किया है। पर वास्तव में उन्होंने किसी प्रकार के वर्गीकरण का प्रयत्न नहीं किया है। दास जी की एक नई योजना अवश्य ध्यान देने योग्य है। संस्कृत काव्य में अंत्यानुप्रास या तुक का चलन नहीं था, इससे संस्कृत के साहित्य ग्रंथों में उसका विचार नहीं हुआ है। पर हिंदी काव्य में वह बराबर आरंभ से ही मिलता है। अत: दास जी ने अपनी पुस्तक में उसका विचार करके बड़ा ही आवश्यक कार्य किया।"

रीतिकालीन कविता का मूल्यांकन

- "यह सब लिखने का अभिप्राय यहाँ केवल इतना ही है कि यह न समझा जाए कि रीतिकाल के भीतर साहित्य शास्त्र पर गंभीर और विस्तृत विवेचन तथा नई-नई बातों की उद्भावना होती रही।"
- "रीतिग्रंथों की इस परंपरा द्वारा साहित्य के विस्तृत विकास में कुछ बाधा भी पड़ी। प्रकृति की अनेकरूपता, जीवन की भिन्न-भिन्न चिंत्य बातों तथा जगत् के नाना रहस्यों की ओर कवियों की दृष्टि नहीं जाने पाई। दूसरी बात यह हुई कि कवियों की व्यक्तिगत विशेषता की अभिव्यक्ति का अवसर बहुत ही कम रह गया।"
- "वास्तव में शृंगार और वीर इन्हीं दो रसों की कविता इस काल में हुई। प्रधानता शृंगार की ही रही। इससे इस काल को रस के विचार से कोई शृंगारकाल कहे तो कह सकता है। शृंगार के वर्णन को बहुतेरे कवियों ने अश्लीलता की सीमा तक पहुँचा दिया था। इसका कारण जनता की रुचि नहीं, आश्रयदाता राजा-महाराजाओं की रुचि थी जिनके लिये कर्मण्यता और वीरता का जीवन बहुत कम रह गया था।"

प्रकरण 2 (रीति ग्रंथकार कवि)

- इस प्रकरण में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकाल के मुख्य-मुख्य कवियों का विवरण दिया है, जिनका क्रम निम्न है–
  - 1. चिंतामणि त्रिपाठी, 2. बेनी, 3. महाराज जसवंत सिंह, 4. बिहारीलाल, 5. मंडन, 6. मतिराम, 7. भूषण, 8. कुलपति मिश्र, 9. सुखदेव मिश्र, 10. कालिदास त्रिवेदी, 11. राम, 12. नेवाज, 13. देव, 14. श्रीधर या मुरलीधर, 15. सूरति मिश्र, 16. कवींद्र (उदयनाथ) 17. श्रीपति, 18. बीर, 19. कृष्ण कवि, 20. रसिक सुमति, 21. गंजन, 22. अली मुहिब खाँ (प्रीतम), 23. दास (भिखारीदास), 24. भूपति (राजा गुरुदत्त सिंह), 25. तोषनिधि, 26-27. दलपति राय और बंशीधर, 28. सोमनाथ, 29. रसलीन, 30. रघुनाथ, 31. दूलह, 32. कुमारमणि भट्ट, 33. शंभुनाथ मिश्र, 34. शिवसहाय दास, 35. रूप साहि, 36. ऋषिनाथ, 37. बैरीसाल, 38. दत्त, 39. रतनकवि, 40. नाथ (हरिनाथ), 41. मनीराम मिश्र, 42. चंदन, 43. देवकीनंदन, 44. महाराज राम सिंह, 45. भान कवि, 46. थान कवि, 47. बेनी बंदीजन, 48. बेनी प्रवीन, 49. जसवंत सिंह द्वितीय, 50. यशोदानंद, 51. करन कवि, 52. गुरदीन पांडे, 53. ब्रह्मदत्त, 54. पद्माकर भट्ट, 55. ग्वाल कवि, 56. प्रताप साहि, 57. रसिक गोविंद।
- **चिंतामणि त्रिपाठी** की प्रशंसा करते हुए लिखा है, "अवध के पिछले कवियों की भाषा देखते हुए इनकी ब्रजभाषा विशुद्ध दिखाई पड़ती है। विषय वर्णन की प्रणाली भी मनोहर है। ये वास्तव में एक उत्कृष्ट कवि थे।" चिंतामणि ने अपने ग्रंथों में कहीं-कहीं अपने लिये 'मणिमाल' नाम का प्रयोग भी किया है।

रीतिकाल संबंधी प्रमुख तथ्य

सामान्य परिचय

रीतिकाल का नामकरण और उसके प्रस्तोता	
नाम	**प्रस्तोता**
अंधकार काल	त्रिलोचन
कला काल	डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', भगीरथ मिश्र
रीतिकाल	डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन, आचार्य रामचंद्र शुक्ल
अलंकृत काल	मिश्र बंधु
श्रृंगार काल	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

रीति से अभिप्राय

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल सहित कई महत्त्वपूर्ण आलोचकों ने रीति का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि रीति से आशय है अनुकरण करने की प्रवृत्ति।
- समुझैवाला बालकन वर्णन पंथ अगाध। *-केशवदास*
- रीति सुभाषा कवित्त की बरनत बुध अनुसार। *-चिंतामणि*
- सुकविन हूँ की कछु कृपा समुझि कविन को पंथ। *-भूषण*
- सो विश्रब्ध नवौढ़ यो बरनत कवि रसरीति। *-मतिराम*
- अपनी-अपनी रीति के काव्य और कवि रीति। *-देव*
- छंद रीति समुझे नहीं बिन पिंगल के ज्ञान। *-सोमनाथ*
- थोरे क्रम-क्रम ते कहीं अलंकार की रीति। *-दूलह*
- ताही को रति कहत हैं, रस ग्रंथन की रीति।। *-पद्माकार*
- कबित रीति कछु कहत ह्वै व्यंग्य अर्थ चित लाये।। **-प्रताप साहि**
- काव्य की रीति सिखी सुकवीन्ह सों। *–भिखारीदास*
- अरु कछु मुक्तक रीति लखि, कहत एक उल्लास। *–भिखारीदास*
- बंदउ सुकविन के चरण अरु सुकविन के ग्रंथ जाते कछु हौं हूँ लह्यौ, कविताई को पंथ।। *–भिखारीदास*

रीतिकाल के प्रवर्तक एवं उनके प्रस्तोता		
प्रस्तावक	**प्रवर्तक**	**रचनाकाल**
आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	कृपाराम	1541 ई.
डॉ. नगेंद्र	केशवदास	1555-1617 ई.
आचार्य रामचंद्र शुक्ल	चिंतामणि	1643 ई. के आसपास
नोट: कृपाराम को 'कालक्रम की दृष्टि से', केशवदास को 'रचनाकार व्यक्तित्व की समृद्धि की दृष्टि से' तथा चिंतामणि को 'रीति की अखंड परंपरा चलाने की दृष्टि से' रीतिकाल का प्रवर्तक माना जाता है।		

रीतिकाल के उदय की पृष्ठभूमि

- रीतिकाल का आरंभ उस युग में हुआ जब राजनीतिक दृष्टि से मुगल सत्ता भारत की केंद्रीय सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित थी।
- सामाजिक रूप से यह काल भी सामंतवादी स्थितियों का ही काल है।
- इस युग में फारसी काव्य परंपरा का भी हिंदी पर प्रभाव पड़ने लगा। फारसी काव्य परंपरा की प्रमुख विशेषता यह है कि इनमें कविताएँ प्राय: प्रेम के विरह पक्ष पर केंद्रित होती हैं।
- रीतिकाल के उत्तरार्द्ध का समय केंद्रीय मुगल सत्ता के टूटने का समय है। इस समय मुक्ति की भावना दो रूपों में हिंदी कविता में पैदा हुई– 'रीतिमुक्त' और 'रीतिइतर'।
- रीतिकाल में दरबारों के बाहर भी कविताएँ रची जाती रही हैं। रीतिकाल की गैर-दरबारी कविता में प्राय: दो परंपराएँ– 'नीतिकाव्य' तथा 'भक्तिकाव्य' आती हैं।
- इसके अतिरिक्त, इस काल में पहली बार स्वतंत्र रूप से नीतिकाव्य की परंपरा का विकास हुआ जिसमें लोकभाषा में, लोकजीवन के उदाहरणों के आधार पर नीतिकाव्य कहे गए हैं।

रीतिकालीन काव्य की विशेषताएँ

- **काव्य तत्त्व और आचार्यत्व का मिश्रण:** शास्त्र और रचना में समानांतर पार्थक्य रहा। लेकिन रीतिकाल में शास्त्रीयता और रचनात्मकता का यह समानांतर पार्थक्य खत्म हो जाता है। केशवदास, चिंतामणि, भिखारीदास और पद्माकर जैसे रचनाकारों की मूल चिंता संस्कृत काव्यशास्त्र के नियमों के आधार पर रचना करना और उस शास्त्र को लोकभाषा में रूपांतरित करना है। इसलिये इन कवियों को आचार्य कवि भी कहा गया है।
- **अंतर्वस्तु के रूप में श्रृंगार का चयन:** श्रृंगारिकता रीतिकाल की प्रमुख विशेषता है। श्रृंगारिकता की यह चेतना रीतिकाल में सामंती परिवेश और शास्त्र द्वारा समर्थित है। रीतिकाल की श्रृंगारिकता में कामशास्त्र, नायिका भेद और गार्हस्थिक संबंधों की दिनचर्या का फैलाव है।
- **अलंकारिता के प्रति अत्यधिक सजगता:** रीतिकाल में कविता की अंतर्वस्तु की तुलना में उसका रूप महत्त्वपूर्ण हो गया। रूप का सीधा संबंध अलंकृति से है, इसलिये कवियों ने अलंकार को कविता के शोभाकारक धर्म के रूप में नहीं बल्कि उसमें चमत्कार और चकाचौंध उत्पन्न करने के लिये अपनाया।
- **चित्रात्मकता और नाद सौंदर्य:** रीतिकाल की चित्रात्मकता को प्राय: सभी आलोचकों ने स्वीकारा है। चित्रात्मकता रीतिकाव्य की अतिमहत्त्वपूर्ण विशेषता है।
- **प्रकृति चित्रण:** रीति कवियों का प्रकृति चित्रण सामान्यत: उद्दीपन विभाव के रूप में ही हुआ। बादल, चांदनी, मलय-समीर, नदी और वसंत जैसे प्राकृतिक उपादानों को रीति कवियों ने अपना विषय बनाया है।
- **प्रेमानुभूति की मांसलता:** प्रेम रीतिकाव्य का केंद्रीय विषय है। लेकिन सामंती वातावरण के दबाव और रुचियों के कारण इन कवियों ने प्रेम के नितांत दैहिक और उत्तेजक प्रसंगों एवं चित्रों को ही अपनी कविता में व्यक्त किया।

2.5 आधुनिक काल : काव्य खंड

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से

- रामचंद्र शुक्ल आधुनिक हिंदी कविता का आरंभ संवत् 1900 (1843 ई.) से मानते हैं।

प्रकरण 1 [पुरानी धारा (संवत् 1900-1925)]

- इस प्रकरण में रामचंद्र शुक्ल ने पुरानी परिपाटी में लिख रहे आधुनिककालीन कवियों का उल्लेख किया है।
- पुरानी परिपाटी की कविता से आशय ब्रजभाषा काव्य परंपरा से है।
- इस प्रकरण में पुरानी परिपाटी के दो प्रकार के कवियों का उल्लेख किया है–
  - वे कवि जो केवल पुरानी परिपाटी की कविताएँ लिखते थे।
  - वे जिन्होंने एक ओर तो हिंदी साहित्य की नवीन गति के प्रवर्तन में योगदान दिया, दूसरी ओर पुरानी परिपाटी की कविता के साथ भी अपना पूरा संबंध बनाए रखा।
- पुरानी धारा के अंतर्गत पहले प्रकार (वर्ग) के कवियों में निम्न कवियों का वर्णन किया गया है–

  सेवक, महाराज रघुराज सिंह रीवाँ नरेश, सरदार, बाबा रघुनाथदास रामसनेही, ललित किशोरी (शाह कुंदनलाल), राजा लक्ष्मण सिंह, लछिराम (ब्रह्मभट्ट), गोविंद गिल्लाभाई और नवनीत चौबे।
- दूसरे प्रकार (वर्ग) के कवियों में निम्न कवियों का वर्णन हुआ है–

  भारतेंदु हरिश्चंद्र, पं. अंबिकादत्त व्यास, पं. प्रतापनारायण मिश्र, उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी (प्रेमघन), ठाकुर जगमोहन सिंह, बाबू रामकृष्ण वर्मा (बलवीर), लाल सीताराम, पं. आयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', श्रीधर पाठक, बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर', राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' और श्री दुलारेलाल जी भार्गव।
- इसके अतिरिक्त इस वर्ग के कवियों में नाथूराम शंकर शर्मा, लाला भगवानदीन और पं. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' के नाम का उल्लेख भर किया है।
- पुरानी धारा के काव्य के संबंध में शुक्ल जी ने लिखा है–
  - "गद्य के आविर्भाव और विकासकाल से लेकर अब तक कविता की वह परंपरा भी चलती आ रही है जिसका वर्णन भक्तिकाल और रीतिकाल के भीतर हुआ है। भक्तिभाव के भजनों, राजवंश के ऐतिहासिक चरितकाव्यों, अलंकार और नायिका भेद के ग्रंथों तथा श्रृंगार और वीर रस के कवित्त सवैयों और दोहों की रचना बराबर होती आ रही है।"
  - "ब्रजभाषा काव्य की परंपरा गुजरात से लेकर बिहार तक और कुमायूँ गढ़वाल से लेकर दक्षिण भारत की सीमा तक बराबर चलती आई है।"
- 'बाबा रघुनाथदास रामसनेही' के संबंध में लिखा है– "ये आयोध्या के एक साधु थे और अपने समय के बड़े भारी महात्मा माने जाते थे।"

राजा लक्ष्मण सिंह

- "ये हिंदी के गद्य प्रवर्तकों में हैं।"
- "इनकी ब्रजभाषा की कविता भी बड़ी ही मधुर और सरस होती थी। ब्रजभाषा की सहज मिठास इनकी वाणी से टपक पड़ती है।"
- "मेघदूत जैसे मनोहर काव्य के लिये ऐसा ही अनुवादक होना चाहिये था। इस अनुवाद के सवैये बहुत ही ललित और सुंदर हैं। जहाँ चौपाई दोहे आए हैं, वे स्थल उतने सरस नहीं हैं।"

बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

- "इनकी कविता बड़े-बड़े पुराने कवियों की टक्कर की होती थी।"
- पुराने कवियों में भी इनकी सी सूझ और उक्तिवैचित्र्य बहुत कम देखा जाता है।"
- "भाषा भी पुराने कवियों की भाषा से चुस्त और गठी हुई होती थी।"
- "ये साहित्य तथा ब्रजभाषा काव्य के बहुत बड़े मर्मज्ञ माने जाते थे।"

श्री वियोगी हरि

- "ब्रजभूमि, ब्रजभाषा और ब्रजपति के अनन्य उपासक हैं। ऐसे रसिक जीव इस रूखे जमाने में कम दिखाई पड़ते हैं।"
- "उन्होंने अधिकतर पुराने कृष्णभक्त कवियों की पद्धति पर बहुत-से रसीले तथा भक्तिभावपूर्ण पदों की रचना की जिन्हें सुनकर आजकल के रसिक भक्त भी 'बलिहारी' हैं।"

अन्य

- गोविंद गिल्लाभाई की प्रशंसा करते हुए लिखा है– "ब्रजभाषा की कविता इनकी बहुत ही सुंदर और पुराने कवियों की टक्कर की होती थी।"
- "मिश्र जी (प्रतापनारायण मिश्र) समस्यापूर्ति और पुराने ढंग की श्रृंगारी कविता बहुत अच्छी करते थे।" 'पपीहा जब पूछिहै पीव कहाँ' की अच्छी पूर्ति उन्होंने की थी।
- "ठाकुर साहब (जगमोहन ठाकुर) ने कवित्त सवैयों में 'मेघदूत' का भी बहुत सरल अनुवाद किया है।"
- कवि दुलारेलाल जी भार्गव को आचार्य शुक्ल ने कविवर बिहारीलाल की परंपरा का वर्तमान प्रतिनिधि कवि कहा है।
  - "कुछ दोहों में देशभक्ति, अछूतोद्धार, राष्ट्रीय आंदोलन इत्यादि की भावना का अनूठेपन के साथ समावेश करके इन्होंने पुराने साँचे में नया मसाला ढालने की अच्छी कला दिखाई है। आधुनिक काव्यक्षेत्र में दुलारेलाल जी ने ब्रजभाषाकाव्य-चमत्कारपद्धति का एक प्रकार से पुनरुद्धार किया है।"

आधुनिक कविता संबंधी प्रमुख तथ्य

भारतेंदु पूर्व काव्यधारा (1843 – 1867 ई.)

- रीतिकाल की समाप्ति के बाद तथा भारतेंदु युग के आरंभ के पूर्व का काल साहित्यिक दृष्टि से 'भारतेंदु पूर्व काव्यधारा' के नाम से जाना जाता है, जिसकी समय सीमा सामान्यत: 1843 ई. से 1867 ई. तक मानी जाती है।
- इस काल के कवि ब्रजभाषा काव्य परंपरा के कवि हैं। इन्होंने भक्ति शृंगार तथा रीति निरूपण की रचनाएँ लिखी हैं।

भारतेंदु पूर्व काव्यधारा के रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ

कवि	रचनाएँ
रीवाँ नरेश रघुराज सिंह (1823 – 1879 ई.)	1. सुंदर शतक 5. श्रीमद् भागवत माहात्म्य 2. पत्रिका 6. राम स्वयंवर (1869 ई.) 3. रुक्मिणी परिणय 7. भक्तिविलास 4. आनंदाम्बुनिधि 8. राम रसिकावली
बाबा रघुनाथदास रामसनेही	विश्रामसागर (1854 ई.)
सेवक (1815 – 1881 ई.)	1. नखशिख 2. वाग्विलास
सरदार कवि (रचनाकाल 1845 – 1883 ई.)	1. रामलीला प्रकाश 4. साहित्य सरसी 2. राम रत्नाकार 5. शृंगार संग्रह 3. षड्ऋतु 6. वाग्विलास
गोपालचंद्र 'गिरिधरदास' (1833 – 1860 ई.)	1. राधा स्तोत्र 5. रामकथामृत 2. गोपाल स्तोत्र 6. भारतीभूषण 3. जरासंधवध 7. छंदोवर्णन 4. बलराम कथामृत
चंद्रशेखर वाजपेयी	1. नखशिख 2. हम्मीरहठ (1845 ई.) 3. रसिक विनोद (1846 ई.)
रामदास	कविकल्पद्रुम (1844 ई.)
बैजनाथ द्विवेदी (1837 – 1887 ई.)	1. सीतारामाभरण मंजरी (1864 ई.) 2. राम रहस्य (1866 ई.) 3. वृत्तनि दोष कदंब (1866 ई.) 4. वामाविलास (1866 ई.) 5. उद्दीपन शृंगार (1867 ई.) 6. अनुभव उल्लास (1867 ई.) 7. चित्राभरण (1867 ई.)
लछिराम (ब्रह्मभट्ट) (1841–1904 ई.)	1. मानसिंहाष्टक 4. लक्ष्मीश्वर रत्नाकर 2. प्रताप रत्नाकर 5. रावणेश्वर कल्पतरु 3. प्रेम रत्नाकर 6. कमलानंदकल्पतरु

भारतेंदु युग

भारतेंदु युग का काल-विभाजन एवं नामकरण

प्रस्तुतकर्ता	समय	नामकरण
रामचंद्र शुक्ल	1868 – 1893 ई.	नई धारा: प्रथम उत्थान
रामविलास शर्मा	1868 – 1900 ई.	नवजागरण
मिश्र बंधु	1869 – 1888 ई.	वर्तमान काल
राम कुमार वर्मा	1870 – 1900 ई.	आधुनिक काल

- आधुनिक हिंदी कविता के प्रथम चरण को भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाम पर 'भारतेंदु युग' का नाम दिया गया है। नामकरण का आधार भारतेंदु हरिश्चंद्र का युग प्रवर्तक व्यक्तित्व रहा। चूँकि भारतेंदु का जन्म सन् 1850 ई. में हुआ, इसलिये कई विद्वान आधुनिक काल का आरंभ 1850 ई. से स्वीकार करते हैं।
- इस तरह हम मौटे तौर पर भारतेंदु युग का समय 1850 से 1900 ई. ('सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन से पूर्व तक) तक मान सकते हैं।

भारतेंदु युग की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

- **अंतर्विरोधों का साहित्य:** भारतेंदु युग में राष्ट्रभक्ति बनाम राजभक्ति, ब्रजभाषा बनाम खड़ी बोली तथा पारंपरिक संस्कार बनाम आधुनिक विचार के मध्य अंतर्विरोध पाया जाता है।
- **शृंगारिकता की चेतना:** इस काल में आधुनिकता की चेतना के बावजूद रीतिकालीन प्रभाव पूरी तरह छोड़ा नहीं जा सका। न्यूनाधिक इस युग के सभी कवियों ने शृंगारिक कविताएँ लिखी हैं।
- **भक्ति भावना:** यहाँ भक्ति के निर्गुण और सगुण दोनों रूप उपलब्ध होते हैं। यहाँ भक्ति का एक और व्यापक रूप उपलब्ध होता है जिसे 'स्वदेशानुराग समन्वित भक्ति' कहते हैं अर्थात् ईश्वर की भक्ति का उद्देश्य देश की समस्याओं को सुलझाना हो।
- **समस्यापूर्ति:** इस युग में 'कविता वर्द्धिनी सभा' तथा 'रसिक समाज' जैसी संस्थाओं की स्थापना की गई थी जहाँ कवियों की गोष्ठियाँ होती थीं तथा नए कवियों को प्रोत्साहित किया जाता था। इस परंपरा में एक विषय तय किया जाता था और उसकी अंतिम पंक्ति तय होती थी। कवि अपनी प्रतिभा से उससे पहले की पंक्तियाँ लिखते थे। आशु लेखन की इस पद्धति को ही समस्यापूर्ति कहा गया है जो

2.6 आधुनिक काल : गद्य खंड

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से

प्रकरण 1 (सामान्य परिचय : गद्य का विकास)

- प्रकरण 1 में आधुनिक काल से पहले के गद्य पर शुक्ल जी द्वारा विचार किया गया है। पूर्वाधुनिक गद्य के मुख्यत: दो रूप मिलते थे- ब्रजभाषा गद्य एवं खड़ी बोली का गद्य।
- खड़ी बोली गद्य का विवेचन करने के क्रम में खड़ी बोली के विकास पर विचार करते हुए उन्होंने अंग्रेज़ों की शिक्षा नीति एवं शिक्षा की भाषा, अदालत की भाषा, पत्रकारिता और हिंदी-उर्दू विवाद को प्रस्तुत किया है।
- आधुनिक काल तक साहित्य की मुख्य भाषा ब्रजभाषा रही थी तो ऐसे में गद्य की पुरानी रचनाओं का ब्रजभाषा में होना स्वाभाविक ही था। गद्य की रचनाएँ संख्या में कम ही रही थीं।
- शुक्ल जी ने ब्रजभाषा गद्य का विवेचन रचनाकारों के माध्यम से इस क्रम में किया है- विट्ठलनाथ, नाभादास जी, वैकुंठमणि शुक्ल और सूरति मिश्र।
- ब्रजभाषा गद्य का आरंभिक रूप नाथपंथ से संबंधित ग्रंथ में संवत् 1400 (1343 ई.) के आस-पास मिलता है। तत्पश्चात् मुख्य रूप से ब्रजभाषा गद्य का संबंध भक्तिकालीन कृष्णभक्ति शाखा से रहा।

कृष्णभक्ति शाखा से जुड़े गद्यग्रंथ

- कृष्णभक्ति शाखा से जुड़े गद्यग्रंथों में मुख्य हैं-
  - विट्ठलनाथ कृत 'शृंगाररस मंडन'
  - 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता'
  - 'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता'
- प्रथम पुस्तक के संदर्भ में आचार्य शुक्ल ने सिर्फ इतना लिखा कि "यह गद्य अपरिमार्जित और अव्यवस्थित है।"
- वल्लभसंप्रदाय में प्रचलित वार्ताओं में "वैष्णव भक्तों...की महिमा प्रकट करने वाली कथाएँ लिखी गई हैं। इन वार्ताओं की कथाएँ बोलचाल की ब्रजभाषा में लिखी गयी हैं जिसमें कहीं-कहीं बहुत प्रचलित अरबी और फारसी शब्द भी नि:संकोच रखे गए हैं। साहित्यिक निपुणता या चमत्कार की दृष्टि से ये कथाएँ नहीं लिखी गई हैं।"
- दोनों वार्ता ग्रंथों के रचयिता के तौर पर गोकुलनाथ का नाम प्रख्यात है किंतु शुक्ल जी 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' को उनके किसी शिष्य की तथा 'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' को औरंगज़ेब के समय की रचना मानते हैं।
- "उपर्युक्त 'वैष्णववार्ताओं में उसका (ब्रजभाषा गद्य का) जैसा परिष्कृत और सुव्यवस्थित रूप दिखाई पड़ा वैसा आगे चलकर नहीं। काव्यों की टीकाओं आदि में जो थोड़ा-बहुत गद्य देखने में आता था वह बहुत ही अव्यवस्थित और अशक्त था।"
- "इस प्रकार की ब्रजभाषा गद्य की कुछ पुस्तकें इधर-उधर पाई जाती हैं जिनमें गद्य का कोई विकास प्रकट नहीं होता। साहित्य की रचना पद्य में ही होती रही। गद्य का भी विकास यदि होता आता तो विक्रम की इस शताब्दी के आरंभ में भाषासंबंधिनी बड़ी विषम समस्या उपस्थित होती। जिस धड़ाके के साथ गद्य के लिये खड़ी बोली ले ली गई उस धड़ाके के साथ न ली जा सकती। कुछ समय सोच-विचार और वाद-विवाद में जाता और कुछ समय तक दो प्रकार के गद्य की धाराएँ साथ-साथ दौड़ लगातीं। अत: भगवान का यह भी एक अनुग्रह समझना चाहिये कि यह भाषाविप्लव नहीं संघटित हुआ और खड़ी बोली, जो कभी अलग और कभी ब्रजभाषा की गोद में दिखाई पड़ जाती थी, धीरे-धीरे व्यवहार की शिष्ट भाषा होकर गद्य के नए मैदान में दौड़ पड़ी।"

खड़ी बोली का विकास

- "देश के भिन्न-भिन्न भागों में मुसलमानों के फैलने तथा दिल्ली की दरबारी शिष्टता के प्रचार के साथ ही दिल्ली की खड़ी बोली समुदाय के परस्पर व्यवहार की भाषा हो चली थी।"
- "मुगल साम्राज्य के ध्वंस से भी खड़ी बोली के फैलने में सहायता पहुँची। दिल्ली, आगरा आदि पछाँही शहरों की समृद्धि नष्ट हो चली थी और लखनऊ, पटना, मुर्शिदाबाद आदि नई राजधानियाँ चमक उठीं। जिस प्रकार उजड़ती हुई दिल्ली को छोड़कर मीर, इंशा आदि अनेक उर्दू शायर पूरब की ओर आने लगे, उसी प्रकार दिल्ली के आसपास के प्रदेशों की हिंदी व्यापारी जातियाँ (आगरवाले, खत्री आदि) जीविका के लिये लखनऊ, फैजाबाद, प्रयाग, काशी, पटना आदि पूरबी शहरों में फैलने लगीं। उनके साथ-साथ उनकी बोलचाल की भाषा खड़ी बोली भी लगी चलती थी।"
- "यह सिद्ध बात है कि उपजाऊ और सुखी प्रदेशों के लोग व्यापार में उद्योगशील नहीं होते। अत: धीरे-धीरे पूरब के शहरों में भी इन पश्चिमी व्यापारियों की प्रधानता हो चली। इस प्रकार बड़े शहरों के बाजार की व्यावहारिक भाषा भी खड़ी बोली हुई। यह खड़ी बोली असली और स्वाभाविक भाषा थी, मौलवियों और मुंशियों की उर्दु-ए-मुअल्ला नहीं। यह अपने ठेठ रूप में बराबर पछाँह से आई जातियों के घरों में बोली जाती है।"
- "अत: कुछ लोगों का यह कहना या समझना कि मुसलमानों के द्वारा ही खड़ी बोली अस्तित्व में आई और उसका मूल रूप उर्दू है जिससे आधुनिक हिंदी गद्य की भाषा अरबी-फारसी शब्दों को निकालकर गढ़ ली गई, शुद्ध भ्रम या अज्ञान है। इस भ्रम का कारण यही है कि देश के परंपरागत साहित्य की– जो संवत् 1900 के पूर्व तक पद्यमय ही रहा– भाषा ब्रजभाषा ही रही और खड़ी बोली

2.7 हिंदी गद्य का विकास

- हिंदी गद्य की परंपरा आदिकाल से ही मिलने लगती है। आधुनिक काल से पहले गद्य के तीन रूप प्राप्त होते हैं– राजस्थानी गद्य, ब्रजभाषा गद्य और खड़ी बोली गद्य। गद्य के उक्त तीनों रूपों में 'राजस्थानी गद्य' को सबसे पुराना माना जाता है।
- आदिकाल में हिंदी गद्य की निम्न पुस्तकें मिलती हैं– 'कुवलयमाल कथा', 'राउलवेल', 'उक्तिव्यक्तिप्रकरण', 'वर्णरत्नाकर' आदि। (इनका वर्णन आदिकाल वाले भाग में पहले हो चुका है।)

राजस्थानी गद्य

राजस्थानी गद्य की प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार		
रचना	**समय**	**रचनाकार**
धनपाल कथा	14वीं सदी	–
तत्व विचार	14वीं सदी	–
पृथ्वीचन्द्र चरित्र*	1421 ई.	मणिक्य चन्द्र सूरी
पंचाख्यान	1847 ई.	फतहराम वैरागी
*पृथ्वीचन्द्र चरित्र को **'वाग्विलास'** भी कहा जाता है।		

ब्रजभाषा गद्य

ब्रजभाषा गद्य की प्रारंभिक रचनाएँ तथा उसके रचनाकार		
रचना	**समय**	**रचनाकार**
श्रृंगार रस मंडन	–	विट्ठलनाथ
चौरासी वैष्णवों की वार्ता	17वीं सदी का उत्तरार्द्ध	गोकुल नाथ
दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता		
अष्टायाम	1603 ई.	नाभादास
अगहन माहात्म्य	1623 ई.	वैकुण्ठमणि शुक्ल
बैताल पचीसी	1710 ई.	सूरति मिश्र
सेवक चरित्र	1779 ई.	प्रियादास
आइने अकबरी की भाषा वचनिका	1795 ई.	लाला हीरालाल
राजनीति	1802 ई.	लल्लू लाल
माधव विलास	1817 ई.	लल्लू लाल
सोमवंशन की वंशावली	1828 ई.	माणिक लाल ओझा

- रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार "ब्रजभाषा गद्य का सर्वप्रथम प्रयोग गोरखपंथी योगियों ने संवत् 1400 के आस-पास किया था।"
- **'पृथ्वीराज रासो'** ग्रंथ में **'वचनिका'** शीर्षक के अंतर्गत उपलब्ध गद्य को डॉ. वीरेन्द्रनाथ मिश्र **'ब्रजभाषा गद्य'** का प्राचीनतम रूप मानते हैं।
- **'यमुनाष्टक'** और **'नवरत्न सटीक'** विट्ठलनाथ की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं।
- **'चौरासी वैष्णवों की वार्ता'** और **'दो सौ बाबन वैष्णवों की वार्ता'** में वैष्णव भक्तों और आचार्यों की महिमा प्रकट वाली कथाएँ लिखी गई हैं।
- **'अष्टायाम'** में **भगवान राम की दिनचर्या का वर्णन** है।
- **वैकुण्ठ मणि शुक्ल** ओरछा के महाराज **जसवंत सिंह** के आश्रित थे।
- **प्रियादास** दनकौर के रहने वाले थे और **राधावल्लभीय संप्रदाय** से संबंधित थे।

खड़ी बोली गद्य

दक्खिनी हिंदी का गद्य

- खड़ी बोली गद्य का प्रारंभिक रूप 'दक्खिनी हिंदी' के रूप में मिलता है। इसे साहित्यकारों ने 'हिंदी', 'हिन्दवी', 'देहलवी', 'दक्खिनी', 'जबाने हिंदुस्तान' आदि नामों से पुकारा है।
- **प्रो. एहतेशाम हुसैन** ने 'दक्खिनी' हिंदी के संबंध में लिखा–"इस भाषा में पंजाबी, हरियाणी और खड़ी बोली का मेल था। यह ब्रजभाषा के प्रभाव से भी बची न थी और सबसे बड़ी बात यह थी इसमें अरबी फारसी के अनेक शब्द भी सम्मिलित हो गए थे।"
  - "इतिहास से पता चलता है कि आरंभ में उन्होंने उसी भाषा से काम चलाया, यहाँ तक की वह उन्नति करके साहित्य की भाषा बन गई। साहित्यकारों ने उसको कभी 'हिंदी' कभी 'जबाने हिंदुस्तान' और कभी 'दकनी' कहकर पुकारा।"

'दक्खिनी हिंदी' के प्रमुख रचनाकार और रचनाएँ	
रचनाकार	**रचनाएँ**
ख्वाजा बन्दानेवाज गेसूदराज* (1318-1422 ई.)	मेराजुल-आशकीन, शिकार नामा, तिलावतुल वजूद, हिदायतनामा, रिसाला सेहवारा या बारहमासा
मुल्ला वजही	सबरस (1635 ई.), कुतुब मुश्तरी
मुहम्मद अली कुतुबशाह	कुलियाते कुली कुतुबशाह
हुसेन अली खाँ	चारदरवेश (1838 ई.)
***दक्खिनी हिंदी-गद्य के प्रथम लेखक माने जाते हैं।**	

- **'मेराजुल आशकीन'** को **'दक्खिनी गद्य की प्रथम पुस्तक'** माना जाता है। इसमें सूफी धर्म का उपदेश है।
- **'सबरस'** को **'उर्दू साहित्य'** की प्रथम गद्य रचना माना जाता है। इसमें तसव्वुफ के सिद्धांतों को 'प्रतीकात्मक शैली' में व्यक्त किया गया है।
- **'चारदरवेश'** फारसी की रचना है जिसका अनुवाद दक्खिनी हिंदी में हुसेन अली खाँ ने अपने पुत्रों के लिये किया था।

2.8 उपन्यास

सामान्य परिचय

- उपन्यास आधुनिक गद्य की एक प्रमुख विधा है जिसका जन्म 18वीं शताब्दी में पश्चिम में हुआ।
- 'उपन्यास' दो शब्दों से मिलकर बना है- 'उप' अर्थात् निकट तथा 'न्यास' अर्थात् थाती। इस आधार पर उपन्यास का अर्थ है वह रचना जो सामाजिक जीवन के अत्यंत निकट हो।
- सामाजिक जीवन के निकट होने के कारण ही उपन्यास को 'आधुनिक युग का महाकाव्य' कहा गया है।
- 'राल्फ फॉक्स' ने अपने प्रसिद्ध लेख 'The Novel as an EPIC' ('उपन्यास महाकाव्य के रूप में') में उपन्यास को 'महाकाव्य' के समकक्ष बताया है।
- उपन्यास का मूल संबंध यथार्थ से माना गया है और इसी अर्थ में यह पारंपरिक आख्यायिकाओं से अलग है।
- विभिन्न आलोचकों ने इस यथार्थवादी आग्रह को उपन्यास का सामान्य कथा से भेदक तत्त्व माना है।
- नॉवेल को बांग्ला और हिंदी में 'उपन्यास', उर्दू में 'नाविल', मराठी में 'कादम्बरी' तथा गुजराती में 'नवलकथा' की संज्ञा प्राप्त है।
- भारत में उपन्यास की विधा पाश्चात्य सहित्य की देन है जिसका सबसे पहले प्रभाव बांग्ला साहित्य पर पड़ा। अंग्रेज़ी उपन्यासकार हेनरी फील्डिंग कृत 'टॉम जोन्स' की तर्ज़ पर टेकचंद्र ठाकुर ने 'आलालेर घरेर दुलाल' (1857 ई.) नामक उपन्यास रचा जिसे कुछ विद्वान प्रथम बांग्ला उपन्यास भी मानते हैं। 'दुर्गेशनंदिनी' (1865 ई.) की रचना कर प्रथम बांग्ला मौलिक उपन्यासकार के रूप में ख्यातिप्राप्त बंकिमचंद्र भी अंग्रेज़ी उपन्यासकारों से अत्यधिक प्रभावित थे।
- 1873 ई. में 'दुर्गेशनंदिनी' हिंदी में अनूदित होकर आई। तत्पश्चात् 1882 ई. में श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षागुरु' का प्रकाशन हुआ जिसे हिंदी के प्रथम मौलिक उपन्यास का गौरव प्राप्त है।
- इस प्रकार हिंदी के प्रारंभिक उपन्यासों पर बांग्ला और अंग्रेज़ी उपन्यासों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।
- हिंदी में नॉवेल के अर्थ में उपन्यास पद का सर्वप्रथम प्रयोग भारतेंदु हरिश्चंद्र ने सन् 1875 ई. में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' में प्रकाशित अपनी अपूर्ण रचना 'मालती' के लिये किया।
- अध्ययन की सुविधा के लिये हिंदी उपन्यास का काल-विभाजन स्थूल रूप से- प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग तथा स्वातंत्र्योत्तर युग के रूप में किया गया है।

प्रेमचंद पूर्व युग

- हिंदी में प्रथम उपन्यास के संबंध में विद्वानों के मत इस प्रकार हैं–

उपन्यास (वर्ष)	उपन्यासकार	प्रस्तोता
देवरानी जेठानी की कहानी (1870 ई.)	पं. गौरी दत्त	डॉ. गोपाल राय
भाग्यवती (1877 ई.)	श्रद्धाराम फिल्लौरी	डॉ. विजयशंकर मल्ल
परीक्षागुरु (1882 ई.)	लाला श्रीनिवासदास	आचार्य रामचंद्र शुक्ल

- आरंभिक हिंदी उपन्यासों में रोमांच एवं उपदेश का तत्त्व प्रधान था। इनमें अधिकतर यथार्थवादी शैली के स्थान पर आख्यानपरक शैली का उपयोग किया गया था।
- इस युग में मुख्यत: तीन प्रकार के उपन्यास लिखे गए–
  - (i) सुधारवादी उपन्यास,
  - (ii) मनोरंजनपरक उपन्यास (तिलिस्मी-ऐयारी उपन्यास तथा जासूसी उपन्यास) और
  - (iii) ऐतिहासिक उपन्यास।

प्रेमचंद पूर्व युग के महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार एवं उपन्यास	
उपन्याससकार (ई. में)	**उपन्यास (ई. में)**
पं. गौरी दत्त (1836-1906)	देवरानी जेठानी की कहानी (1870)
ईश्वरी प्रसाद एवं कल्याण राय	वामा शिक्षक (1872)
श्रद्धाराम फिल्लौरी (1837-1881)	भाग्यवती (1877)
लाला श्रीनिवासदास (1851-1887)	परीक्षागुरु (1882)
बालकृष्ण भट्ट (1844-1914)	1. रहस्य कथा (1879) 3. सौ अजान एक सुजान (1892) 2. नूतन ब्रह्मचारी (1886) 4. सद्भाव का अभाव (अधूरा)

2.9 कहानी

सामान्य परिचय

- अमेरिकी कहानीकार 'एडगर एलेन पो' को छोटी कहानी (कहानी) का जन्मदाता माना जाता है।
- 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन वर्ष (1900 ई.) से प्राय: इतिहासकारों ने 'हिंदी कहानी' का आरंभ माना है।

कहानी, गल्प और आख्यायिका

- शुरुआती समय में 'कहानी' के लिये 'किस्सा', 'गल्प', 'आख्यायिका' आदि शब्द प्रयुक्त होते थे।
- सरस्वती पत्रिका के पहले अंक में प्रकाशित 'इंदुमती' कहानी को रामचन्द्र शुक्ल तथा अन्य आलोचकों ने 'कहानी' कहा था, लेकिन किशोरीलाल गोस्वामी ने इसे 'आख्यायिका' कहा था।
- **रामचन्द्र शुक्ल** ने अपनी कहानी **'ग्यारह वर्ष का समय'** को 'आख्यायिका' ही कहा था।
- 'इंदु' पत्रिका में **आख्यायिका** शब्द प्रयुक्त होता था और 'मर्यादा' (1911), 'माधुरी' (1922), 'विशाल भारत' (1928) पत्रिकाओं में बांग्ला के अनुकरण पर 'गल्प' शब्द का प्रयोग होता था।
- डॉ. गोपाल राय ने लिखा– "प्रेमचंद ने 1908 में प्रकाशित अपनी कहानी 'सोजे वतन' की भूमिका में पहली बार 'शॉर्ट स्टोरी' पद के अर्थ में 'छोटी कहानी' (संक्षेप में कहानी) पद का प्रयोग किया था।"
- भामह के अनुसार, कथा की वस्तु – कल्पित और आख्यायिका की वस्तु – ख्यात अथवा ऐतिहासिक होती है।

प्रथम कहानी संबंधी विवाद

हिंदी की प्रथम कहानी और उसके प्रस्तोता

कहानी (प्रकाशन वर्ष; ई. में)	रचनाकार	प्रस्तोता
एक ज़मींदार का दृष्टांत (1871)	रैवरेण्ड जे. न्यूटन*	राजेन्द्र बढ़वालिया
प्रणयिनी-परिणय (1887)	किशोरीलाल गोस्वामी	बच्चन सिंह
इंदुमती (1900)	किशोरीलाल गोस्वामी	रामचन्द्र शुक्ल
एक टोकरी भर मिट्टी (1901)	माधवराव सप्रे#	देवी प्रसाद वर्मा
ग्यारह वर्ष का समय (1903)	रामचन्द्र शुक्ल	लक्ष्मी नारायण लाल
चंद्रदेव से मेरी बातें (1904)	बंग महिला	भवदेव पाण्डेय
दुलाईवाली (1907)	बंग महिला	रायकृष्ण दास
उसने कहा था (1915)	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	राजेन्द्र यादव

*'राम परीक्षा' इनकी अन्य पुस्तिका है।
इन्होंने 'गीता रहस्य' (बाल गंगाधर तिलक) का मराठी से हिंदी में अनुवाद किया था।

- 'एक ज़मींदार का दृष्टांत' कहानी के **समय** को ध्यान में रखने पर हिंदी साहित्य की **प्रथम मौलिक कहानी** ठहरती है किंतु इसे धर्म के प्रचार की रचना समझे जाने के कारण महत्त्व नहीं दिया गया।
  - यह सर्वप्रथम लुधियाना से 42 पृष्ठों के गुटके के रूप में प्रकाशित हुई थी। 1909 ई. में 'नॉर्थ इंडिया क्रिश्चियन टेक्स्ट एंड बुक सोसायटी' ने इस कहानी को पुनर्मुद्रित किया था।
  - 'वर्तमान साहित्य' (पत्रिका) ने अपने 'शताब्दी कथा विशेषांक' (जनवरी-फरवरी 2000) में इसे पुन:प्रकाशित किया।
  - इस कहानी में वर्णित विषयों में **'किसानों की अबोधता'**, 'ज़मींदारों द्वारा किसानों का शोषण', 'किसानों तथा ज़मींदारों के मध्य का तनाव', 'महाजनों द्वारा कभी-कभार की गई मदद' आदि महत्त्वपूर्ण हैं।
- राजेन्द्र यादव ने अपनी पुस्तक 'कहानी : स्वरूप और संवेदना' में **'इंदुमती'** कहानी पर शेक्सपीयर के नाटक **'टेम्पेस्ट'** का प्रभाव साबित करते हुए **'उसने कहा था'** को प्रथम मौलिक और कलापूर्ण कहानी घोषित किया।
- **'एक टोकरी भर मिट्टी'** कहानी **'छत्तीसगढ़ मित्र'** पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। सामान्यत: यही पहली कहानी मानी जाती है।
- लक्ष्मी नारायण लाल ने लिखा– "शिल्पविधि की दृष्टि से हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी है, 'रामचन्द्र शुक्ल' कृत 'ग्यारह वर्ष का समय'।"

हिंदी कहानी की विकास-यात्रा के पाँच चरण

- पहला चरण – प्रेमचंद पूर्व युग (1900-1915 ई.)
- दूसरा चरण – प्रेमचंद-प्रसाद युग (1915-1936 ई.)
- तीसरा चरण – उत्तर प्रेमचंद युग (1936-1955 ई.)
- चौथा चरण – नयी कहानी (1956-1960 ई.)
- पाँचवा चरण – नयी कहानी के परवर्ती आंदोलन (1960 ई. से)

- "कहानी छोटे मुँह बड़ी बात करती है।" ***–नामवर सिंह***
- "मोपासाँ अनातोले, चेखव और टॉलस्टॉय की कहानियों को पढ़कर हमने फ्रांस और रूस से आत्मिक संबंध स्थापित कर लिया है। हमारे परिचय का क्षेत्र सागरों, द्वीपों और पहाड़ों को लाँघता हुआ फ्रांस और रूस तक विस्तृत हो गया है।" ***–प्रेमचंद***
- "कहानी ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सभी उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। उपन्यास की भांति उसमें मानव जीवन का संपूर्ण वृहद रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता।" ***–प्रेमचंद***

2.10 नाटक

नाटक : अवधारणा एवं सैद्धांतिकी

- नाटक, काव्य का एक महत्त्वपूर्ण रूप है।
- भरतमुनि ने **'नाट्य शास्त्र'** में नाटक को **'नाट्यवेद'** और **'पंचमवेद'** भी कहा है।
- नाटक के संदर्भ में भरतमुनि का कहना है कि– **'न ऐसा कोई ज्ञान है, न शिल्प है, न विद्या है, न ऐसी कोई कला है, न कोई योग है न कोई कार्य ही है जो इस नाट्य में प्रदर्शित न किया जाता हो।'**
- भरतमुनि के समय में ही नाटक के मंचन तथा अन्य महत्त्वपूर्ण पक्षों का विकास हो चुका था।
- उस समय नाटक के अवयव इस प्रकार थे–
  - नट
  - नटी
  - नृत्य-वाद्य
  - संगीत
  - संवाद
  - कथावस्तु
  - रंगमंच
- **रामायण** तथा **महाभारत** जैसे पौराणिक महाकाव्यों में भी नाटक का उल्लेख मिलता है।
- संस्कृत नाटकों में नाटक को **'दृश्य-काव्य'** कहने की परंपरा है। ऐसे में प्रमुख रूप से जो नाट्य रूप प्रचलित थे, उन्हें **दशरूपक** तथा **उपरूपक** की श्रेणी में रखा गया। **'दशरूपक'** के **दस** तथा **'उपरूपक'** के **अठारह** भेद माने जाते हैं जिनका वर्णन नीचे किया गया है–

दशरूपक के भेदों का वर्णन

रूपक-भेद	कथा स्रोत	पात्र (नायक/नायिका)	अंक संख्या	रस	उद्देश्य
नाटक	पंचसंधियुक्त तथा पौराणिक ऐतिहासिक या सामाजिक	ईश्वर या ईश्वरांश या फिर कोई महाराज	5 से 10 अंकों तक	–	–
प्रकरण	कल्पनाश्रित	ब्राह्मण, धनी या मंत्री (नायक)/ कुलवधू, मंत्री-कन्या, वेश्या (नायिका)	–	–	–
भाण	सामाजिक जीवन	धूर्त	एक	शृंगार रस की प्रमुखता	हास्य-व्यंग्य
व्यायोग	इतिहास-प्रसिद्ध	–	एक	रौद्र या वीर रस की प्रमुखता	युद्ध की भयानकता का वर्णन
समवकार	दैवीय कथा (देव-असुरों से संबंधित)	देव-असुर प्रख्यात व उत्पाद्य नायक (संख्या-12 तक हो सकती है।)	तीन: 1. कपट 2. उपद्रव 3. शृंगार	बहुत से रसों की उपस्थिति होती है	वीर तथा रौद्र भावों का प्रदर्शन
डिम	ख्यात कथा	देवता या दैत्य का अवतार	चार	शृंगार और हास्य को छोड़ प्रमुख छः रसों की उपस्थिति	रौद्र रस का प्रदर्शन
ईहामृग	अलभ्य तथा दिव्य नारी की प्राप्ति से संबंधित	ईश्वर का अवतार (नायक) देवी (नायिका)	चार	शृंगार, वीर और रौद्र	विभिन्न भावों द्वारा चमत्कार
अंक	–	गुणी और आख्यान प्रसिद्ध	एक	–	–
वीथी	कल्पनाश्रित	अधिकतम दो पुरुष पात्र	एक	शृंगार रस की प्रधानता	–
प्रहसन	सामाजिक जीवन	राजा, धनी, ब्राह्मण, धूर्त (अनेक पात्रों का समावेश)	एक	हास्य रस की प्रमुखता	जीवन का व्यंग्य प्रदर्शित करने के लिये

विशेष:

- राजा की पटरानी को 'महादेवी' कहा जाता है। इनका जन्म उच्च कुल में हुआ होता था।
- राजा की निम्न कुल की उप-पत्नियों को स्थायिनी या भोगिनी कहा जाता था।
- अंत:पुर के सेवक में कंचुकी प्रधान होता था। यह वृद्ध ब्राह्मण होता था।

अभिनय के प्रकार

- अभिनय नाट्य-प्रयोगों का प्राणतत्त्व होता है। अभिनय के द्वारा ही नाटक बनता है और उसी से 'सहृदय' को रस की अनुभूति होती है। भरत ने 'नाट्यशास्त्र' में अभिनय की परिभाषा इस प्रकार दी है–

'विभावयति यस्माच्च नानार्थान् हि प्रयोगत:।
शाखाङ्गोपाङ्ग संयुक्तास्तस्मादभिनय: स्मृत:॥'

(अभिनय में सभी तत्त्वों का समावेश हो जाता है।)

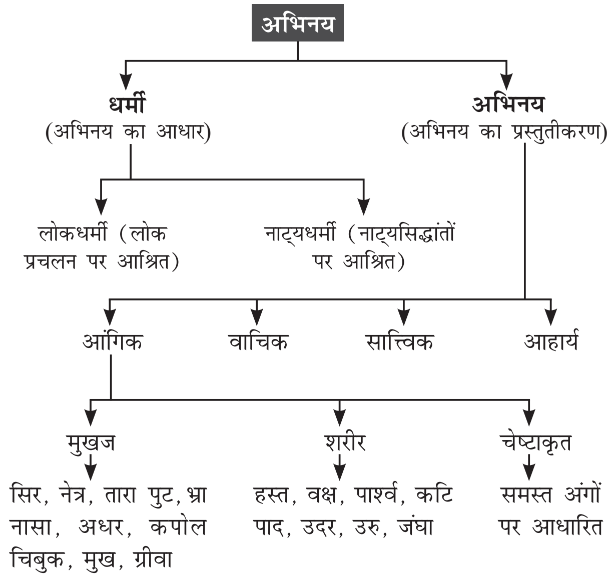

नाटक की वृत्तियों का परिचय

- **'वृत्ति'** शब्द की निष्पत्ति **'वृत्त'** धातु में **'त्तिन'** प्रत्यय के योग से हुई है। नाटक के प्रयोग में वृत्तियों का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भरत ने 'दशरूपकाध्याय' में वृत्ति को काव्य की जननी कहा है। वृत्तियाँ चार प्रकार की होती हैं। **'नाट्यशास्त्र'** में वृत्तियों का संबंध वेदों के साथ बताया गया है–

ऋग्वेदाद् भारतीवृत्ति यजुर्वेदात्तु सात्त्वती।
कैशिकी सामवेदाच्च शेषा चाथर्वणात्तदा।*

(अर्थात् भारती वृत्ति की उत्पत्ति ऋग्वेद से, सात्त्वती की यजुर्वेद से, कैशिकी की सामवेद से तथा आरभटी की अथर्ववेद से हुई है। 'नाट्यशास्त्र, प्रो. ब्रजमोहन चतुर्वेदी, षष्ट अध्याय)

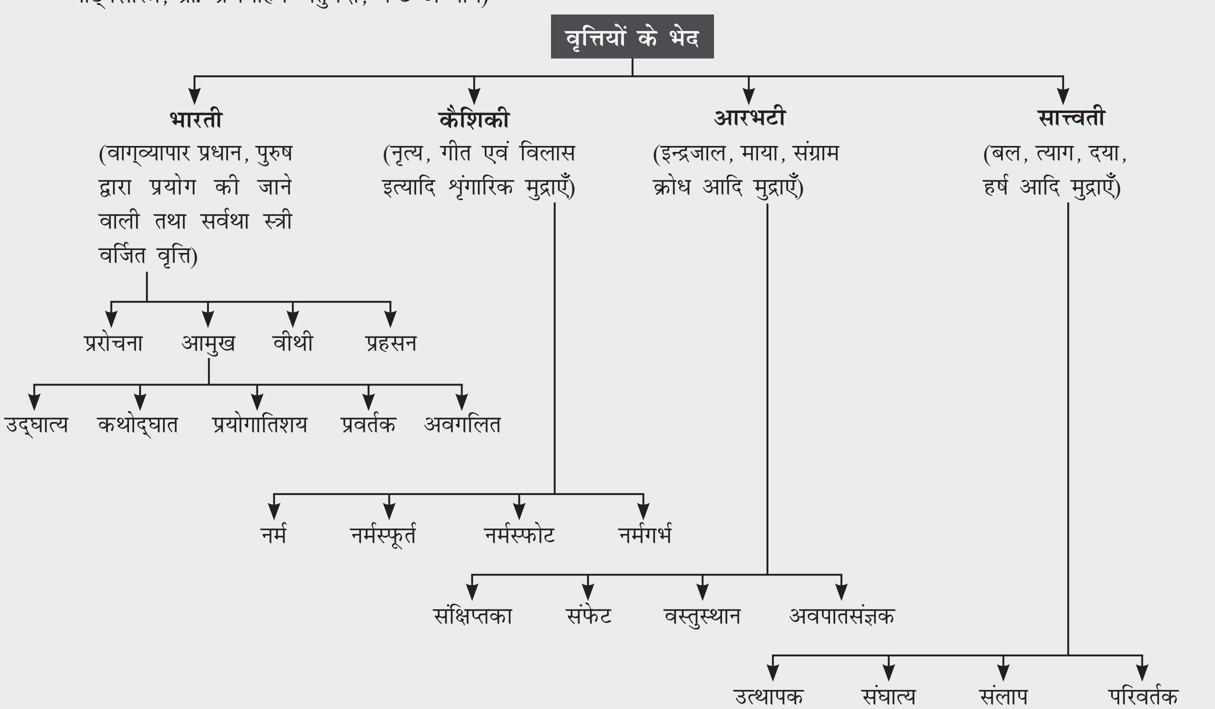

2.11 निबंध

सामान्य परिचय

- **फ्रेंच विद्वान मानतेन** को यूरोपीय निबंध का जनक माना जाता है।
- **लॉर्ड बेकन** को अंग्रेज़ी साहित्य का पहला निबंधकार माना जाता है।
- साहित्यिक दृष्टि से हिंदी में निबंध का उद्भव और विकास आधुनिक युग की देन है।
- राष्ट्रीय जागरण, देश प्रेम, व्यक्ति-स्वातंत्र्य, अंतर्राष्ट्रीयता, वैज्ञानिक मशीनों का प्रयोग (औद्योगिक क्रांति), आवश्यकताओं की वृद्धि, गद्य का प्रचलन, मुद्रणकला का प्रचार, समाचार-पत्रों का प्रकाशन और अंग्रेज़ी साहित्य का संपर्क आदि अनेक कारणों से साहित्य के अनेक रूपों के साथ निबंध रूप का भी आविर्भाव हुआ। निबंध के माध्यम से लेखक अपनी बात पाठकों तक सीधे पहुँचा सकता था।
- हिंदी निबंध की शुरुआत उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से मानी जाती है। हिंदी के प्रारंभिक निबंधों को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने **'गद्य प्रबंध'** कहा।

हिंदी का प्रथम निबंध, निबंधकार और उनके प्रस्तोता			
निबंधकार	**प्रस्तोता**	**वर्ष**	**निबंध**
सदा सुखलाल	विश्वनाथ एम.ए	1840	सुरासुर निर्णय
बालकृष्ण भट्ट	लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	–	–
शिवप्रसाद सितारे सिंह	गणपतिचंद्र गुप्त	1839	राजा भोज का सपना
भारतेंदु हरिशचंद्र	रामचंद्र शुक्ल	–	–

- **अधिकतर विद्वान एकमत होकर बालकृष्ण भट्ट को हिंदी निबंध के जनक के रूप में स्वीकार करते हैं।**
- आचार्य शुक्ल ने हिंदी निबंधों की परंपरा का सूत्रपात भारतेंदु युग से स्वीकार किया, जो सर्वथा उचित भी है।
- निबंध की आरंभिक परंपरा में भारतेंदु युग के लेखकों का विशेष महत्त्व है क्योंकि उन्होंने विषय, शैली और भाषा, तीनों स्तरों पर निबंधों में नए प्रयोग किये किंतु निबंधों को प्रौढ़ रूप द्विवेदी युग में ही प्राप्त हुआ। इस दौर में जहाँ एक ओर भाषा का मानक रूप निर्मित हुआ, वहीं दूसरी ओर चिंतन में प्रौढ़ता और शैली में परिष्कार भी हुआ।
- हिंदी निबंध के विकास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का केंद्रीय महत्त्व रहा है। उन्होंने विचार, शैली और भाषा तीनों स्तरों पर हिंदी निबंध को उच्च स्तरीय स्वरूप प्रदान किया।
- हिंदी निबंध के विकास के केंद्र में आचार्य रामचंद्र शुक्ल को मानते हुए उसे तीन युगों में बाँट सकते हैं–

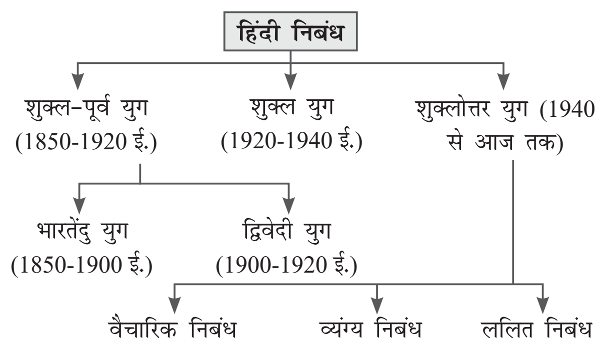

शुक्ल-पूर्व युग

भारतेंदु युग

- हिंदी नाटक की भाँति हिंदी निबंध लेखन की शुरुआत भारतेंदु युग से हुई।
- भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 1868 ई. में 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन आरंभ किया। भारतेंदु युग के अन्य लेखकों ने भी कई पत्र-पत्रिकाएँ शुरु कीं। इनमें प्रतापनारायण मिश्र द्वारा प्रकाशित 'ब्राह्मण', बालकृष्ण भट्ट का 'हिंदी प्रदीप', बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' द्वारा प्रकाशित 'आनंद कादंबिनी' आदि प्रमुख हैं। उस युग में लिखे गए निबंध प्रायः इन्हीं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे।
- भारतेंदु युग के प्रमुख निबंधकारों में भारतेंदु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', लाला श्रीनिवासदास, अंबिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी आदि हैं।

भारतेंदु युगीन प्रमुख निबंधकार एवं उनके निबंध	
निबंधकार	**निबंध**
बालकृष्ण भट्ट (1844-1914 ई.)	नए तरह का जुनून, खटका, महिला स्वातंत्र्य, चली सो चली, देवताओं से हमारी बातचीत, राजा और प्रजा, कृषकों की दुरवस्था, अंग्रेज़ी शिक्षा और प्रकाश, देश सेवा का महत्त्व, चंद्रोदय, संसार महानाटकशाला, प्रेम के बाग का सैलानी, साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है, शब्द की आकर्षण शक्ति, साहित्य का सभ्यता से घनिष्ठ संबंध है, इंगलिश पढ़े तो बाबू होय, आत्मनिर्भरता, कल्पना, मेला-ठेला, रोटी तो किसी भांति कमा खाय मुछन्दर, बाल-विवाह, एक अनोखा स्वप्न, माता का स्नेह, कालचक्र का चक्कर, प्रतिभा, माधुर्य, आशा, आत्मगौरव, रुचि, भिक्षा-वृत्ति, ईश्वर भी क्या ठठोल है, स्त्रियाँ और उनकी शिक्षा, हमारे नये सुशिक्षितों में परिवर्तन।

2.12 आलोचना

सामान्य परिचय

- आलोचना का अर्थ किसी कृति के मूल्यांकन से है। मूल्यांकन की प्रक्रिया अनिवार्यत: दो पक्षों पर आधारित होती है–
  - सैद्धांतिक और व्यावहारिक
- **ऐसे प्रतिमानों का निर्माण जिनके आधार पर साहित्य के स्वरूप तथा उससे जुड़े मूल प्रश्नों के साथ किसी कृति के मूल्यांकन को आधार बनाया जाता है, तो उसे सैद्धांतिक आलोचना कहा जाता है। तथा उन प्रतिमानों के आधार पर रचना की विवेचन पद्धति को व्यावहारिक आलोचना कहा जाता है।**
- अधिकांश समीक्षक कोशिश करते हैं कि वे समीक्षा के इन दोनों क्षेत्रों में अपनी लेखनी चलाएँ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. रामविलास शर्मा और डॉ. नामवर सिंह इसी वर्ग के समीक्षक हैं।

आलोचना/समीक्षा का काल विभाजन

- शुक्ल-पूर्व युग (1850-1920 ई.)
  - भारतेंदु युग (1850-1900 ई.)
  - द्विवेदी युग (1900-1920 ई.)
- शुक्ल युग (1920-1940 ई.)
- शुक्लोत्तर युग (1920-1970 ई.)
  - स्वच्छंदतावादी समीक्षा
  - प्रगतिवादी समीक्षा
  - मनोविश्लेषणवादी समीक्षा
  - नई समीक्षा
- समकालीन समीक्षा (1970 ई. से अब तक)

शुक्ल पूर्व युग

भारतेंदु युग

- भारतेंदु को आधुनिक हिंदी का पहला आलोचक माना जाता है।
- आधुनिक हिंदी आलोचना की शुरुआत भारतेंदु के निबंध 'नाटक' (1883 ई.) से मानी जाती है। यह सैद्धांतिक आलोचना थी। इसमें भारतेंदु ने भारतीय तथा पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतों का विश्लेषण किया है।
- इस काल में आलोचना मुख्यत: पत्रकारिता के माध्यम से हुई। इसमें भारतेन्दु के पत्र **'हरिश्चंद्र मैगज़ीन'**, **'कवि वचन सुधा'**, बालकृष्ण भट्ट का **'हिंदी प्रदीप'**, प्रताप नारायण मिश्र का **'ब्राह्मण'** और चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमघन' का **'आनंद कादंबिनी'** प्रमुख हैं।
- हिंदी की व्यावहारिक समीक्षा की शुरुआत **'हिंदी प्रदीप'** में **'सच्ची समालोचना'** नामक स्तंभ से सन् 1886 ई. में बालकृष्ण भट्ट ने की जिसमें लाला श्रीनिवास दास के नाटक 'संयोगिता स्वयंवर' की समीक्षा हुई। इसके बाद इसमें भट्ट जी ने 'नीलदेवी', 'परीक्षागुरु' आदि रचनाओं की भी व्यावहारिक समीक्षाएँ लिखीं।
- इसी युग में साहित्येतिहास के दो प्रमुख ग्रंथ लिखे गए जिनमें सीमित मात्रा में आलोचनात्मक तत्त्व विद्यमान थे– प्रथम, शिवसिंह सेंगर कृत **'शिवसिंह सरोज'**; द्वितीय, जॉर्ज ग्रियर्सन कृत ***'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ नॉर्दर्न हिंदुस्तान'***।
- इस काल की हिंदी समीक्षा में उपयोगितावादी, नैतिक व राष्ट्रीय दृष्टिकोण प्रमुख रूप से दिखता है, अत: रूपवादी समीक्षाएँ यहाँ नहीं हुईं।
- 'प्रेमघन' ने बाबू गदाधर सिंह के बांग्ला उपन्यास **'बंगविजेता'** के हिंदी अनुवाद की 1885 ई. में तथा **'संयोगिता स्वयंवर'** की 1886 ई. में **'आनन्द कादम्बिनी'** नामक पत्रिका में समालोचना की।
- 'प्रेमघन' के आलोचनात्मक विचार 'आनन्द कादम्बिनी' और **'प्रेमघनसर्वस्व'** में मिल जाते हैं। 'बंगविजेता' ओर 'नील देवी' की परिचयात्मक आलोचना भी प्रेमघन ने लिखी।
- बालकृष्ण भट्ट की आलोचना में तुलनात्मक समीक्षा के संकेत पाए जाते हैं।
- हिंदी समालोचना के सूत्रपात का श्रेय आचार्य शुक्ल ने 'बालकृष्ण भट्ट' और बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' को ही दिया है।
- 'काव्य-भाषा एवं 'साहित्य के प्रयोजन' पर प्रतापनारायण मिश्र के विचार देखे जा सकते हैं। उनकी दृष्टि **'रसवादी'** थी।

द्विवेदी युग

- द्विवेदीयुगीन आलोचना भी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से विकसित हुई। इसमें **'सरस्वती' 'माधुरी'**, **'वीणा'**, **'विशाल भारत'** और **'मर्यादा'** आदि पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

- महावीर प्रसाद द्विवेदी इस युग के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आलोचक हैं। **'समालोचना समुच्चय'** नामक शीर्षक से अपनी 20 समालोचनाओं का संकलन महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1930 ई. में प्रकाशित किया।

2.13 अन्य गद्य विधाएँ

आत्मकथा

- अंग्रेज़ी भाषा के शब्द **ऑटोबायोग्राफी** को हिंदी में 'आत्मकथा' का पर्याय माना गया है। यहाँ **बायोग्राफी** में **'बायोस'** और **'ग्राफिया'** शब्दों का प्रयोग है; जिनका अर्थ क्रमश: **'जीवन'** और **'लिखना'** है।
- जब कोई व्यक्ति साहित्यिक एवं कलात्मक ढंग से अपनी जीवनी स्वयं लिखता है, तो उसे 'आत्मकथा' कहते हैं।
- वियोगी हरि के अनुसार– **"आत्मकथा जीवन की कुछ घटनाओं और अनुभूतियों की एक अभिव्यंजना है।"**
- हरिवंशराय 'बच्चन' के अनुसार– **"जीवन की एक तस्वीर है आत्मकथा"।**
- आत्मकथा में लेखक चूँकि स्वयं की ही कथा कहता है इसलिये उससे तटस्थता की अत्यधिक अपेक्षा रहती है।
- **मैनेजर पाण्डेय** के अनुसार– **"पूरा-पूरा सच बोलना आत्मकथा या जीवनी लेखक की नैतिक ही नहीं सौंदर्यबोध की भी शर्त है।"**
- किसी भी आत्मकथा से उस व्यक्ति विशेष के जीवन, दर्शन व स्थितियों के साथ-साथ तत्कालीन ऐतिहासिक, सामाजिक स्थितियों की भी जानकारी मिलती है।
- बनारसी दास जैन कृत **'अर्धकथानक' (1641 ई. ब्रजभाषा) को हिंदी की प्रथम आत्मकथा** माना जाता है। हालाँकि 1910 में सत्यानंद अग्निहोत्री की आत्मकथा **'मुझमें देव जीवन का विकास'**, खड़ी बोली हिंदी भाषा में रचित पहली आत्मकथा है।
- **'जीवनसार'** नाम से प्रेमचंद ने अपनी संक्षिप्त आत्मकथा **'हंस'** के आत्मकथा विशेषांक **(जनवरी 1931)** में प्रकाशित की थी। इसी अंक में 'आत्मकथ्य' नाम से जयशंकर प्रसाद की कविता प्रकाशित हुई थी।
- **श्यामसुंदर दास** कृत **'मेरी आत्मकहानी'** (1941 ई.) को प्राय: हिंदी की पहली प्रसिद्ध आत्मकथा माना जाता है।
- **निराला की आत्मकथा** शीर्षक से 1970 ई. में प्रकाशित होने वाली कृति के रचनाकार **सूर्य प्रसाद दीक्षित** हैं।
- **'गर्दिश के दिन'** नामक शीर्षक से हिंदी एवं बाकी भारतीय भाषाओं के 12 लेखकों की आत्मकथाओं का संपादन 1980 ई. में कमलेश्वर ने किया।
- **राजकमल चौधरी** ने अपनी आत्मकथा **'भैरवी तंत्र'** नाम से लिखी है।
- **1984 ई. में विष्णु चंद्र शर्मा ने 'मुक्तिबोध' की आत्मकथा लिखी।**
- **रामदरश मिश्र** की आत्मकथा के चारों भाग (1. जहाँ मैं खड़ा हूँ, 2. रोशनी की पगडंडियाँ, 3. टूटते बनते दिन और 4. उत्तर पथ) **1991 ई.** में **'समय है सहचर'** नाम से एक संकलन में प्रकाशित हुए। इसी प्रकार **रामविलास शर्मा** की आत्मकथा के तीनों **भाग** (1. मुँडेर पर सूरज, 2. देर सबेर और 3. आपस की बातें) **'अपनी धरती अपने लोग'** शीर्षक से **1996 ई.** में प्रकाशित हुए।
- हिंदी की **प्रथम महिला आत्मकथा जानकी देवी बजाज** ने लिखी। इनकी आत्मकथा **1956 ई.** में **'मेरी जीवन यात्रा'** शीर्षक से प्रकाशित हुई, जिसमें उनके बचपन से लेकर उनके पति की मृत्यु तक की घटनाएँ संकलित हैं। साथ ही, इसमें स्वाधीनता आंदोलन की कई महत्त्वपूर्ण घटनाओं का भी ज़िक्र है।
- **राजेन्द्र यादव** ने अपनी आत्मकथा **'मुड़-मुड़ के देखता हूँ' (2002 ई.)** को **'आत्मकथ्यांश'** कहा है।
- **'देहरी भई विदेस'** शीर्षक से **2005** में **राजेन्द्र यादव** ने **20 लेखिकाओं** के आत्मकथ्य का संपादन किया, जिसमें बलवंत कौर और अर्चना वर्मा का भी सहयोग है।
- **1999** ई. में प्रकाशित **मोहनदास नैमिषराय** की आत्मकथा **'अपने-अपने पिंजरे'** हिंदी की पहली दलित आत्मकथा है।

सन् 1950 से पहले की प्रमुख आत्मकथाएँ

लेखक	आत्मकथा (वर्ष)
सत्यानन्द अग्निहोत्री	मुझमें देव-जीवन का विकास (1910)
स्वामी दयानन्द	जीवन चरित्र (1917)
रामविलास शुक्ल	मैं क्रांतिकारी कैसे बना (1933)
डॉ. श्यामसुंदर दास	मेरी आत्म कहानी (1941)
बाबू गुलाबराय	मेरी असफलताएँ (1941)
राहुल सांकृत्यायन	मेरी जीवन यात्रा (1946)
हरिभाऊ उपाध्याय	साधना के पथ पर (1946)
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	आत्मकथा (1947)
वियोगी हरि	मेरा जीवन प्रवाह (1948)

सन् 1950 के बाद हिंदी की प्रमुख आत्मकथाएँ

लेखक	आत्मकथा (वर्ष)
यशपाल	**भाग-1:** सिंहावलोकन (1951) **भाग-2:** सिंहावलोकन (1952) **भाग-3:** सिंहावलोकन (1955)
सत्यदेव परिव्राजक	स्वतंत्रता की खोज में (1951)
शान्तिप्रिय द्विवेदी	परिव्राजक की प्रजा (1952)
देवेन्द्र सत्यार्थी	**भाग-1:** चाँद सूरज के वीरन (1952) **भाग-2:** नील यक्षिणी (1985)

2.14 प्रवासी साहित्य

- आज के समय में प्रवासी शब्द उन लोगों के लिये प्रयुक्त होता है, जो एक बेहतर जिंदगी की तलाश में अपना देश छोड़कर दूसरे देशों में बस गए हैं। इन्हीं के द्वारा रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है। इसकी परंपरा बहुत पुरानी नहीं है, फिर भी यह अपनी रचनाधर्मिता से साहित्य में गहरी जड़ें जमा चुका है।
- अन्य देशों में बसे भारतीयों के महती प्रयासों से ही आज प्रवासी साहित्य समृद्ध और महत्त्वपूर्ण बन पाया है। आज का प्रवासी साहित्य पहले के प्रवासी साहित्य से काफी भिन्न है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित होती गई, वैसे-वैसे यह साहित्य भी विविध और जनप्रिय होता गया। प्रवासी भारतीय भारत से दूर होकर भी इस माध्यम से बहुत निकट हैं।
- जिन्होंने 'हिंदी' को केंद्र में रखकर या माध्यम बनाकर हिंदी भाषा में साहित्य सृजन किया, वे प्रवासी हिंदी साहित्यकार हैं। भारत उन शीर्ष देशों में से है जहाँ से बड़ी संख्या में लोग विदेशों में जाकर बस जाते हैं। यही कारण है कि हिंदी का 'प्रवासी साहित्य' बहुत समृद्ध है। विदेशों में रहकर लेखन कार्य करना प्रवासियों को अलग विशिष्टता प्रदान करता है।
- प्रवासी हिंदी साहित्यकार ब्रिटेन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, गुयाना, मॉरिशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद (वेस्ट इंडीज़) आदि स्थानों को अपनी कर्मभूमि स्वीकार करते हुए साहित्य सृजन करते आए हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत महाकाव्य, खंडकाव्य, कविताएँ, उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, एकांकी, अनुवाद, यात्रा संस्मरण, आत्मकथा, रेखाचित्र आदि का सृजन हुआ। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में 'भारतीयता' को सुरक्षित रखा है।
- इस साहित्य के माध्यम से न केवल विदेशों की संवेदनाओं का पता चलता है, बल्कि विदेश में भारत के प्रति बन और बदल रही अवधारणाओं तथा चिंताओं का भी रचनात्मक आभास मिलता है।

प्रवासी साहित्य के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के मत निम्न हैं-

- **मृदुला गर्ग** के अनुसार- "प्रवासी साहित्य को अलग करके देखने की बजाय उसे हिंदी की मुख्यधारा में स्थान दिया जाए।"
- **डॉ. कमल किशोर गोयनका** के अनुसार- "हिंदी के प्रवासी साहित्य का रूप-रंग, उसकी चेतना और संवेदना भारत के हिंदी पाठकों के लिये एक नई वस्तु है, एक नए भावबोध का साहित्य है, एक नई व्याकुलता और बेचैनी का साहित्य है, जो हिंदी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नए साहित्य संसार से समृद्ध करता है। इस प्रवासी साहित्य की बुनियाद भारत-प्रेम तथा स्वदेश-परदेस के द्वंद्व पर टिकी है। बार-बार हिंदू जीवन मूल्यों, सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा उनके प्रति श्रेष्ठता के भाव की अभिव्यक्ति होती है।"

प्रमुख प्रवासी साहित्यकार

- **अभिमन्यु अनत** (जन्म- 9 अगस्त, 1937; मृत्यु 4 जून, 2018) मॉरिशस के हिंदी कथा-साहित्य के सम्राट हैं। उनका जन्म मॉरिशस के उत्तर प्रांत में स्थित त्रियोले गाँव में हुआ।
- अभिमन्यु का मूल भारत की ही मिट्टी है। इनके पूर्वज अन्य भारतीयों के साथ अंग्रेज़ों द्वारा वहाँ गन्ने की खेती में श्रम करने के लिये लाए गए थे। मज़दूरों के रूप में गए भारतीय अंततः वहीं पर बस गए। मॉरिशस काल-क्रम से अंग्रेज़ों के शासन से मुक्त हुआ। अभिमन्यु की भारतीय पृष्ठभूमि ने उन्हें हिंदी की सेवा के लिये उत्साहित किया और उन्होंने अपने पूर्वजों की मातृभूमि का ऋण अच्छी तरह से चुकाया। वे मॉरिशस के कथा-शिल्पी थे, साथ ही उन्होंने हिंदी कविता को एक नया आयाम दिया। इन्हें 'मॉरिशस का उपन्यास सम्राट' कहा जाता है। **'लाल पसीना'** इनका कालजयी महाकाव्यात्मक उपन्यास है।
- **तेजेंद्र शर्मा** (जन्म 21 अक्तूबर, 1952) ब्रिटेन में बसे भारतीय मूल के हिंदी कवि, कहानीकार एवं नाटककार हैं। इनके द्वारा लिखा गया धारावाहिक 'शांति' दूरदर्शन पर वर्ष 1994 में अंतर्राष्ट्रीय लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। अन्नू कपूर निर्देशित फिल्म 'अमय' में नाना पाटेकर के साथ उन्होंने प्रमुख भूमिका भी निभाई थी।
- **हरिशंकर आदेश (7 अगस्त, 1936)** की तीन सौ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। महाकाव्य, खंडकाव्य, नाटक, एकांकी, जीवनीयाँ, भगवतगीता का हिंदी और अंग्रेज़ी पद्यानुवाद आदि उनके लेखन में शामिल हैं।
- **अचला शर्मा** अमेरिका में कार्यरत रही थीं। इसके बाद लंदन में बी.बी.सी. की हिंदी सेवा की अध्यक्ष रहीं। इनके लेखन में भारतीय समाज का बहुविध चित्रण है।
- **सुधा ओम ढींगरा** ने 'कौन-सी जमीन अपनी' कहानी संग्रह से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इनका लेखन एक सांस्कृतिक सेतु की तरह है। उनकी कहानियों में अमेरिका में मस्त-व्यस्त भारतीय पीढ़ी के बीच त्रस्त पीढ़ी के भी चित्र हैं। इसके अतिरिक्त 'सूरज क्यों निकलता है' के जेम्स और पीटर को देखकर पाठक को प्रेमचंद के घीसू और माधव याद आने लगते हैं। इसी प्रकार 'टारनेडो' कहानी भारत की याद की कहानी है, वहीं 'क्षितिज से परे' कहानी में एक प्रताड़ित स्त्री का विद्रोह है।

2.15 हिंदी पत्रकारिता

- हिंदी पत्रकारिता का इतिहास 19वीं सदी के तीसरे दशक से प्रारंभ होता है।
- पत्रकारिता के विकास का अध्ययन हेतु निम्न प्रकार से विभाजन किया जा सकता है-
  - ◆ भारतेन्दु-पूर्व युगीन पत्रकारिता (1826-1867 ई.)
  - ◆ भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता (1868-1900 ई.)
  - ◆ द्विवेदी युगीन पत्रकारिता (1900-1918 ई.)
  - ◆ छायावाद युगीन पत्रकारिता (1918-1936 ई.)
  - ◆ छायावादोत्तर पत्रकारिता (1936-1960 ई.)
  - ◆ समकालीन पत्रकारिता (1960 ई. से)

भारतेन्दु-पूर्व युगीन पत्रकारिता (1826-1867 ई.)

भारतेन्दु-पूर्व युगीन प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ

पत्रिका/पत्र	वर्ष (ई.)	संपादक	प्रकार	स्थान
उदन्त मार्तण्ड	1826	जुगल किशोर	साप्ताहिक	कलकत्ता
बंगदूत	1829	राजा राममोहन राय	साप्ताहिक	कलकत्ता
प्रजामित्र	1834	–	साप्ताहिक	कलकत्ता
बनारस अखबार	1845	राजा शिवप्रसाद सिंह	साप्ताहिक	बनारस
मार्तण्ड	1846	मो. नासिरुदीन	साप्ताहिक	कलकत्ता
मालवा अखबार	1849	प्रेम नारायण	साप्ताहिक	मालवा
सुधाकर	1850	बाबू तारामोहन मित्र	साप्ताहिक	काशी
बुद्धि प्रकाश	1852	मुंशी सदासुख लाल	साप्ताहिक	आगरा
समाचार सुधावर्षण	1854	श्यामसुंदर सेन	दैनिक	कलकत्ता
जगदीपक भास्कर	1846	मो. नासिरुदीन	–	कलकत्ता
प्रजा हितैषी	1855	राजा लक्ष्मण सिंह	–	आगरा
लोकमित्र	1863	ईसाई मिशनरी	–	आगरा
तत्त्वबोधिनी	1865	गुलाब शंकर	मासिक	बरेली
अखबारे चुनार (उर्दू पत्र)	1866	बालमुकुन्द गुप्त	–	चुनार
ज्ञान प्रदायिनी	1867	नवीनचन्द्र राय	मासिक	लाहौर
वृत्तान्त विलास	1867	–	मासिक	जम्मू

उदन्त मार्तण्ड (सं. जुगल किशोर)

- **हिंदी का प्रथम समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' को माना जाता है।**
- इसका प्रकाशन 30 मई, 1826 ई. से साप्ताहिक पत्र के रूप में कलकत्ता से प्रारंभ हुआ।
- इसके संपादक पंडित जुगल किशोर कानपुर के निवासी थे।
- उदन्त मार्तंड में खड़ी बोली का उल्लेख **'मध्यदेशीय भाषा'** के नाम से हुआ है।
- 30 मई को उदन्त मार्तंड के प्रकाशन दिन को आधार मानकर **'राष्ट्रीय हिंदी पत्रकारिता दिवस'** मनाया जाता है।

बंगदूत (सं. राजा राममोहन राय)

- **1829 ई.** में राजा राममोहन राय ने **'बंगदूत'** पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया।
- इसका प्रकाशन हिंदी के अलावा अंग्रेज़ी, फारसी तथा बांग्ला भाषा में भी होता था।

बनारस अखबार (सं. राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द')

- हिंदी भाषी क्षेत्र से हिंदी भाषा में प्रकाशित होने वाला प्रथम अखबार **'बनारस अखबार'** है।
- इसका प्रकाशन 1845 ई. में काशी से प्रारंभ हुआ। इसके संपादक राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' थे।
- इस समाचार पत्र की भाषा 'हिन्दू-उर्दू' थी।

समाचार सुधावर्षण (सं. श्यामसुंदर सेन)

- सन् 1854 ई. में कलकत्ता से 'समाचार सुधावर्षण' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ।
- यह हिंदी का **प्रथम 'दैनिक पत्र'** है।
- इसके संपादक श्यामसुंदर सेन थे।

अन्य पत्रिकाएँ

- 1834 ई. में कलकत्ता से प्रजापति नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होने का उल्लेख मिलता है।
- पं. अंबिकाप्रसाद वाजपेयी के अनुसार 1846 ई. और 1847 ई. में 'मार्तण्ड', 'ज्ञानदीपक' और 'जगद्दीपक' नामक पत्र प्रकाशित हुए।
- 'बनारस अखबार' के विरोध में **तारामोहन मित्र** ने **'सुधाकर' पत्रिका** का प्रकाशन किया था।

2.16 विविध

'हिंदी में सर्वप्रथम'

- हिंदी का प्रथम कवि -*सरहपा (9वीं शताब्दी)*
- खड़ी बोली हिंदी के प्रथम कवि -*अमीर खुसरो*
- हिंदी के सर्वप्रथम कोशकार -*अमीर खुसरो (खालिकबारी)*
- अपभ्रंश का प्रथम प्रबंधकाव्य -*भविस्सयत्तकहा (धनपाल)*
- हिंदी का प्रथम महाकाव्य -*पृथ्वीराजरासो (चंदबरदाई)*
- हिंदी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य -*प्रियप्रवास (हरिऔध)*
- हिंदी खड़ी बोली गद्य की प्रथम रचना -*चंद छंदबरनन की महिमा (गंग कवि)*
- हिंदी खड़ी बोली का प्रथम गद्य ग्रंथ -*भाषायोगवाशिष्ठ (रामप्रसाद निरंजनी)*
- शुद्ध एवं परिमार्जित बोली के प्रथम लेखक -*रामप्रसाद निरंजनी*
- हिंदी काव्य में सर्वप्रथम बारहमासा वर्णन -*बीसलदेवरासो (नरपति नाल्ह)*
- हिंदी काव्य में सर्वप्रथम नखशिख वर्णन -*राउलवेल (रोड)*
- हिंदी का प्रथम चम्पू काव्य -*राउलवेल (रोड)*
- हिंदी में सर्वप्रथम दोहा छंद का प्रयोग -*जोइन्दु (छठी शती)*
- हिंदी में सर्वप्रथम दोहा-चौपाई पद्धति -*सरहपा*
- हिंदी के प्रथम गीतकार -*विद्यापति*
- हिंदी की प्रथम कवयित्री -*मीराबाई*
- हिंदी के प्रथम दलित कवि -*संत रैदास*
- आधुनिक हिंदी के प्रथम दलित कवि -*हीरा डोम (अछूत की शिकायत)*
- हिंदी खड़ी बोली का प्रथम काव्य ग्रंथ -*एकांतवासी योगी (श्रीधर पाठक)*
- मुक्त छंद के प्रथम प्रयोक्ता -*निराला (जुही की कली)*
- हिंदी में रीति काव्य का प्रथम ग्रंथ -*हिततरंगिनी (कृपाराम)*
- हिंदी का प्रथम मौलिक नाटक -*नहुष (गोपालचंद)*
- हिंदी का प्रथम अभिनीत नाटक -*जानकी मंगल (शीतला प्रसाद त्रिपाठी)*
- हिंदी की प्रथम एकांकी -*एक घूँट (जयशंकर प्रसाद)*
- छायावाद का प्रथम काव्य संग्रह -*झरना (जयशंकर प्रसाद)*
- हिंदी की प्रथम अतुकांत रचना -*प्रेमपथिक (जयशंकर प्रसाद)*
- हिंदी का प्रथम गद्यकाव्य -*साधना (रायकृष्णदास)*
- आचार्य शुक्ल के अनुसार हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी -*इंदुमती (किशोरीलाल गोस्वामी)*
- हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी -*एक टोकरी भर मिट्टी (माधवराव सप्रे)*
- हिंदी की प्रथम वैज्ञानिक कहानी -*चंद्रलोक की यात्रा (केशव प्रसाद)*
- हिंदी की प्रथम दलित कहानी -*वचनबद्ध (सतीश)* *['मुक्ति स्मारिका' 1975 ई. में प्रकाशित]*
- हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास -*'परीक्षागुरु' (श्रीनिवास दास)*
- हिंदी का प्रथम दलित उपन्यास -*छप्पर (जयप्रकाश कर्दम)(1994)*
- हिंदी की प्रथम महिला उपन्यासकार -*साध्वी सतीप्राण अबला (मल्लिका देवी) सुहासिनी (1890)*
- हिंदी की प्रथम आत्मकथा -*'अर्द्धकथानक' (बनारसीदास)*
- हिंदी का प्रथम मानक जीवनी ग्रंथ -*कलम का सिपाही (अमृतराय)*
- हिंदी का प्रथम यात्रा संस्मरण -*'लंदन यात्रा' (श्रीमती हरदेवी, 1883 ई.)*
- हिंदी का प्रथम रिपोर्ताज -*'लक्ष्मीपुरा' (शिवदान सिंह चौहान)*
- हिंदी का प्रथम संस्मरण -*पद्मपराग (पद्मसिंह शर्मा)*
- हिंदी की प्रथम महिला-आत्मकथा -*मेरी जीवन यात्रा (जानकी देवी बजाज)*
- हिंदी की प्रथम दलित महिला-आत्मकथा -*'दोहरा अभिशाप' (कौशल्या वैसंत्री)*
- हिंदी आलोचना की प्रथम पुस्तक -*समालोचना समुच्चय' (महावीर प्रसाद द्विवेदी)*
- हिंदी में प्रथम तुलनात्मक आलोचना -*'बिहारी और सादी' (पद्मसिंह शर्मा)*
- हिंदी नाटक का प्रथम सैद्धांतिक ग्रंथ -*'रूपकरहस्य' (श्यामसुंदर दास)*
- हिंदी के प्रथम व्याकरणकार -*जे.जे. केटलर (हॉलैंड) [हिंदुस्तानी ग्रामर डच भाषा में]*
- हिंदी भाषा में हिंदी का प्रथम व्याकरण -*'हिंदी भाषा का व्याकरण' (1827 ई.) [लेखक- पादरी एम.टी. आदम]*
- हिंदी का प्रथम भारतीय व्याकरण -*पं. श्रीलाल (भाषा चंद्रोदय, 1855 ई.)*
- राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष -*बालासाहेब गंगाधर खेर*
- हिंदी साहित्य परिषद के प्रथम अध्यक्ष -*पुरुषोत्तम दास टंडन*
- राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रथम अध्यक्ष -*इब्राहिम अलकाज़ी*
- हिंदी में प्रथम डी-लिट. उपाधि प्राप्तकर्त्ता -*डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल*
- नागरी प्रचारिणी सभा के प्रथम सभापति -*बाबू राधाकृष्णदास*
- नागरी लिपि सुधार समिति के प्रथम सभापति -*महात्मा गांधी (1935 ई.)*
- देवनागरी लिपि सुधार समिति के प्रथम अध्यक्ष -*आचार्य नरेन्द्र देव (1947 ई.)*
- हिंदुस्तानी के स्थान पर 'हिंदी' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोक्ता -*गिलक्राइस्ट*
- 'खड़ी बोली' शब्द का प्रथम प्रयोक्ता -*लल्लूलाल*

3 साहित्यशास्त्र

3.1 भारतीय काव्यशास्त्र

सामान्य परिचय

- भारतीय काव्यशास्त्र से अभिप्राय मूलतः संस्कृत काव्यशास्त्र से है।
- संस्कृत में साहित्य के लिये 'काव्य' शब्द का प्रयोग किया जाता था।

काव्य
- दृश्यकाव्य (नाटक)
- श्रव्यकाव्य
  - गद्य (Prose) (कहानी, उपन्यास आदि)
  - पद्य (Poetry) (कविता)

- काव्य से संबंधित विविध पक्षों का अध्ययन करने वाले शास्त्र को **'काव्यशास्त्र'** कहा जाता है। इसमें काव्य के लक्षण, हेतु, प्रयोजन, गुण-दोषादि का विवेचन किया गया है।
- आधुनिक काल में 'काव्य' के स्थान पर 'साहित्य' शब्द प्रचलित हो गया। ऐसे में 'काव्यशास्त्र' को **'साहित्यशास्त्र'** कहा जाने लगा।

संस्कृत के आचार्यों की समृद्ध परंपरा

आचार्य	समय	ग्रंथ
भरतमुनि	दूसरी शती	नाट्यशास्त्र
भामह	छठी शती	काव्यालंकार
दण्डी	7वीं शती	काव्यादर्श
उद्भट	8वीं शती	काव्यालंकारसारसंग्रह
वामन	8वीं शती	काव्यालंकार सूत्र
रुद्रट	9वीं शती	काव्यालंकार
आनंदवर्धन	9वीं शती	ध्वन्यालोक
राजशेखर	10वीं शती	काव्य मीमांसा
भट्ट तौत	10वीं शती	काव्य-कौतुभ
अभिनवगुप्त	10वीं शती	तंत्रालोक
कुंतक	10वीं शती	वक्रोक्तिजीवितम्
धनंजय	10वीं शती	दशरूपक
महिमभट्ट	11वीं शती	व्यक्ति विवेक
भोजराज	11वीं शती	सरस्वती कंठाभरण, शृंगार प्रकाश
क्षेमेंद्र	11वीं शती	कविकण्ठाभरण
मम्मट	11वीं शती	काव्य प्रकाश
रुय्यक	12वीं शती	अलंकार सर्वस्व
शोभाकार मित्र	12वीं शती	अलंकार रत्नाकार
वाग्भट्ट प्रथम	12वीं शती	वाग्भट्टालंकार
हेमचंद्र	12वीं शती	काव्यानुशासन
रामचंद्र-गुणचंद्र	12वीं शती	नाट्यदर्पण
शारदातनय	13वीं शती	भाव प्रकाशन
जयदेव	13वीं शती	चंद्रालोक
विश्वनाथ	14वीं शती	साहित्यदर्पण
विद्याधर	14वीं शती	एकावली
विद्यानाथ	14वीं शती	नाट्यदर्पण
भानुदत्त	14वीं शती	रसमंजरी, रसतरंगिणी
रूपगोस्वामी	16वीं शती	उज्ज्वल नीलमणि
शेखर केशव मिश्र	16वीं शती	प्रतापरुद्र यशोभूषण
अप्पय दीक्षित	16वीं शती	वृत्ति-वार्तिक
पंडितराज जगन्नाथ	17वीं शती	रसगंगाधर
विश्वेश्वर पंडित	18वीं शती	अलंकार कौस्तुभ

- अभिनवगुप्त ने चार ग्रंथों की रचना की है।
  - इनमें से तीन टीका के रूप में रचित ग्रंथ हैं-

मूल ग्रंथ	**टीका**
नाट्यशास्त्र (भरतमुनि)	अभिनव भारती
ध्वन्यालोक (आनंदवर्धन)	ध्वन्यालोक लोचन
काव्य कौतुभ (भट्ट तौत)	काव्य कौतुभ-विवरण

  - एक अन्य ग्रंथ रत्न एवं तंत्र-शास्त्र का उत्कृष्ट दार्शनिक ग्रंथ 'तंत्रालोक' है।
- क्षेमेंद्र के ग्रंथ निम्नलिखित हैं-
  - कविकण्ठाभरण
  - सुवृत्त तिलक
  - औचित्य विचार चर्चा
  - दशावतार चरित
- अप्पयदीक्षित के ग्रंथ निम्नलिखित हैं-
  - वृत्ति-वार्तिक
  - चित्रमीमांसा
  - कुवलयानन्द

प्रमुख काव्यशास्त्रीय ग्रंथ एवं उनसे संबद्ध जानकारी

ग्रंथ	संबंधित उल्लेख्य जानकारी
'नाट्यशास्त्र'	• भरतमुनि ने स्वयं **'पंचमवेद'** कहा था। इसमें **36 अध्याय** तथा **लगभग 5000 श्लोक** हैं। • काव्य का विवेचन वाचिक अभिनय के प्रसंग में किया गया है।
'काव्यालंकार'	• 6 परिच्छेदों में व्यक्त ग्रंथ। रचयिता भामह हैं।
'काव्यादर्श'	• 4 परिच्छेद और लगभग 650 श्लोक।
'काव्यालंकार सूत्र'	• इसकी रचना सूत्रों में की गई है और सूत्रों पर वृत्ति भी लिखी है। 5 परिच्छेद और 319 सूत्र हैं।

'काव्यालंकार'	● 16 अध्याय और 734 श्लोक। रचयिता रुद्रट हैं।
'ध्वन्यालोक'	● 4 उद्योग (अध्याय)। कारिका में रचना।
'वक्रोक्तिजीवितम्'	● 4 उन्मेष (अध्याय)। कारिका और वृत्ति में रचित।
'काव्यप्रकाश'	● 10 उल्लास (अध्याय)। इसे ध्वनि-विरोधी ग्रंथ माना जाता है।
'चंद्रालोक'	● 10 मयूख (अध्याय) और 35 अनुष्टप श्लोक। अलंकार ग्रंथ।
'साहित्य दर्पण'	● 10 परिच्छेद (अध्याय)।
'एकावली'	● 'काव्यप्रकाश' की शैली पर रचित ग्रंथ।

- 'अभिनव भारती', 'दशरूपक', 'नाट्यदर्पण' और 'भाव प्रकाशन'– ये चारों ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' से संबद्ध हैं।

काव्य लक्षण

- काव्य की परिभाषा ही काव्य लक्षण है।
- संस्कृत के साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र और हिंदी में भी काव्य-लक्षण के उल्लेख्य प्रयास हुए हैं।

संस्कृत के काव्य-लक्षण

काव्य-लक्षण	आचार्य
शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् गद्यं पद्यं च तद्द्विधा	भामह
शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिना पदावली	दण्डी
काव्य शब्दोऽयंगुणालंकार संस्कृतयोः शब्दार्थयोः वर्तते	वामन
ननु शब्दार्थौ काव्यम्	रुद्रट
शब्दार्थ शरीरं तावत्काव्यम्	आनंदवर्धन
शब्दार्थौ सहितौ वक्र कवि व्यापार शालिनी बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणी	कुंतक
निर्दोष गुणवत्काव्यमलंकारैरलंकृतम् रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्ति प्रीतिंच विन्दति	भोजराज
तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि	मम्मट
काव्यंविशिष्टशब्दार्थ साहित्यसदलंकृति	क्षेमेंद्र
अदोषौ सगुणौ सालंकारौ च शब्दार्थौ काव्यम्	हेमचंद्र
निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुण भूषणा सालंकार रसानेक वृत्तिर्वाक्काव्य नामवाक्	जयदेव
वाक्यं रसात्मकं काव्यम्	विश्वनाथ
शब्दार्थौ वपुरस्य शब्दार्थवपुस्ताक्त् काव्यम्	विद्याधर
रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्	जगन्नाथ

हिंदी के विद्वानों द्वारा दिये गए काव्य-लक्षण

- "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है।" *–बालकृष्ण भट्ट*
- "ज्ञान-राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है।" *–महावीरप्रसाद द्विवेदी*
- "अंतःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है।" *–महावीरप्रसाद द्विवेदी*
- "कविता प्रभावशाली रचना है, जो पाठक या श्रोता के मन पर आनंदमयी प्रभाव डालती है।" *–महावीरप्रसाद द्विवेदी*
- "मनोभाव शब्दों का रूप धारण करते हैं। वही कविता है, चाहे वह पद्यात्मक हो या गद्यात्मक।" *–महावीरप्रसाद द्विवेदी*
- "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की मुक्ति की साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञानयोग के समकक्ष मानते है।" *–रामचंद्र शुक्ल*
- "कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-संबंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है।" *–रामचंद्र शुक्ल*
- "सत्त्वोद्रेक या हृदय की मुक्तावस्था के लिये किया हुआ शब्द विधान काव्य है।" *–रामचंद्र शुक्ल*
- "साहित्य वह है जिसे चरस खींचता हुआ किसान भी समझ सके और खूब पढ़ा-लिखा भी समझ सके।" *–महात्मा गांधी*
- "जिस साहित्य में हमारी रुचि न जगे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें गति और शांति पैदा न हो, हमारा सौंदर्य-प्रेम न जागृत हो, न सच्ची दृढ़ता उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिये बेकार है। वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।" *–प्रेमचंद*
- **"साहित्य जीवन की आलोचना है।"** *–प्रेमचंद*
- "काव्य संसार के प्रति कवि की भावप्रधान, किंतु वैयक्तिक संबंधों से मुक्त मानसिक प्रतिक्रियाओं, कल्पना के साँचे में ढली हुई, श्रेय की प्रेयरूपा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।" *–डॉ. गुलाबराय*
- **"काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है** जिसका संबंध विश्लेषण या विज्ञान से नहीं है।" *–जयशंकर प्रसाद*
- **"कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।"** *–सुमित्रानंदन पंत*
- **"कविता कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण है** और वह चित्रण इतना ठीक है कि उसके जैसी ही भावनाएँ दूसरे के हृदय में आविर्भूत हो जाती हैं।" *–महादेवी वर्मा*
- "काँटा चुभाकर उसकी पीड़ा की अनुभूति तो संसार कराता है पर कवि बिना काँटा चुभाए उसकी पीड़ा की अनुभूति करा देता है। *–महादेवी वर्मा*
- "काव्य तो प्रकृत मानव अनुभूतियों का नैसर्गिक कल्पना के सहारे ऐसा सौंदर्यमय चित्रण है, जो मनुष्य मात्र में स्वभावतः अपने अनुरूप भावोच्छवास और सौंदर्य-संवेदन उत्पन्न करता है। इसी सौंदर्य-संवेदन को भारतीय पारिभाषिक शब्दावली में 'रस' कहते हैं।" –नंददुलारे वाजपेयी

3.2 पाश्चात्य काव्यशास्त्र

सामान्य परिचय

- पाश्चात्य काव्यशास्त्र का आरंभिक केंद्र ग्रीस या यूनान रहा और उसके विकास के संकेत 5वीं शती ईसा पूर्व के पहले से हमें दिखाई पड़ने लगते हैं।
- **हेसिओड, सोलन, पिंडार** आदि की रचनाओं में काव्य संबंधी मान्यताओं का उल्लेख मिलने लगता है किंतु व्यवस्थित रूप से सर्वप्रथम काव्यशास्त्रीय चिंतन का श्रेय 'प्लेटो' को प्राप्त है।
- प्लेटो से पहले मुख्य रूप से तीन सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है– **प्रेरणा का सिद्धांत, अनुकरण का सिद्धांत** और **विरेचन का सिद्धांत**।
- प्लेटो से पहले पश्चिम में यह मान्यता थी कि काव्य रचना की प्रेरणा दैवी होती है तथा यह प्रेरणा उसी को प्राप्त होगी जिसकी आत्मा पवित्र तथा निर्दोष है अर्थात् कवि की कला निपुणता से लेकर उसके शब्द चयन की क्षमता दैवी शक्ति से संचालित होती है।
- पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत की प्रमुख दृष्टियाँ–
  - ◆ आत्मवादी (सब्जेक्टिव)
  - ◆ वस्तुवादी (ऑब्जेक्टिव)
  - ◆ प्रत्ययवादी (आइडियलिस्ट)
  - ◆ अनुभववादी (एम्पिरिकल)

पाश्चात्य काव्यशास्त्र के चिंतक और उनकी रचनाएँ

रचनाकार	समय (ई. में)	रचनाएँ (ई. में)
प्लेटो	427-347 ई.पू.	● 'रिपब्लिक' ● 'इयोन' ● 'सिम्पोजियम' ● 'फीडो' ● 'फीड्रस' ● 'पारमेनीइड्स' ● 'सोफिस्ट' ● 'एपोलॉजी' ● 'स्टेट्समैन' ● 'फिलेबुस' ● 'टाइमियस' ● 'क्रीटो' ● 'क्रिटियस' ● 'लॉज' ● 'गोर्गिआस' ● 'क्लाइसिस'
अरस्तू	384-322 ई.पू.	● 'पेरिपोइएतिकेस' (ऑन पोएटिक्स) ● 'रिटोरिक' ● 'पॉलिटिक्स'
होरेस	65-8 ई.पू.	● 'आर्स पोएतिका'
लोंजाइनस	1-3 ई. सदी	● 'पेरिइप्सुस/ऑन दि सबलाइम'
दांते	1265-1321	● 'दि वल्गरी एलोक्वेंशिया'
सर फिलिप सिडनी	1554-1586	● 'एन एपोलॉजी फॉर पोएट्री'
जॉन ड्राइडन	1631-1700	● 'दि इंडियन एम्परर' (1667) ● 'एनस मिराबिली' (1667) ● एसे ऑफ ड्रमैटिक पोइज़ी (1668)
जोसेफ एडीसन	1672-1719	● 'द स्पेक्टेटर'
पोप एलेक्ज़ेंडर	1688-1744	● 'एसे ऑन क्रिटिसिज़्म'
वोल्तेयर	1694-1778	● 'डिक्शनेयर फिलॉसॉफिक'
डॉ. सैमुअल जॉनसन	1709-1784	● 'लाइव्स ऑफ दि मोस्ट एमिनेंट पोएट' ● 'ए डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज'
इमैनुअल कांट	1724-1804	● 'क्रिटिक ऑफ प्योर रीज़न' (1781)
गोथे	1749-1832	● 'फाउस्ट' (1790)
हीगेल	1770-1831	● 'द फेनोमेनोलॉजी ऑफ स्पिरिट' (1807) ● 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलोसॉफिकल साइंसेज़' ● 'एलिमेंट्स ऑफ द फिलॉसफी ऑफ राइट' ● 'साइंस ऑफ लॉजिक' (1812)
विलियम वर्ड्सवर्थ	1770-1850	● 'लिरिकल बैलड्स' (1798) ● 'द प्रिल्यूड' (1799)
कॉलरिज	1772-1834	● 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' (1817) ● 'लेक्चर्स ऑन लिटरेचर' ● 'ऑन द कॉन्स्टिट्यूशन ऑफ चर्च एंड स्टेट' (1830) ● 'एड्स टु रिफ्लेक्शन' (1825)
पी.बी. शेली	1792-1822	● 'ए डिफेंस ऑफ पोएट्री' (1840)
इमर्सन	1803-1882	● 'नेचर' (1836) ● 'दि अमेरिकन स्कॉलर' (1837) ● 'सेल्फ रिलायंस' (1841)

4 वैचारिक पृष्ठभूमि

भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि

नवजागरण की अवधारणा

- 19वीं शताब्दी में भारतीय समाज संक्रमण के जिस तीव्र दौर से गुज़रा, उसे कुछ चिंतक पुनर्जागरण कहते हैं, कुछ पुनरुत्थान, तो कुछ अन्य नवजागरण। ये सभी शब्द इतिहास के प्रति विशेष दृष्टिकोण को प्रकट करते हैं।
- **'नवजागरण'** का अर्थ है– नए तरीके से जागना। इसमें निहित है कि पहले भी हम जागे हुए थे, किंतु अब जागने का दृष्टिकोण बदल गया है। यह व्याख्या मध्यकाल के इतिहास को इस्लाम व हिंदुत्व की टकराहट नहीं मानती और न ही उसे अंधकार या पतन का काल मानती है। डॉ. रामविलास शर्मा इत्यादि चिंतकों ने 19वीं शताब्दी के सुधार आंदोलनों की व्याख्या हेतु इसी शब्द को उचित माना है।
- नवजागरण एक विशेष प्रकार के सांस्कृतिक संक्रमण का दौर है, जिसमें कोई समाज किसी अन्य संस्कृति से टकरा कर नए दृष्टिकोण से जीने का प्रयास करता है। जिन देशों के पास गौरवमय अतीत है, उनमें अतीत की स्मृतियाँ भी नवजागरण का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनती हैं। शेष समाजों में अन्य संस्कृतियों से परिचित होना और उनकी तुलना में अपना मूल्यांकन करना नवजागरण का कारण बनता है। **डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी** के शब्दों में कहें तो **"नवजागरण दो संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा है।** इस ऊर्जा के प्रभावस्वरूप दोनों संस्कृतियाँ एक-दूसरे की अच्छाइयाँ ग्रहण करना चाहती हैं और अपनी बुराइयाँ छोड़ना चाहती हैं। यही संपूर्ण सांस्कृतिक प्रक्रिया समाज के इतिहास में **नवजागरण** कहलाती है।"
- भारतीय समाज के इतिहास में ऐसे दो जागरण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रहे हैं–
  - पहला जागरण मध्यकाल से संबंधित है जब भारत में इस्लाम का आगमन हुआ। इस्लामी संस्कृति समतामूलक किंतु कट्टर धार्मिक विचारों पर आधारित थी, जबकि भारतीय संस्कृति धार्मिक लचीलेपन किंतु विषमतामूलक सामाजिक संरचना पर आधारित थी। इन दोनों की टकराहट से भक्तिकालीन जागरण हुआ और सामासिक संस्कृति उद्भूत हुई। संस्कृतियाँ पहले टकराती हैं, फिर तटस्थ होती हैं और अंत में धीरे-धीरे परिचित होकर परस्पर घुल-मिल जाती हैं। घुलने-मिलने का यही स्तर सामासिक संस्कृति को जन्म देता है।
  - दूसरा नवजागरण 19वीं शताब्दी से संबंधित है जहाँ पश्चिमी (यूरोपीय) संस्कृति की टकराहट भारतीय संस्कृति से हुई।
- अंग्रेज़ों की व्यापारिक गतिविधियों के ज़रिये भारत ब्रिटेन का उपनिवेश बनता चला गया। मुगलों के पराभव ने भारत की राजनैतिक परिस्थितियों को कमज़ोर कर दिया जिसका लाभ अंग्रेज़ों ने उठाया। मुगल, मराठा व सिख आदि सत्ताओं के पराजय से देश का बड़ा हिस्सा ब्रिटेन का गुलाम हो गया।
- अंग्रेज़ों की नीतियों तथा ईसाई धर्म प्रचारकों व प्राच्य संस्कृति को हेय समझने वाले अधिकारियों आदि ने भारतीयों के सांस्कृतिक गौरव को आघात पहुँचाया।
- अंग्रेज़ों ने अपनी औपनिवेशिक नीति के तहत ज़मीन का नया बंदोबस्त किया। इससे अपने आप में सिमटे हुए गाँवों की जड़ता टूटी। अंग्रेज़ी शिक्षा के माध्यम से हम यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान से परिचित हुए और प्रगति का एक नया मार्ग मिला। यातायात के नए साधनों से व्यापार में वृद्धि हुई और हमारे आवागमन की गति तेज़ हुई। प्रेस के आने के कारण विचार-विनिमय में सुविधा हुई। विचारों की स्वतंत्रता का द्वार उन्मुक्त हुआ। यह नवजागरण ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि बना।
- भारतीय समाज की रूढ़िवादी व धार्मिक संकीर्णता ने भी स्वयं यहाँ के एक वर्ग को सोचने को मजबूर किया।
- निस्संदेह अंग्रेज़ों की शिक्षा नीति उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया के तहत ही थी, परंतु इसने दो संस्कृतियों की टकराहट के बीच आधुनिकता के प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया।
- आधुनिक भावबोध की संगठित अभिव्यक्ति नवजागरण के माध्यम से हुई। विश्व चिंतन की तमाम आधुनिक स्थापनाएँ पहली बार नवजागरण के माध्यम से 19वीं सदी में अभिव्यक्त हुईं।
- सबसे पहले नवजागरण बंगाल में घटित हुआ। वस्तुतः प्लासी के युद्ध के बाद अर्थात् 1757 में ही बंगाल अंग्रेज़ों के अधीन हो कर उनके विकसित पूँजीवादी संस्कृति-शिक्षा-साहित्य के संपर्क में आ चुका था। स्वाभाविक है कि बंगाल को इसका लाभ मिला और वहाँ नवजागरण आया।

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

- नवजागरण परंपरा और संस्कृति को वैज्ञानिक तर्क विधान व सामाजिक-राजनीतिक अभिप्रायों से जोड़ने वाली चेतना है। इसका सीधा प्रभाव भारत पर पड़ा। यही कारण है कि भारत में नवजागरण का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव विविध सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों के रूप में देखा जा सकता है।
- ये आंदोलन बुद्धि व तर्क पर केंद्रित थे, आस्था व कोरी भावुकता पर नहीं। इन्होंने भारतीय समाज में नारी व निम्न जातियों की शोचनीय स्थिति का जमकर विरोध किया।
- जहाँ सती प्रथा, बालिका-शिशु हत्या जैसी स्त्री विरोधी परंपराएँ व्याप्त थीं, वहीं निम्न-जातियों को छुआछूत व सामाजिक-आर्थिक शोषण का शिकार होना पड़ता था। इसके अलावा बाल विवाह, दास-प्रथा आदि प्रथाओं का भी चलन था।

खंड– २

पाठ (टेक्स्ट)

5 हिंदी कविता : पाठ (टेक्स्ट)

1. रेवा तट (चंदबरदाई)

'रेवा तट' चंदबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' का सत्ताइसवाँ समय (सर्ग) है। इस सर्ग में पृथ्वीराज चौहान के रेवा तट (नर्मदा) के समीप वन में शिकार खेलने जाने तथा वहाँ शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी से युद्ध का विस्तृत वर्णन है। 'रेवा तट' पर हुए युद्ध में पृथ्वीराज की विजय होती है, फलस्वरूप मुहम्मद गोरी को बंदी बना लिया जाता है। 'रेवा तट' का मुख्य विषय पृथ्वीराज और गौरी का युद्ध है तथा इसका प्रधान रस वीर रस है। परिचय हेतु एक उद्धरण दिया जा रहा है–

- देवग्गिरि जीते सुभट, आयौ चामंड राइ।
  जय जय नृप कीरति सकल, कही कव्विजन गाइ।।
  मिलट राज प्रथिराज सों, कही राव चामंड।
  रेवातट जो मन करौ, (तौ) वन अपुब्ब गज झुंड।।

2. अमीर ख़ुसरो की पहेलियाँ और मुकरियाँ

मुकरियाँ

- लिपट लिपट के वा के सोई
  छाती से छाती लगा के रोई
  दांत से दांत बजे तो ताड़ा
  ऐ सखि साजन? ना सखि जाड़ा!
- रात समय वह मेरे आवे
  भोर भये वह घर उठि जावे
  यह अचरज है सबसे न्यारा
  ऐ सखि साजन? ना सखि तारा!

बूझ-अनबूझ पहेलियाँ

- गोश्त क्यों न खाया?
  डोम क्यों न गाया?
  उत्तर–गला न था
- जूता पहना नहीं
  समोसा खाया नहीं
  उत्तर– तला न था
- अनार क्यों न चखा?
  वज़ीर क्यों न रखा?
  उत्तर– दाना न था
  (अनार का दाना और दाना = बुद्धिमान)
- सौदागर चे मे बायद? (सौदागर को क्या चाहिये)
  बूचे (बहरे) को क्या चाहिये?
  उत्तर– (दो कान भी, दुकान भी)
- तिश्नारा चे मे बायद? (प्यासे को क्या चाहिये)
  मिलाप को क्या चाहिये
  उत्तर– चाह (कुआँ भी और प्यार भी)
- शिकार ब चे मे बायद करद? (शिकार किस चीज़ से करना चाहिये)
  कुव्वते मग़ज़ को क्या चाहिये? (दिमागी ताकत को बढ़ाने के लिये क्या चाहिये)
  उत्तर– बा-दाम (जाल के साथ) और बादाम
- रोटी जली क्यों? घोड़ा अड़ा क्यों? पान सड़ा क्यों?
  उत्तर– फेरा न था
- पंडित प्यासा क्यों? गधा उदास क्यों?
  उत्तर– लोटा न था
- उज्ज्वल बरन अधीन तन, एक चित्त दो ध्यान।
  देखत मैं तो साधु है, पर निपट पाप की खान।।
  उत्तर– बगुला (पक्षी)
- एक नारी के हैं दो बालक, दोनों एकहि रंग।
  एक फिर एक ठाढ़ा रहे, फिर भी दोनों संग।
  उत्तर– चक्की।
- आगे-आगे बहिना आई, पीछे-पीछे भइया।
  दाँत निकाले बाबा आए, बुरका ओढ़े मइया।।
  उत्तर– भुट्टा
- चार अंगुल का पेड़, सवा मन का पत्ता।
  फल लागे अलग अलग, पक जाए इकट्ठा।।
  उत्तर– कुम्हार की चाक
- अचरज बंगला एक बनाया, बाँस न बल्ला बंधन धने।
  ऊपर नींव तरे घर छाया, कहे खुसरो घर कैसे बने।।
  उत्तर– बयाँ पंछी का घोंसला
- माटी रौदूँ चक धरूँ, फेरूँ बारम्बर।
  चातुर हो तो जान ले मेरी जात गँवार।।
  उत्तर– कुम्हार
- गोरी सुंदर पातली, केहर काले रंग।
  ग्यारह देवर छोड़ कर चली जेठ के संग।।
  उत्तर– अरहर की दाल।
- ऊपर से एक रंग हो और भीतर चित्तीदार।
  सो प्यारी बातें करे फिकर अनोखी नार।।
  उत्तर– सुपारी
- बाल नुचे कपड़े फटे मोती लिये उतार।
  यह बिपदा कैसी बनी जो नंगी कर दई नार।।
  उत्तर– भुट्टा (छल्ली)

6 हिंदी उपन्यास : पाठ (टेक्स्ट)

1. देवरानी-जेठानी की कहानी (पं. गौरीदत्त शर्मा)

हिंदी के प्रथम उपन्यास के मतभेद में यह उपन्यास भी गिना जाता है जिसके लेखक पं. गौरीदत्त शर्मा ने उपन्यास की भूमिका में ही इस उपन्यास के उद्देश्य और ज़रूरत को रेखांकित कर दिया है। यह उपन्यास पढ़ी-लिखी और अनपढ़ स्त्रियों के गुण-दोष को रेखांकित करता है। उपन्यास का परम लक्ष्य यही बताना है कि समाज-परिवार के लिये पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ क्यों ज़रूरी हैं।

मुख्य पात्र

- **लाला सर्वसुख लाल**- परिवार का मुखिया
- **लाला दौलत राम**- बड़ा बेटा
- **लाला छोटेलाल**- छोटा बेटा
- **पार्वती**- बड़ी बेटी
- **सुखदेई**- छोटी बेटी
- **दौलतराम की पत्नी**- जेठानी (अनपढ़)
- **छोटेलाल की पत्नी**- देवरानी (पढ़ी-लिखी)

2. परीक्षागुरु (लाला श्रीनिवास दास)

लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षागुरु' हिंदी का प्रथम उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास की कहानी दिल्ली के ऐसे कारोबारी व साहूकार लाला मदनलाल की है जिसे अपने पिता की मेहनत व धीरज से बड़ी दौलत विरासत में मिलती है लेकिन वह पश्चिमी आधुनिकता के प्रवाह में पड़कर लगातार अपव्यय के कारण कई तरह के संकटों में फँस जाता है। अंततः वह अपने बुद्धिमान एवं शिक्षित वकील मित्र लाला ब्रजकिशोर के प्रयासों से संकटों से उबरता है और चापूलसों ओर दुर्व्यसनों से भी तौबा कर लेता है।

मुख्य पात्र

- **लाला मदनमोहन**- अमीर किंतु गलत संगती में फँसा मुख्य पात्र।
  - इनकी पत्नी **कामनी**।
- **लाला ब्रजकिशोर**- समझदार एवं अच्छा इंसान; पेशे से वकील।
  - इनकी पत्नी **प्रियम्वदा**।
- मुंशी चुन्नीलाल, मास्टर शिम्भूदयाल, बाबू लाल।

प्रमुख उद्धरण

- अपनी भाषामैं यह नई चालकी पुस्तक होगी, ...यह सच है कि नई चाल की चीज देखनेंको सबका जी ललचाता है परन्तु पुरानी रीतिके मनमैं समाये रहने और नई रीतिको मन लगाकर समझनेंमें थोडी मेहनत होनेंसै पहले, पहल पढ़नेंवाले का जी कुछ उलझनें लगता है और मन उछट जाता है।
- "बलायत की सब उन्नति का मूल लार्ड बेकन की यह नीति है कि केवल बिचार ही बिचार मैं मकड़ी के जाले न बनाओ आप परीक्षा करके हरेक पदार्थ का स्वभाव जानों।" *-मिस्टर ब्राइट*
- प्रीति का सुख ऐसा ही अलौकिक है। संसार मैं जिन लोगों को भोजन के लिये अन्न और पहन्ने के लिये वस्त्र तक नहीं मिल्ता उन्को भी अपनें दु:ख सुख के साथी प्राणोपम मित्र के आगे अपना दु:ख रोकर छाती का बोझ हल्का करने पर, अपनें दुखों को सुन, सुन कर उस्के जी भर आनें पर, उस्के धैर्य देने पर, उस्के हाथ सै अपनी डबडबाई हुई आंखों के आँसू पुछ जानें पर, जो संतोष होता है वह किसी बड़े राजा को लाखों रुपे खर्च करनें सै भी नहीं होसक्ता।" *-लाला हरदयाल*
- परोपकार की इच्छा ही अत्यन्त उपकारी है परन्तु हद्द सै आगे बढ़नें पर वह भी फ़िज़ूलखर्ची समझी जायगी और अपनें कुटुंब परवारादि का सुख नष्ट हो जाएगा जो आलसी अथवा अधर्म्मियों की सहायता की तो उस्सै संसार मैं आलस्य और पाप की बृद्धि होगी इसी तरह कुपात्र मैं भक्ति होनें सै लोक, परलोक दोनों नष्ट हो जायंगें, न्यायपरता यद्यपि सब बृत्तियों को समान रखनें वाली है परन्तु इस्की अधिकता सै भी मनुष्य के स्वभाव मैं मिलनसारी नहीं रहती, क्षमा नहीं रहती। *-लाला ब्रजकिशोर*
- हिन्दुस्थान की भूमि मैं ईश्वर की कृपा सै उन्नति करनें के लायक सब सामान बहुतायतसे मौजूद हैं केवल नदियों के पानी ही सै बहुत तरह की कलैं चल सक्ती हैं परन्तु हाथ हिलाये बिना अपनें आप ग्रास मुख मैं नहीं जाता नई, नई युक्तियों का उपयोग किए बिना काम नहीं चलता। *-लाला ब्रज किशोर*
- "देशकी उन्नति अवनतिका आधार वहां के निवासियों की प्रकृति पर है, सब देशो मैं सावधान और असावधान मनुष्य रहते हैं परन्तु जिस देशके बहुत मनुष्य सावधान और उद्योगी होते हैं उस्की उन्नति होती जाती है और जिस देशमैं असावधान और कमकस विशेष होते हैं उस्की अवनति होती जाती है, हिन्दुस्थान मैं इस समय और देशों की अपेक्षा सच्चे सावधान बहुत कम हैं और जो हैं वे द्रव्य की असंगति सै, अथवा द्रव्यवानों की अज्ञानता सै, अथवा उपयोगी पदार्थों की अप्राप्तिसै, अथवा नई, नई युक्तियों के अनुभव करनें की कठिनाइयोंसै, निरर्थक से हो रहे हैं और उन्की सावधानता बनके फूलोंकी तरह कुछ उपयोग किए बिना बृथा नष्ट हो जाती है परन्तु हिन्दुस्थान मैं इस समय कोई सावधान न हो यह बात हरगिज नहीं है।" *-लाला ब्रजकिशोर*
- मनुष्य जिस बात को मन सै चाहता है उस्का पूरा होना ही सुख का कारण है ओर उस्मैं हर्ज पड़नें ही सै दु:ख होता है। *-मास्टर शिंभूदयाल*
- हिन्दुस्थान की उन्नति नहीं होती, विद्याभ्यास के गुण कोई नहीं जान्ता, अखबारों की कदर कोई नहीं करता, अखबार जारी करनें वालों को नफेके बदले नुक्सान उठाना पड़ता है, हम लोग अपना दिमाग़ खिपा कर देश की उन्नति के लिये आर्टिकल लिखते हैं, परन्तु अपनें देश के लोग उस्की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखते।

7 हिंदी कहानी : पाठ (टेक्स्ट)

1. चन्द्रदेव से मेरी बातें (बंग महिला/राजेन्द्र बाला घोष)

यह कहानी चंद्रदेव को लिखे गए पत्र के रूप में लिखी गई है जिसमें तत्कालीन गुलाम भारत की व्यवस्था और परिवेश पर व्यंग्य है।

प्रमुख उद्धरण

- भगवान चंद्रदेव! क्षमा कीजिए, आप तो अमर हैं; आपको मृत्यु कहाँ? तब परलोक बनाना कैसा? ओ हो! देवता भी अपनी जाति के कैसे पक्षपाती होते हैं। देखो न 'चंद्रदेव' को अमृत देकर उन्होंने अमर कर दिया- तब यदि मनुष्य होकर हमारे अंग्रेज अपने जातिवालों का पक्षपात करें तो आश्चर्य ही क्या है? अच्छा, यदि आपको अंग्रेज जाति की सेवा करना स्वीकार हो तो, एक 'एप्लिकेशन' (निवेदन पत्र) हमारे आधुनिक भारत प्रभु लार्ड कर्जन के पास भेज देवें। आशा है कि आपको आदर पूर्वक अवश्य आह्वान करेंगे। क्योंकि आप अधम भारतवासियों के भाँति कृष्णांग तो हैं ही नहीं, जो आपको अच्छी नौकरी देने में उनकी गौरांग जाति कुपित हो उठेगी।
- लार्ड कर्ज़न को कमिशन और मिशन, दोनों ही, अत्यंत प्रिय हैं।
- मैं अनुमान करती हूँ कि आपके नेत्रों की ज्योति भी कुछ अवश्य ही मंद पड़ गई होगी। क्योंकि आधुनिक भारत संतान लड़कपन से ही चश्मा धारण करने लगी है; इस कारण आप हमारे दीन, हीन, क्षीणप्रभ भारत को उतनी दूर से भलीभाँति न देख सकते होंगे।
- अब भारत में न तो आपके, और न आपके स्वामी भुवनभास्कर सूर्य महाशय के ही वंशधरों का साम्राज्य है और न अब भारत की वह शस्यश्यामला स्वर्ण प्रसूतामूर्ति ही है। अब तो आप लोगों के अज्ञात, एक अन्य द्वीप-वासी परम शक्तिमान गौरांग महाप्रभु इस सुविशाल भारत-वर्ष का राज्य वैभव भोग रहे हैं। अब तक मैंने जिन बातों का वर्णन आपसे स्थूल रूप में किया वह सब इन्हीं विद्या विशारद गौरांग प्रभुओं के कृपा कटाक्ष का परिणाम है। यों तो यहाँ प्रति वर्ष पदवी दान के समय कितने ही राज्य विहीन राजाओं की सृष्टि हुआ करती है, पर आपके वंशधारों में जो दो चार राजा महाराजा नाम-मात्र के हैं भी, वे काठ के पुतलों की भाँति हैं। जैसे उन्हें उनके रक्षक नचाते हैं, वैसे ही वे नाचते हैं। वे इतनी भी जानकारी नहीं रखते कि उनके राज्य में क्या हो रहा है-उनकी प्रजा दुखी है, या सुखी?

2. दुलाईवाली (बंगमहिला)

- नवल किशोर द्वारा अपने मित्र बंशीधर से रेल में किए गए मजाक की सरस कहानी।
- **पात्र:** बंशीधर, बंशीधर की पत्नी जानकी देई, जानकी देई की छोटी बहन सीता, बंशीधर का मित्र नवलकिशोर और नवलकिशोर की पत्नी।

प्रमुख उद्धरण

- "नाहक बिलायती चीजें मोल लेकर क्यों रुपये की बरबादी की जाए। देशी लेने से भी दाम लगेगा सही; पर रहेगा तो देश ही में।"
- खैर, दोनों मित्र अपनी-अपनी घरवाली को लेकर राजी-खुशी घर पहुँचे और मुझे भी उनकी यह राम-कहानी लिखने से छुट्टी मिली।

3. एक टोकरी-भर मिट्टी (माधवराव सप्रे)

- जमींदार द्वारा अपने महल के अहाते के लिये एक बूढ़ी विधवा की झोपड़ी हटाने और आँखे खुलने के पश्चात् वापिस करने की छोटी-सी आदर्शवादी कथा।
- **पात्र:** बुढ़िया, जमींदार।

प्रमुख उद्धरण

- जब से यह झोंपड़ी छूटी है, तब से मेरी पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया है। मैंने बहुत-कुछ समझाया पर वह एक नहीं मानती। यही कहा करती है कि अपने घर चल। वहीं रोटी खाऊँगी। अब मैंने यह सोचा कि इस झोंपड़ी में से एक टोकरी-भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाऊँगी। इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी।
- महाराज, नाराज न हों, आपसे एक टोकरी-भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर क्योंकर उठा सकेंगे? आप ही इस बात पर विचार कीजिए।

4. राही (सुभद्रा कुमारी चौहान)

- राही की विवशता के कारण की गई चोरी की जानकारी से दुखी होकर अनीता द्वारा तत्कालीन कांग्रेसी आंदोलनकारियों की सत्तालोलुपता और ढोंग पर चिंतन तथा विवश-गरीबों की सेवा को वास्तविक देशभक्ति समझने वाले स्वप्न से बनी कहानी।
- जेल का परिवेश।
- **पात्र:** चोरी की दोषी राही और स्वतंत्रता-सेनानी अनीता।

प्रमुख उद्धरण

- "तो तूने चोरी क्यों की? मजदूरी करती तब भी तो दिन भर में तीन-चार आने पैसे मिल जाते!"

  "हमें मजदूरी नहीं मिलती सरकार। हमारी जाति माँगरोरी है। हम केवल माँगते-खाते हैं।"

  "और भीख न मिले तो?"

  "तो फिर चोरी करते हैं। उस दिन घर में खाने को नहीं था। बच्चे भूख से तड़प रहे थे। बाजार में बहुत देर तक माँगा। बोझा ढोने के लिये टोकरा लेकर भी बैठी रही। पर कुछ न मिला। सामने किसी का बच्चा रो रहा था, उसे देखकर मुझे अपने भूखे बच्चों की याद आ गई। वहीं पर किसी की नाज की गठरी रखी हुई थी। उसे लेकर भागी ही थी कि पुलिसवाले ने पकड़ लिया।"

8 हिंदी नाटक : पाठ (टेक्स्ट)

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र

अंधेर-नगरी

इसका प्रकाशन वर्ष 1981 ई. है। यह नाटक 6 अंकों में विभक्त है। प्रहसन शैली में लिखे गये इस नाटक में तत्कालीन समय में सत्ता की विसंगतियों, मुर्खता और उससे उपजी परिस्थितियों का व्यंग्यात्मक चित्रण किया गया है।

पात्र

- महन्त – एक साधु
- गोवरधनदास – महंत का लोभी शिष्य
- नारायण दास – महंत का दूसरा शिष्य
- कबाबवाला – कबाब विक्रेता
- घासीराम – चना बेचने वाला
- नारंगीवाला – नारंगी बेचने वाली
- हलवाई – मिठाई बेचने वाला
- कुंजड़िन – सब्जी बेचने वाली
- मुगल – मेवे और फल बेचने वाला
- पाचकवाला – चूरन विक्रेता
- मछलीवाली – मछली बेचने वाली
- जातवाला – जाति बेचने वाला
- बनिया
- राजा – चौपट राजा
- मंत्री – चौपट राजा का मंत्री
- माली
- दो नौकर – राजा के दो नौकर
- फरियादी – राजा से न्याय माँगने वाला
- कल्लू – बनिया जिसके दीवार से फरियादी की बकरी मरी
- कारीगर – कल्लू बनिया की दीवार बनाने वाला
- चुनेवाला – दीवार बनाने के लिये मसाला तैयार करने वाला
- भिश्ती – दीवार बनाने के मसाले में पानी डालने वाला
- कसाई – भिश्ती के लिये मशक बनाने वाला
- गड़ेरिया – कसाई को भेड़ बेचने वाला
- कोतवाल
- चार सिपाही – राजा के सिपाही

प्रथम अंक 'बाह्य प्रांत'

- "राम भजौ-राम भजो-राम भजो भाई" – *महंत जी*

द्वितीय अंक 'बाजार'

- "जात ले जात, टके सेर जात...टके के वास्ते धर्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचें, टके के वास्ते झूठी गवाही दें।...वेद धर्म कुल मरजादा सचाई बड़ाई सब टके सेर।" –*जातवाला (ब्राह्मण)*
- "अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।" –*गोवरधनदास*

तृतीय अंक 'जंगल'

- सेत सेत सब एक से, जहाँ कपूर कपास।
  ऐसे देस कुदेस में कबहुँ न कीजै बास।। –*महंत जी*

चतुर्थ अंक 'राजसभा'

- "चुप रहो। तुम्हारा न्याव यहाँ ऐसा होगा कि जैसा जम के यहाँ भी न होगा।" –*राजा, फरियादी से*

पंचम अंक-अरण्य

- "वेश्या जोरू एक समाना"।
- अंधाधुंध मच्यौ सब देसा मानहूँ राजा रहत बिदेसा –*गोवरधनदास*

छठा अंक-श्मशान

- जहाँ न धर्म न बुद्धि नहिं, नीति न सुजन समाज।
  ते ऐसहि आपुहि नसे, जैसे चौपटराज।। –*महंत*

भारत दुर्दशा

इसका प्रकाशन वर्ष 1980 ई. है। भारत की तत्तकालीन राजनीतिक व सामाजिक दुर्दशा का प्रतिकात्मक चित्रण।

पात्र

भारत दुर्दैव, भारत भाग्य, सत्यानाश, रोग, आलस्य, मदिरा, अंधकार, निर्लज्जता, डिसलॉयल्टी

पहिला अंक

- 'रोअहू सब मिलिकै आवहु भारत भाई'
  'लरि बैदिक जैन डुबाई पुस्तिक सारी'
  'अँग्रेजराज सुख साज सजे सब भारी' –*योगी*

चौथा अंक

- दुनिया में हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा
  मर जाना पै उठके जाना नहीं अच्छा –*आलस्य*

पाँचवा अंक

- 'कविवचन सुधा पत्रिका' का जिक्र –*'डिसलॉयल्टी' के द्वारा*

9 हिंदी निबंध : पाठ (टेक्स्ट)

1. दिल्ली दरबार दर्पण (1877 ई.) (भारतेंदु हरिश्चंद्र)

इस निबंध में 1877 ई. में लगे दिल्ली दरबार का वर्णन मिलता है। यहाँ भारतेंदु की राजभक्ति और देशभक्ति की मिश्रित भावना देखी जा सकती है।

प्रमुख उद्धरण

- यह दरबार, जो हिंदुस्तान के इतिहास में सदा प्रसिद्ध रहेगा, एक बड़े भारी मैदान में नगर से पाँच मील पर हुआ था। बीच में श्रीयुत वाइसराय का षट्कोण चबूतरा था, जिसकी गुंबदनुमा छत पर लाल कपड़ा चढ़ा और सुनहला रुपहला तथा शीशे का काम बना था। कंगुरे के ऊपर कलसे की जगह श्रीमती राजराजेश्वरी का सुनहला मुकुट लगा था। इस चबूतरे पर श्रीयुत अपने राजसिंहासन में सुशोभित हुए थे।
- सब मिलाकर तिरसठ शासनाधिकारी राजाओं को इस चबूतरे पर जगह मिली थी।
- इस ऐक्ट में यह भी वर्णन है कि उस नियम के अनुसार, जो हिंदुस्तान के उत्तम शासन के हेतु बनाया गया था, हिंदुस्तान के राज का अधिकार, जो उस समय तक हमारी ओर से ईस्ट इंडिया कंपनी को सपुर्द था, अब हमारे निज अधिकार में आ गया और हमारे नाम से उसका शासन होगा।
- सन् 1858 ईसवी की 1 नवंबर को श्रीमती महारानी की ओर से एक इश्तिहार जारी हुआ था, जिसमें हिंदुस्तान के रईसों और प्रजा को श्रीमती की कृपा का विश्वास कराया गया था, जिसको उस दिन से आज तक वे लोग राजसंबंधी बातों में बड़ा अनमोल प्रमाण समझते हैं।
- हम लोग इस समय श्रीमती महारानी के राजराजेश्वरी की पदवी लेने का समाचार प्रसिद्ध करने के लिये इकट्ठे हुए हैं, और यहाँ महारानी के प्रतिनिधि होने की योग्यता से मुझे अवश्य है कि श्रीमती के उस कृपायुक्त को सब पर प्रगट करूँ जिसके कारण श्रीमती ने अपने परंपरा की पदवी और प्रशस्ति में एक पद और बढ़ाया।
- पृथ्वी पर श्रीमती महारानी के अधिकार में जितने देश हैं- जिनका विस्तार भूगोल के सातवें भाग से कम नहीं है, और जिनमें तीस करोड़ आदमी बसते हैं- उनमें से इस बड़े और प्राचीन राज के समान श्रीमती किसी दूसरे देश पर कृपादृष्टि नहीं रखतीं।
- राजराजेश्वरी का अधिकार लेने से श्रीमती का अभिप्राय किसी को मिटाने या दबाने का नहीं है वरन् रक्षा करने और अच्छी राह बतलाने का है। सारे देश की शीघ्र उन्नति और उसके सब प्रांतों की दिन पर दिन वृद्धि होने से अंग्रेजी राज के फल सब जगह प्रत्यक्ष दिखाई पड़ते हैं।
- हे हिंदुस्तान की सेना के अँगरेज़ी और देशी अफ़सर और सिपाहियों, – आप लोगों ने भारी-भारी काम बहादुरी के साथ लड़ भिड़ कर सब अवसरों पर किये और इस प्रकार श्रीमती की सेना की युद्धकीर्त्ति को थामे रहे, उसका श्रीमती अभिमान के साथ स्मरण करती हैं। श्रीमती इस बात पर भरोसा रखकर कि आगे को भी सब अवसरों पर आप लोग उसी तरह मिल जुल कर अपने भारी कर्त्तव्य को सच्चाई के साथ पूरा करेंगे, अपने हिंदुस्तानी राज में मेल और अमन चैन बनाए रखने के विश्वास का काम आप लोगों ही को सुपुर्द करती हैं।
- मैं श्रीमती की ओर से और उनके नाम से दिल्ली आने के लिये आप लोगों का जी से स्वागत करता हूँ और इस बड़े अवसर पर आप लोगों की उस राजभक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण गिनता हूँ जो श्रीमान् प्रिंस ऑफ वेल्स के इस देश में आने के समय आप लोगों ने दृढ़ रीति पर प्रगट की थी।
- इन्हीं राजनीति जानने वाले लोगों के उत्तम प्रयत्नों से हिंदुस्तान सभ्यता में दिन-दिन बढ़ता जाता है और यही उसके राज-काज संबंधी महत्त्व का हेतु और नित्य बढ़ने वाली शक्ति का गुप्त कारण है और इन्हीं लोगों के द्वारा पच्छिम देश का शिल्प, सभ्यता और विज्ञान, (जिनके कारण आज दिन यूरोप लड़ाई और मेल दोनों में सबसे बढ़ चढ़कर है) बहुत दिनों तक पूरब के देशों में वहाँ वालों के उपकार के लिये प्रचलित रहेगा।
- परंतु हे हिंदुस्तानी लोग!, आप चाहे जिस जाति या मत के हों यह निश्चय रखिये कि आप इस देश के प्रबंध में योग्यता के अनुसार अँगरेजों के साथ भलीभाँति काम पाने के योग्य हैं, और ऐसा होना पूरा न्याय भी है, और इंगलिस्तान तथा हिंदुस्तान के बड़े राजनीति जानने वाले लोग और महारानी की राजसी पार्लियामेंट व्यवस्थापकों ने बार-बार इस बात को स्वीकार भी किया है।
- इस बड़े राज्य का प्रबंध जिन लोगों के हाथ में सौंपा गया है उनमें केवल बुद्धि ही के प्रबल होने की आवश्यकता नहीं है वरन् उत्तम आचरण और सामाजिक योग्यता की भी वैसी ही आवश्यकता है। इसलिये जो लोग कुल, पद और परंपरा के अधिकार के कारण आप लोगों में स्वाभाविक ही उत्तम हैं उन्हें अपने को और अपने संतान को केवल उस शिक्षा के द्वारा योग्य करना आवश्यक है, जिससे कि वे श्रीमती महारानी अपनी राजराजेश्वरी की गवर्नमेंट की राजनीति के तत्त्वों को समझें और काम में ला सकें और इस रीति से उन पदों के योग्य हों जिनके द्वार उनके लिये खुले हैं।

2. भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है? (3 दिसंबर 1884 ई.) (भारतेंदु हरिश्चंद्र)

भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है? निबंध में भारतेंदु भारतीय अतीत के गौरव वर्तमान की पीड़ाएँ और भविष्य के स्वप्न को रेखांकित करते हैं। इसके साथ ही इस निबंध में 'निज भाषा' और स्वदेश हित के प्रश्न को भी उठाते हैं।

10 अन्य गद्य विधाएँ : पाठ (टेक्स्ट)

1. माटी की मूरतें (रामवृक्ष बेनीपुरी)

'माटी की मूरतें' में संकलित सभी रेखाचित्र रामवृक्ष बेनीपुरी ने हजारीबाग सेंट्रल जेल में रहते हुए लिखे हैं। इन रेखाचित्रों में रामवृक्ष बेनीपुरी ने अपने जीवन के उन चुनिंदा लोगों के बारे में लिखा जो उनके अत्यंत प्रिय थे।

लगभग हर व्यक्ति के बारे में बताते हुए अपने बचपन में चले जाते हैं। बचपन के दिनों में इन सभी व्यक्तियों के साथ बिताए हुए पलों का सजीव चित्रण करने के साथ-साथ उस दौर की सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति भी उनके माध्यम से स्पष्ट करते चलते हैं। इन रेखाचित्रों के माध्यम से हर व्यक्ति के जीवन एवं चरित्र के श्वेत-श्याम पक्षों को दिखलाते हुए मानवीय एवं नैतिक पक्षों को अधिक उभारा गया है। रेखाचित्रों में लेखक ने बचपन की स्मृतियों को महत्त्व दिया है और जवानी एवं आगे के जीवन के साथ उसकी तुलना की है।

मुख्य पात्र

- **रजिया:** गाँव की एक मुसलमान चूड़ीहारिन की लड़की। लेखक की बचपन की दोस्त।
- **बलदेव सिंह:** लेखक के गाँव के जाने-माने पहलवान और सबसे जिंदादिल आदमी।
- **सरजू भैया:** लेखक के मुँह बोले बड़े भाई।
- **मंगर:** हलवाहा जो अपने काम के लिये कई गाँव में मशहूर था। मंगर की कोई संतान नहीं थी जिसके कारण बुढ़ापे में बड़ा कष्ट झेलना पड़ा।
- **रूपा की आजी:** गाँव भर में टोना लगाने के लिये मशहूर। लोग अंध विश्वास के चलते मानते थे कि यह अपने पूरे परिवार को खा गई।
- **देव:** लेखक का बचपन का दोस्त जो आगे चलकर क्रांतिकारी हो जाता है।
- **बालगोबिन भगत:** जाति से तेली। तबियत से भगत आदमी और कबीर पंथी।
- **भौजी:** लेखक की भाभी, जो बपचन के दिनों में लेखक से बहुत प्यार दुलार करती थीं। संयुक्त परिवार टूटने के बाद पारिवारिक कलह होने पर भी भाभी स्वयं खरी खोटी बोलती थीं परंतु लेखक के लिये बुरा किसी और के मुँह से सुनती तो तिलमिला उठतीं।
- **परमेसर:** लेखक के पट्टीदार। नशे के चक्कर में घर-बार बर्बाद कर डाला।
- **बैजू मामा:** लेखक इनसे जेल में मिला। बैजू पूरे जेल के ही मामा थे। जेल में रहने की आदत हो जाने के कारण बार-बार छोटी-मोटी चोरी करके वापस आ जाते थे। वे 30 साल जेल में रहे।
- **सुभान खाँ:** गाँव के बहुत काबिल राजमिस्त्री जो कि मुस्लिम थे। सांप्रदायिक वैमनस्य का लेश मात्र नहीं। हिंदू-मुस्लिम विवाद बढ़ने पर उन्होंने अपनी मस्जिद में गाय की कुर्बानी नहीं होने दी।
- **बुधिया:** लेखक जब किशोर था तो बुधिया सात-आठ साल की रही होगी। अत्यंत चंचल और शरारती। लेखक कई सालों बाद बुधिया से मिलता है तो उसकी स्थिति देखकर दंग रह जाता है। बुधिया की शादी हो चुकी है। जगदीश उसका पति है। उसके तीन बच्चे हैं और वह गर्भवती है।

प्रमुख उद्धरण

- **कला का काम जीवन को छिपाना नहीं, उसे उभारना है। कला वह, जिसे पाकर जिंदगी निखर उठे, चमक उठे।**
- रजिया ने बताया कि किस तरह दुनिया बदल गई है। अब तो ऐसे भी गाँव हैं, जहाँ के हिन्दू मुसलमानों के हाथ से सौदे भी नहीं खरीदते। अब हिन्दू चूड़ीहारिनें हैं, हिन्दू दर्जी हैं।
- उन दिनों हिन्दू-मुसलमानों की तनातनी नहीं थी। दोनों दूध-चीनी की तरह घुले-मिले थे। हिन्दू की होली में मुसलमानों की दाढ़ी रँगी होती, मुसलमानों के ताजिए में हिन्दू के कंधे लगे होते। ताजिए के दिन थे। मेरे गाँव में भी ताजिया बना था, यद्यपि एक भी मुसलमान वहाँ नहीं।
- लेन-देन, जिसे नग्न शब्दों में सूदखोरी कहिए-चाहता है, आदमी आदमीपन को खो दे; वह जोंक, खटमल नहीं, चीलर बन जाए।
- यथार्थ अन्नदाताओं-के लिये पेंशन की हमारे अभागे देश में कहाँ व्यवस्था है? और व्यक्तिगत दया का दायरा तो हमेशा ही तंग रहा है।
- पर मर्दों की अपेक्षा औरतें अपने को परिस्थिति के साँचे में ज़्यादा और जल्द ढाल सकती हैं।
- भावना पर दलील का क्या असर हो सकता है भला!
- **हमने सुन रखा था, दुनिया में साढ़े तीन ही वीर हैं-पहला भैंसा, दूसरा सूअर, तीसरा गेहुँअन और आधा राजा रामचंद्र! भैंसे, सूअर और गेहुँअन सीधा वार करते, कभी पीठ नहीं दिखाते। रामचंद्र वीर थे, लेकिन बाली को मारने के लिये उन्होंने पेड़ की ओट ली थी!**
- तेली, जिसका मुँह देखने के बाद यात्रा सफल नहीं होती, ऐसी व्यवस्था दे रखी थी हमारे समाज ने।
- बेटे के क्रिया-कर्म में तूल नहीं किया, पतोहू से ही आग दिलाई उसकी। किंतु ज्यों ही श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई, पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया, यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना।

दृष्टि The Vision | d

घर बैठे IAS/PCS की संपूर्ण तैयारी करने के लिये आपका स्वागत है

Drishti Learning App

पर

GET IT ON Google Play

अपने एंड्रॉयड फोन पर आज ही इंस्टॉल करें

ऐप की विशेषताएँ

- टीम दृष्टि द्वारा दी जाने वाली सभी सुविधाएँ एक ही मंच पर।
- ऑनलाइन, पेनड्राइव मोड में कक्षाएँ उपलब्ध।
- प्रिलिम्स और मेन्स की टेस्ट सीरीज़ भी ऐप के माध्यम से उपलब्ध।
- सभी पुस्तकें, मैगजीन, डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम के नोट्स देखने व मंगवाने की सुविधा।

ऑनलाइन कोर्स की विशेषताएँ

- घर बैठे देश के सर्वोत्कृष्ट अध्यापकों से पढ़ने की सुविधा।
- अब दिल्ली या किसी बड़े शहर जाकर पढ़ने की मजबूरी नहीं।
- IAS और PCS के कोर्स उपलब्ध।
- ऑनलाइन कोर्स करने के बाद, क्लासरूम कोर्स में प्रवेश लेने पर शुल्क में विशेष छूट।
- हर क्लास अपनी सुविधा से 3 बार देखने की सुविधा।
- उत्तर लिखकर चेक कराने तथा संदेह-समाधान की व्यवस्था भी शीघ्र उपलब्ध।
- कई विषयों के कोर्स ऑनलाइन और पेनड्राइव मोड में भी उपलब्ध।

दृष्टि आई.ए.एस. (दिल्ली शाखा) का पता
641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
8448485519, 87501 87501, 011-47532596

दृष्टि आई.ए.एस. (प्रयागराज शाखा) का पता
ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
8448485518, 8750187501, 8929439702

दृष्टि आई.ए.एस. (राजस्थान शाखा) का पता
प्लॉट नंबर-45 व 45-A, हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड़, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर राजस्थान-302018
8448485518, 8750187501, 8929439702

यू.जी.सी./एन.टी.ए.

नेट/जे.आर.एफ.

प्रश्नपत्र-I

के लिये दृष्टि पब्लिकेशन्स की पेशकश

प्रमुख आकर्षण

- प्रथम प्रश्नपत्र का संपूर्ण पाठ्यक्रम कवर
- शिक्षण एवं शोध अभिवृत्ति पर सटीक सामग्री
- पूर्व में पूछे गए प्रश्नों का संकलन
- अभ्यास हेतु 25 से अधिक मॉडल प्रश्नपत्र
- पर्यावरण पर अद्यतन पाठ्य-सामग्री
- कम समय में गणित व आँकड़े संबंधी प्रश्नों को हल करने की विधि
- सूचना एवं प्रौद्योगिकी पर सारगर्भित पाठ्य-सामग्री
- उच्च शिक्षा प्रणाली की व्यवस्थित जानकारी

641, 1st Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-9

Ph.: 011-47532596, 87501 87501

Website: www.drishtiias.com

E-mail: booksteam@groupdrishti.com

ISBN 978-93-90955-36-7

9 789390 955367

मूल्य : ₹ 498